रेशम वाणी

अंक : 61 (जून 2025)

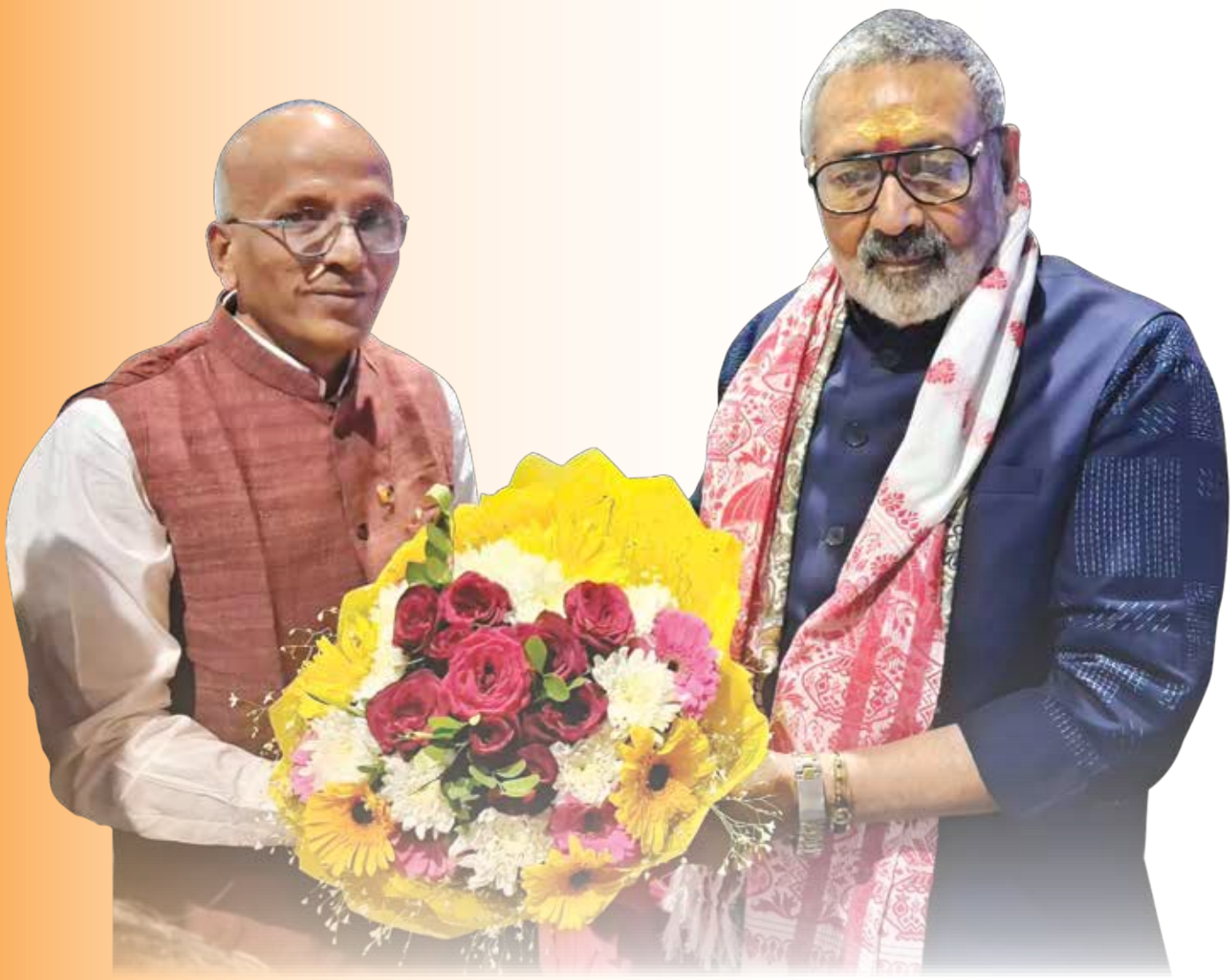

के.रे.बो.-केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार

पिस्का नगड़ी, राँची-835303, झारखण्ड

प्रधान सम्पादक की कलम से...

रेशम वाणी, अंक-61 (जून, 2025) आप सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हेतु मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मुझे खुशी है कि यह पत्रिका वर्ष में दो बार राजभाषा हिन्दी में नियमित प्रकाशित हो रही है इससे स्पष्ट है कि यह संस्थान राजभाषा हिन्दी के प्रति समर्पित है। राजभाषा कार्यान्वयन राष्ट्रीय महत्व का कार्य है। राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा से हमारी अस्मिता एवं पहचान जुड़ी हुई है। राजभाषा हिन्दी राष्ट्रीय गरिमा एवं राष्ट्रीय एकता की प्रतीक है। अत: राष्ट्रीय महत्व के इस कार्य को उतनी ही गम्भीरता से करने की आवश्यकता है जितना अन्य सरकारी कार्य।

भारत विश्व का एकमात्र देश है जहाँ रेशम की चारों प्रजातियाँ - शहतूत, तसर, मूगा एवं एरी रेशम का उत्पादन होता है। भारत में तसर रेशम उद्योग से 3.5 लाख लोग जुड़े हुए हैं जिससे उनका परिवार चल रहा है। यह व्यवसाय मुख्यत: निर्धन एवं जनजातीय आबादी द्वारा आर्थिक आय अर्जित करने हेतु अपनाया जाता है। यह उद्योग गरीब लोगों के आय सृजन के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । इस व्यवसाय के अंतर्गत कम लागत में अधिक लाभ कमाया जा सकता है। तसर रेशम अपनी समृद्ध बनावट और प्राकृतिक गहरे सुनहरे रंग के लिए मूल्यवान है और इसके अनेक पारि-प्रजातियाँ भारत के विभिन्न राज्यों में उत्पादित की जाती हैं। तसर उद्योग जल, जंगल, जमीन एवं पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हमारा संस्थान पूरे देश में तसर रेशम के लिए अनुसंधान एवं विकास हेतु एकमात्र संस्थान के रूप में कार्य करता है। हमारे वैज्ञानिक लगातार शोध कार्य में लगे रहते हैं और तसर रेशम उत्पादन में सुधार एवं संवर्धन के लिए नवीनतम् तकनीकों और पद्धतियों को पहचानकर तसर कृषकों को लाभान्वित करने हेतु उनकी भाषा में उन तक पहुँचाते रहते हैं। हमारा संस्थान लगातार प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी आयोजन करता रहता है जिसमें भारत के विभिन्न राज्यों से आये तसर कृषकों, खासकर महिलाओं को तसर रेशम कीटपालन, धागाकरण एवं वस्त्र निर्माण सम्बन्धी जानकारी प्रदान की जाती है जिससे वे लाभान्वित होकर आर्थिक आय अर्जित कर अपना जीवन-यापन करते हैं। तसर रेशम उद्योग से जुड़े लोगों की आजीविका में वृद्धि कर उनका सामाजिक-आर्थिक उत्थान करना ही इस संस्थान का परम् ध्येय है।

हमें आशा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि रेशम वाणी के लिए आप सभी का रचनात्मक सहयोग हमें लगातार मिलता रहेगा। आपकी प्रतिक्रियाएँ हमें आगामी सुधारों के लिए प्रेरित करेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

शुभकामनाओं सहित,

(डॉ.एन.बी.चौधरी)
निदेशक

रेशम वाणी

अंक : 61 (जून 2025)

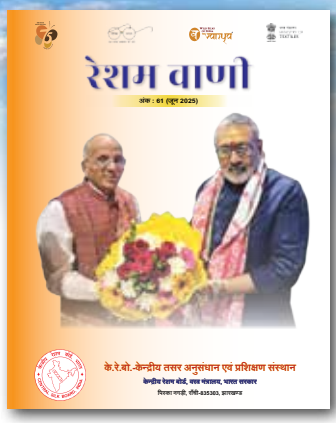

प्रधान सम्पादक

- डॉ. एन. बी. चौधरी
  निदेशक

सम्पादक

- डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय
  वैज्ञानिक–डी

सह–सम्पादक

- सुनील कुमार पी.
  सहायक निदेशक (रा.भा.)

शब्द संसाधन एवं सम्पादन

- सिकन्दर रविदास
  आशुलिपिक (ग्रेड–I)

सम्पादन सहयोग

- अंजली शर्मा
  कनिष्ठ अनुवादक (हिन्दी)

छायांकन

- बाबूसोना मंडल
  प्रक्षेत्र सहायक

विभागीय पत्रिका

- निःशुल्क वितरण हेतु

सम्पर्क

सम्पादक, रेशम वाणी
के.रे.बो.–केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, पिस्का नगड़ी,
राँची – 835303, झारखण्ड
ई–मेल : ctrtihindi@gmail.com
ctrtiran.csb@nic.in
वेबसाइट : www.crti.res.in

पत्रिका में अभिव्यक्त विचार और मत रचनाकारों के निजी हैं, उनसे संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विषय-सूची

भाषा एवं साहित्य		
हिन्दी और भावात्मक एकता	राजेन्द्र परदेसी	2
दिनकर की बाल कविताओं का माधुर्य	डॉ. जियाउर रहमान जाफरी	4
तकनीकी आलेख		
उष्णकटिबंधीय तसर में किसानों के नवाचार	डॉ.जगदज्योति बिंकदाकट्टी	6
तसर उत्पादन में शिकारी ततैयों की मौसमी सक्रियता और प्रबंधन	डॉ.हनमंत गडाद	7
तसर रेशमकीट के पेडंकल का रेशम वस्त्र निर्माण में महत्वपूर्ण उपयोगिता	आशु कुमार	8
रेशम के कीड़े का जीवन-चक्र : वोल्टिनिज्म के संदर्भ में तसर रेशम के कीड़े पर विशेष जोर	डॉ. निधि सुखीजा	10
रेशम उद्योग के विभिन्न स्तरों पर तसर रेशम का मूल्य श्रृंखला विश्लेषण	डॉ. अर्नब राय	12
तसर भोज्य पौधे के निष्पत्रक पीड़कों के भक्षण का प्रक्रिया और उससे बनने वाली पत्तियों में आकृति का विश्लेषण	अम्पी भगत	15
तसर कीटपालन में ब्रशिंग डेट का पोस्ट कोकून पैरामीटर पर प्रभाव	शाज़िया मुमताज	17
महिलाओं के लिए तसर रेशम उद्योग में रोजगार की संभावनाएँ	नीरज शर्मा	19
शीतोष्ण (ओक) तसर गतिविधियों में नर्सरी लगाने एवं वृक्षारोपण तकनीक	ए.एस. वर्मा	21
उत्तर प्रदेश राज्य के सोनभद्र एवं मिर्जापुर में तसर रेशम उद्योग की व्यापक संभावनाएं	रनबीर सिंह	23
विविधा		
मन साधे सब सधे	अंकुश्री	26
साइबर क्राइम से सुरक्षा व जागरूकता	रेखा जैन	27
समाज सुधारक थे डॉक्टर राम मनोहर लोहिया	अंकुर सिंह	28
पर्यटन		
राजगीर, नालन्दा और पावापुरी की यात्रा	एन.के.सिन्हा	29
ऋषिकेश एक पवित्र तीर्थ स्थल	हरीशचंद्र पांडे	36
अजमेर शरीफ में सुकून है	पूनम पांडे	37
कहानी		
सरपंच की बेटी	डॉ.प्रदीप उपाध्याय	37
एडजस्ट	रेखा भारती मिश्रा	39
अनोखे सपने	मुग्धा पाण्डेय	40
आत्म ग्लानि	डॉ. प्रियंका पाठक	41
भुवरी	रेखा शाह आरबी	44
व्यंग्य		
कविता की उपलब्धि का कल्पनावादी सुख	सुरेन्द्र अग्निहोत्री	45
कविता		
“खेती की जमीन को बचाइए”	डॉ. विनोद सिंह	46
नदी मेरी माँ है	नीलोत्पल रमेश	46
राष्ट्रभाषा	बेद नारायण सिंह	47
बेहाल परिंदे	डॉ.राजीव गुप्ता	47
तुमसे मिलकर	साक्षी मिश्रा	48
जीवन रक्षक ओजोन परत	हरेन्द्र श्रीवास्तव	48
संस्कार	गौरी शंकर वैश्य विनम्र	49
मुसाफ़िर	नेतलाल यादव	49
लघु कथा		
बुद्धिमान राजा	डॉ. दिनेश दत्त शर्मा	50
इन्हें कुछ मत कहो, आने वाले वक्त के लोग हैं	कामेशवर पाण्डेय	51
पैसे के अलग-अलग नाम	डॉ.चीनीपल्ली रवि शंकर	52
सपनों की दौड़	पूजा भारद्वाज	52
सुख की अनुभूति	प्रगति त्रिपाठी	53
सिया और गिलहरी	संजय सिंह चौहान	53
चम्पई रानी..	सपना चन्द्रा	53
बदलते परिवेश में अनिवार्य है भाई-बहन के रिश्तों को व्यापक स्वरूप प्रदान करना	सीताराम गुप्ता	54
प्रेम के कितने रूप	वीणा कुमारी	55
ऑनलाइन-बिनलाइन	अशोक वाधवाणी	55
क्या सचमुच रावण का अंत हो गया	रंजना मिश्रा	56

हिन्दी और भावात्मक एकता

राजेन्द्र परदेसी*

राष्ट्रीय भावना के विकास में एक सामान्य भाषा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है। भाषाओं की अनेकता राष्ट्रीयता के विकास में अनिवार्यतः बाधक हो, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता लेकिन एक ऐसी सामान्य भाषा की आवश्यकता निर्विवाद है जिसके माध्यम से राष्ट्रीय जीवन के विविध क्रिया-कलाप संचालित होते हैं। जिस भारतीय राष्ट्रीयता को सुदृढ़ करने का हम प्रयास कर रहे हैं उसकी शैशवावस्था में ही इसके उन्नायकों ने इस पर जोर दिया था कि राष्ट्रभाषा के अभाव में भारतीय राष्ट्रीयता सुदृढ़ हो सकती है। यही कारण था कि बंगाल के केशवचन्द्र सेन और बकिंम चन्द्र चटर्जी तथा गुजरात के महर्षि दयानन्द सरस्वती और गाँधी जी एवं महाराष्ट्र के लोकमान्य तिलक तथा इसी प्रकार अहिन्दी प्रान्तों के अनेक मान्य नेताओं ने हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा के लिए सर्वथा उपयुक्त बताया था। भारत के संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पद प्रदान किया गया है किन्तु अभी भी देश में ऐसे लोग विद्यमान हैं जो कि हिन्दी के द्वारा देश के भावनात्मक एकीकरण का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित नहीं किया जा सकता, अतः सच्चे अर्थों में हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित नहीं हो पाएगी चाहे राजकीय कार्य-व्यवहार की भाषा वह भले ही बन जाए। इसके विपरीत हिन्दी के समर्थकों का कथन है कि हिन्दी को राजभाषा के पद पर समासीन कर देने मात्र से इसका महत्व नहीं सिद्ध होता बल्कि हिन्दी का वास्तविक महत्व तो तभी प्रकट होगा जब वह भारतीय राष्ट्र के विभिन्न तत्वों का भावनात्मक एकीकरण करने में समर्थ होगी। इन दोनों मतों में कौन-सा मत अधिक समीचीन है, इसका निर्णय कर सकना बहुत सरल नहीं है किन्तु हिन्दी-भाषी बहुत नम्रतापूर्वक इस बात का दावा करते हैं कि उनकी मातृ-भाषा राष्ट्र के प्रति अपने महान दायित्व का वहन करने में समर्थ हैं और वे यह भी कहते हैं कि किसी अन्य भारतीय भाषा के माध्यम से देश का भावनात्मक एकीकरण तो सम्भव हो सकता है किन्तु अपनी सारी क्षमताओं के बावजूद अंग्रेजी इस कार्य को अधिक व्यापक रूप में नहीं कर सकती। हम हिन्दी-भाषी अंग्रेजी के महत्व को स्वीकार करते हैं। हम यह जानते हैं कि भारत के सांस्कृतिक और राजनीतिक पुनर्जागरण की भाषा राजा राममोहन राय से लेकर डॉ.राधाकृष्णन तक मुख्य रूप से अंग्रेजी ही रही है और स्वतंत्रता प्राप्ति के वर्षों बाद आज भी देश के एक भाग से लेकर दूसरे भाग तक शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों के लिये अंग्रेजी ही विचारों के आदान-प्रदान की एकमात्र भाषा है किन्तु इस एक बात से इस तथ्य पर भी परदा नहीं पड़ सकता कि अंग्रेजी को ठीक तरह से जानने और बोलने वालों की संख्या देश में नगण्य है। अतः इसके द्वारा देश के भावनात्मक एकीकरण की बात अधिक तर्कसम्मत नहीं जान पड़ती। इसके अतिरिक्त यह भी नहीं भुलाया जा सकता कि अंग्रेजी के कारण शिक्षा-प्राप्त व्यक्तियों में और जन-समुदाय के बीच खाई उत्पन्न हो गई है और जब तक यह खाई नहीं पाटी जाती तब तक एकता का हमारा स्वप्न चरितार्थ नहीं हो सकता। अंग्रेजी के अध्ययन द्वारा सम्पूर्ण देश ने और हिन्दी मनीषियों ने बहुत लाभ उठाया है और भविष्य में भी हम इससे लाभ प्राप्त करने की आशा रखते हैं किन्तु अंग्रेजी के द्वारा भारतीय प्रजा को या भारतीय राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने की आशा करना विडम्बना मात्र है। इसी प्रकार आजकल के जीवन में संस्कृत के द्वारा जो एकता के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं वे युग धर्म को न समझने की गलती कर रहे हैं। इसमें संदेह नहीं कि प्राचीन काल से संस्कृत भाषा हमारी सांस्कृतिक एकता को वहन कर रही है और भारत के प्राचीन आदर्श संस्कृत वाङ्गमय में सुरक्षित हैं। हमारे सांस्कृतिक जीवन में संस्कृत का महत्व स्पष्ट है और इसके अधिकाधिक प्रचार की भी आवश्यकता है किन्तु इस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य को भुलाया नहीं जा सकता कि संस्कृत कभी भी जनभाषा नहीं रही है। यह देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक शिष्ट वर्ग की भाषा थी और आज भी संस्कृत का व्यवहार करने वाले लोग बहुत कम हैं। प्राचीन काल में भारत की सांस्कृतिक चेतना को जीवित रखने का जो कार्य संस्कृत ने किया था उसे आज की परिस्थितियों में हिन्दी कर सकती है। हिन्दी भाषियों का यह दावा कि उनकी भाषा भारतीय राष्ट्र की एकता को सुदृढ़ बना सकती है, कोरा दंभ मात्र नहीं है। सबसे पहली बात यह है कि हिन्दी देश के बहुसंख्यक जन की मातृ भाषा है। करोड़ों नर-नारी इसे बोलते तो हैं ही, अहिन्दी प्रदेशों के भी बहुत से लोग इसे कुछ-न-कुछ समझ लेते हैं। अविभक्त भारत में ढाका से लेकर पेशावर तक इसके समझने वाले मिल जाते थे और दक्षिण में भी हिन्दी जानने वालों की संख्या उतनी नगण्य नहीं है जितनी कि हिन्दी विरोधी हमें बताते हैं। दक्षिण भारत में भी हिन्दी का विरोध उतना अधिक नहीं है जितना प्रायः समाचार-पत्रों में बताया जाता है। बहुधा यह कहा जाता है कि हिन्दी के समर्थक भाषा के सम्बन्ध में साम्राज्यवादी नीति अपना रहे हैं किन्तु हिन्दी-भाषी इस बात को अत्यन्त नम्रतापूर्वक कहते हैं कि देश की अन्य प्रादेशिक भाषाओं के बोलने और समझने वालों की संख्या अन्य भाषाओं के बोलने और समझने वालों की संख्या से अधिक होने के कारण भावनात्मक एकता की दृष्टि से यह अधिक सामर्थ्यशालिनी है, इसमें किसको संदेह हो सकता है। इसके अतिरिक्त शब्द-सामर्थ्य की दृष्टि से भी हिन्दी की अपनी एक ऐसी विशेषता है जो अन्य भारतीय भाषाओं को सुलभ नहीं है। एक ओर तो संस्कृत का अक्षय शब्द भण्डार और दूसरी ओर उर्दू की मुहावरेदार और चुस्त भाषा इन दोनों के सम्बन्ध से हिन्दी की अभिव्यक्ति-क्षमता बेजोड़ है। संस्कृत-बहुलता के कारण हिन्दी की शब्दावली एक ओर उसे मराठी, गुजराती, बंगाली तथा दक्षिण की कुछ भाषाओं के निकट ले जाती है और दूसरी ओर उर्दू के कारण पंजाब तथा सिन्ध के लोगों के लिए बोधगम्य बन जाती है। जिस प्रकार हिन्दी ने अरबी-फारसी के बहुत शब्द ग्रहण करके पचा लिए हैं उसी प्रकार आवश्यकता पड़ने पर अन्य प्रादेशिक भाषाओं से प्रचलित शब्द हिन्दी में ग्रहण किये जा सकते हैं और इस प्रकार उसकी शब्द-सामर्थ्य बढ़ाई जा सकती है। अखिल भारतीय कार्य-व्यवहार की भाषा के रूप में हिन्दी की उपयुक्तता असन्दिग्ध है और आधुनिक जीवन में तथा प्रजातन्त्रात्मक शासन-व्यवस्था के अन्तर्गत हिन्दी ही ऐसी भाषा है जो भारत के विभिन्न धामों के निवासियों को एक-दूसरे के निकट ला सकती है। हिन्दी साहित्य का इतिहास बताता है कि हिन्दी ने देश में एक विशाल भू-भाग की जनता को मध्यकाल में भक्ति-आन्दोलन द्वारा एक सामान्य धार्मिक और नैतिक चेतना द्वारा अनुप्राणित किया था। भक्ति-आन्दोलन का प्रारम्भ सुदूर दक्षिण

में आडवार और नायनमार सन्तों द्वारा किया गया था। तमिल भाषा में रचित भक्त कवियों के असंख्य पदों में भक्ति के जो उद्गार व्यक्त हुये हैं उनमें और हिन्दी के भक्त-कवियों के उद्गारों में परस्पर बहुत सादृश हैं। भक्ति की जो धारा ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में तमिल-कवियों ने प्रवाहित की वह कालान्तर में सम्पूर्ण उत्तरी भारत में फैल गई थी और यदि हिन्दी तथा तमिल के भक्त-कवियों की रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाये तो हम उनकी भावधारा लगभग एक-सी ही पायेंगे। हिन्दी की प्रसिद्ध कवियित्री मीरा तथा गुजराती के प्रसिद्ध कवि नरसी मेहता की अनुभूति में काफी साम्य है। पंजाब के गुरु नानक ने अपने पद हिन्दी में ही लिखे और कबीर, दादू, मीरा आदि भक्त-कवियों की रचनाएँ केवल हिन्दी प्रदेश में ही नहीं वरन् महाराष्ट्र और गुजरात आदि में भी जन-साधारण के लिये अपरिचित नहीं जान पड़ेगी। भक्ति-आन्दोलन के इस प्रमुख तत्व ने तथा जाति-पाति आदि के भेद-भाव को दूर कर मनुष्य मात्र की एकता प्रतिपादित करने के कारण भक्ति-आन्दोलन ने न केवल हिन्दी समाज को बल्कि काफी अंशों में मुस्लिम समाज को भी प्रभावित किया था। यही कारण है कि अनेक मुस्लिम कवियों ने भी हिन्दी में रचनाएँ की हैं। मध्यकाल में विकसित होने वाली मिली-जुली संस्कृति का स्वरूप जितनी प्रचुरता और मार्मिकता के साथ हिन्दी में व्यक्त हुआ है उतना संभवतः किसी अन्य भारतीय भाषा हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियों के समन्वय की कहानी कहती है। हिन्दी के विकास में मुस्लिम कवियों और मुस्लिम शासकों का कितना अधिक योगदान रहा है यह इतिहास और साहित्य के विद्यार्थियों को भली-भाँति मालूम होगा। हिन्दी खड़ी बोली में सबसे पहली साहित्य-रचना करने वाले अमीर खुसरो थे। हिन्दी में सबसे पहले महाकाव्य की रचना करने वाले मलिक मुहम्मद जायसी मुसलमान थे और खड़ी बोली में गद्य-रचना करने वाले इंशा अल्लाह खां भी मुसलमान थे। हिन्दी में नीति के सबसे सरस और प्रसिद्ध दोहों की रचना करने वाले अब्दुर्रहीम खाना भी मुसलमान थे। मुंशी प्रेमचन्द ने कहा है कि लगभग पाँच सौ मुस्लिम कवियों ने हिन्दी को अपनी कविता से धनी बनाया है जिसमें से कुछ तो बहुत उच्च कोटि के कवि हैं। अकबर से लेकर शाहजहाँ तक मुगल-सम्राटों की राजसभा में हिन्दी की बहुत अधिक उन्नति होती रही है। धर्म के मामले में संकीर्णता की नीति अपनाने वाले औरंगजेब को भी हिन्दी से कोई द्वेष नहीं था। वह स्वयं हिन्दी में दोहे लिखा करता था और आमों के नाम उसने 'रसना-विलास' एवं 'सुधारस' रखे थे। खड़ी बोली को साहित्यिक स्वरूप प्रदान करने का श्रेय मुसलमानों को ही है। मुंशी प्रेमचन्द के शब्दों में, "मुसलमानों ने ही दिल्ली प्रान्त का इस बोली को, जिसको उस वक्त तक भाषा का पद न मिला था, व्यवहार में लाकर उसे दरबार की भाषा बना दिया और दिल्ली के उमरा और सामन्त जिन प्रान्तों में गए, हिन्दी भाषा को साथ लेते गये। उन्हीं के साथ वह दक्खिन में पहुँची और उसका बचपन दक्खिन ही में गुजरा। दिल्ली में बहुत दिनों तक अराजकता का जोर रहा और भाषा को विकास का अवसर न मिला और दक्खिन में वह पलती रही। गोलकुण्डा, बीजापुर, गुलबर्गा आदि के दरबारों में इसी भाषा में शेरो-शायरी होती रही। भावनात्मक एकता स्थापित करने की जो क्षमता हिन्दी में है उसका अन्दाज इस एक बात से लगाया जा सकता है कि हिन्दुस्तानी संगीत में गानों के बोल प्रायः हिन्दी में ही होते हैं, चाहे गायक पंजाब के उस्ताद बड़े गुलाम अली हों या गुजरात के ओंकारनाथ ठाकुर हों अथवा महाराष्ट्र के पं.भीमसेन जोशी या तेलुगू-भाषी कुमार गंधर्व या बंगाल की प्रसिद्ध गायिका संध्या मुखर्जी। भारतीय संगीत पर महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना करने वाले श्री भातखण्डे महोदय महाराष्ट्रीय थे किन्तु उन्होंने अपने अधिकांश ग्रन्थों की रचना हिन्दी में ही की है। अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी चित्रों की लोकप्रियता और हिन्दी गीतों के प्रति लोगों का अनुराग आकस्मिक नहीं है। संगीत और सिनेमा के माध्यम से हिन्दी को सार्वदेशिक भाषा बनाने में पूरी-पूरी सहायता ली जा सकती है। जो लोग हिन्दी-साम्राज्य की बातें करते हैं उन्हें यह नहीं मालूम कि हिन्दी के वाङ्मय को ऐसे लब्ध प्रतिष्ठित कलाकारों ने सजाया है जो जन्मतः हिन्दी-भाषी नहीं थे। हिन्दी के यशस्वी कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु वंग भाषी थे। इसी प्रकार आंचलिक उपन्यासों में अद्वितीय सफलता प्राप्त करने वाले हिन्दी के प्रगतिशील कवि नागार्जुन मैथिली-भाषी रहे। उपन्यासकार, कहानीकार, समालोचक और अनेक शोध-पूर्ण ग्रन्थों के रचयिता रांगेय राघव तमिल भाषी थे। गुजरात से हिन्दी को महर्षि दयानन्द तथा काका कालेलकर जैसे साहित्य-सेवी प्राप्त हुए। हिन्दी पत्रकारिता की नींव मजबूत करने वालों में पराड़कर जी का नाम नहीं भुलाया जा सकता और वह मराठी-भाषी थे। इसी प्रकार श्री प्रभाकर माचवे भी मराठी भाषी थे। दक्षिण से भी हिन्दी को अनेक साहित्य सेवी और समर्थक प्राप्त हुए हैं और सुदूर दक्षिण में त्रिवेन्द्रम से हिन्दी में साप्ताहिक पत्र प्रकाशित होते हैं। भाषा और साहित्य के सम्बन्ध में हिन्दी ने प्रारम्भ से ही दूसरे साहित्यों से ग्रहण करने की नीति अपनाई है। हिन्दी में अनूदित साहित्य अत्यन्त समृद्ध है और यह इस बात का सबूत है कि हिन्दी सेवियों ने संकी-शांता की नीति नहीं अपनाई है। बंगला साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों को लगभग सभी कृतियों के हिन्दी में प्रमाणिक अनुवाद उपलब्ध हैं और यह एक उल्लेखनीय बात है कि बंकिम चन्द्र चटर्जी से लेकर तारा शंकर बंधोपाध्याय तक के बंगाल के प्रसिद्ध उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद हो चुके हैं। यहाँ तक कि बंगला को कुछ समालोचनात्मक पुस्तकें भी हिन्दी में अनूदित हैं। इसी प्रकार मराठी भाषा के हरि नारायण आप्टे के ऐतिहासिक उपन्यास तथा गुजराती से घूमकेतु और श्री के. एम. मुंशी के कई नाटक और औपन्यासिक कृतियाँ लगभग सभी हिन्दी में भी पढ़ी जा सकती हैं। दक्षिण के प्राचीन और अर्वाचीन साहित्य की सर्वोत्तम कृतियों को हिन्दी में रूपान्तरित करने का प्रयास बड़ी तेजी से हो रहा है और साहित्य अकादमी इस दिशा में प्रशंसनीय प्रयत्न कर रही है। सभी प्रादेशिक भाषाओं की श्रेष्ठ कृतियाँ हिन्दी में आ रही हैं और इनके साहित्य के सम्बन्ध में परिचयात्मक पुस्तकें भी प्रकाशित हो रही हैं। भारतीय संस्कृति और इसके विविध पक्षों पर हिन्दी में शोधपूर्ण और परिचयात्मक सभी प्रकार के ग्रन्थ मिल सकते हैं और दिनोदिन इस प्रकार के ग्रन्थ अधिकाधिक संख्या में निकलते जा रहे हैं। हिन्दी के माध्यम से कोई भी अहिन्दी भाषी अपने देश के इतिहास और जीवन के बारे में जान सकता है। देश की भावनात्मक एकता को पुष्ट करने वाली एक सामान्य भाषा के रूप में हिन्दी अपने दायित्वों से भली-भाँति परिचित है और इसके सच्चे सेवा राजभाषा के अधिकारों की अपेक्षा इन दायित्वों का ही अधिक ध्यान रखते हैं। हिन्दी के मासिक और साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाओं को देखने से इस बात पर सन्तोष होता है कि इनके द्वारा अन्य भारतीय भाषाओं के साम्प्रतिक साहित्य के रसास्वादन का भी अवसर प्राप्त हो सकता। हिन्दी भारत की विविधता का संरक्षण और संवर्धन करते हुए इसकी मूलभूत एकता को दृढ़ करेगी, ऐसा प्रत्येक भारतीय को विश्वास हो सकता है।

*राजेन्द्र परदेसी, 136-मयूर रेजीडेंसी, फरीदी नगर लखनऊ।

दिनकर की बाल कविताओं का माधुर्य

डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफरी*

हिन्दी कविता में दिनकर का समय छायावाद के बाद है। दिनकर पूरे हिंदी साहित्य में जयशंकर प्रसाद के बाद दूसरे साहित्यकार हैं, जिन्होंने गद्य और पद्य दोनों विधाओं में अपनी मजबूत दखल दी। दिनकर अपनी शैली और भाषाई प्रयोग के कारण भी जाने जाते हैं। उनका पूरा जीवन विरोध का है। सिमरिया में 1907 में पैदा हुए दिनकर का जीवन अभाव और कठिनाइयों में बीता, बाद में उच्च सरकारी पद पर आसीन होते हुए भी वह गरीबी के दिन नहीं भूले और जरूरत पड़ने पर पंडित जवाहर लाल नेहरू की भी आलोचना की। यह वही नेहरू थे जिन्होंने उन्हें राज्यसभा में पहुंचाया था। दिनकर ने नेहरू को सम्बोधित करते हुए लिखा -

देखने में देवता सदृश्य लगता है
बंद कमरे में गलत हुक्म लिखता है

भारतीय संस्कृति और परम्परा का उनके पास गहरा ज्ञान था दिनकर का कुरुक्षेत्र महाभारत के बाद सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली कृति है। उर्वशी उनका वह काव्य है जिसकी ख्याति आज भी उसी तरह मौजूद है। उनकी कविता को अगर गौर से देखें तो दो चीजें साफ दिखाई देंगी - एक राष्ट्रीयता का आवाहन और दूसरा परम्परा के साथ नवीनता की स्वीकारोक्ति। दिनकर अतीत और परम्परा को जानते हुए भी उसका फिर से मूल्यांकन करते हैं उन्होंने कहा भी है -

जब मैं अतीत में जाता हूँ
मुर्दों को नहीं जिलाता हूँ

परम्परा के बारे में दिनकर ने लिखा है -

परम्परा जब लुप्त होती है
सभ्यता अकेलेपन के दर्द से मरती है

दिनकर अपने लहजे से वीर रस के कवि कहलाते हैं। यही कारण है कि उनकी कविताओं की शैली में ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रांति का बिगुल है पर यह देखकर आश्चर्य होता है कि दिनकर एक ओर जहाँ वीर रस की रचनाओं के कवि हैं, वहीं उन्होंने ऐसे बाल साहित्य की भी रचना की है जहाँ उनका लहजा ही नहीं बदला शैली भी बदल गई है। यहाँ तक कि उनके शब्द भी बदल गए हैं। उनकी ऐसी कविताओं में न दिल्ली कविता की हुंकार है और न कुरुक्षेत्र और परशुराम की प्रतीक्षा का गहरापन। गरजने और बरसने वाली शैली के दिनकर यहाँ आकर बिल्कुल सरल और सहज हो जाते हैं। पचहत्तर से अधिक पुस्तकों के लेखक रामधारी सिंह दिनकर की बाल कविताएँ भी हिन्दी जगत में उतनी ही प्रसिद्ध है। यह अलग बात है कि दिनकर का अध्ययन करते हुए उनके बाल साहित्य पर हमारा ध्यान कम ही जाता है। असल में बाल साहित्य बच्चों की उम्र, समझ और कल्पनाशीलता के आधार पर लिखी जाती है। बाल सुलभ विशेषताएं बच्चों की अठखेलियाँ, उसका भाव, विभाव नटखटपन, विभिन्न मुद्राएं, बोलियाँ, जिज्ञासा प्रश्न, प्रति प्रश्न आदि बाल साहित्य के उपजीव्य हैं। बच्चों की भावना, संवेदना मिजाज और मनोविज्ञान को समझने वाला ही अच्छा बाल साहित्यकार बन सकता है। दिनकर को इस चीज का भी पर्याप्त ज्ञान था। दिनकर की एक बाल कविता है - का कुर्ता, जिसमें चाँद एक दिन माँ से जिद करता है कि वह उसका एक कुर्ता सिलवा दे। चाँद का अपना तर्क है -

सनसन चलती हवा रात भर
जाड़े से मरता हूँ
ठिठुर -ठिठुर कर किसी तरह
यात्रा पूरी करता हूँ

पर माँ चाँद की फितरत से वाकिफ है। इसलिए वह कहती है - तुम्हारा कुर्ता तब बने जब तुम एक नाप में रहो -

कभी एक अंगुल भर चौड़ा
कभी एक फुट मोटा
बड़ा किसी दिन हो जाता है
और किसी दिन छोटा

माँ तो माँ है समस्या का फिर समाधान भी वही निकालती है -

अब तू ही बता नाप तेरा किस रोज लिवाएं
सी दें एक झिंगोला जो हर रोज बदन में आएं

बाल काव्य विषयक दिनकर की दो पुस्तकें हैं - एक मिर्च का मजा और दूसरा सूरज का ब्याह। मिर्च का मजा में जहाँ उनकी सिर्फ सात बाल कविताएं हैं, वहीं सूरज का ब्याह में भी महज नौ बाल कविताएँ मौजूद हैं। मिर्च का मजा की बाल कविताओं में थोड़ा हास्य और थोड़ा व्यंग्य है और कहीं-न-कहीं किसी बेवकूफी का वर्णन भी है। उदाहरण के लिए मिर्च का मज़ा कविता में एक काबुली वाले का वर्णन है, जिसने मिर्च पहली बार देखा है उसे लगता है इतना सुंदर तो कोई फल ही होगा। एक चवन्नी देकर उसे वह खरीद लेता है और खाने लगता है, फिर आगे क्या होता है दिनकर की इस कविता में ही देखें -

मगर मिर्च ने तुरंत जीभ पर अपना जोर दिखाया
मुँह सारा जल उठा और आँखों में पानी आया
आँख पोंछते दाँत पीसते रोते और रिसियाते
वह खाता ही रहा मिर्च की छीमी को सिसियाते
इतने में आ गया उधर से कोई एक सिपाही
बोला बेवकूफ क्या खाकर यूँ कर रहा तबाही
कहा काबुली ने मैं हूँ आदमी ऐसा न वैसा
जा तू अपनी राह सिपाही मैं खाता हूँ पैसा

कविता के अंत में काबुली वाले की मूर्खता का भी पता चलता है। उसके पच्चीस पैसे लग गए हैं, इसलिए पैसे वसूलने के क्रम में मुसीबत मोल ले रहा है। जाहिर है इस कविता में रोचकता तो है ही रहस्य और रोमांच भी है। दिनकर की एक ऐसी ही रोचक बाल कविता है - चूहे की दिल्ली यात्रा जिसमें चूहा आजादी का जश्न मनाने सज-धज कर दिल्ली जाता है। वो जवाहर लाल से मिलने तक का सपना पाले हुए है। वह दिल्ली के लिए निकला है लेकिन रास्ते में बिल्ली को देखते ही उसके दिल्ली के मंसूबे में पानी फिर जाता है। इस कविता के बहाने दिनकर द्वारा गाँधीवाद और देश की आजादी

के जश्न का भी जायजा लिया गया है। आप भी देखें कविता -

दिल्ली में देखूंगा आजादी का नया जमाना
लाल किले पर खूब तिरंगे झंडे का लहराना
अब ना रहे अंग्रेज देश पर अपना ही काबू है
पहले जहां लाट साहब थे वहाँ आज बाबू है
घूमूंगा दिन-रात करूंगा बातें नहीं किसी से
हाँ फुर्सत जो मिली मिलूंगा जरा जवाहर जी से

पर यह सारे ख्वाब बिल्ली के देखते ही टूट जाते हैं और कविता का सुंदर समापन होता है -

इतने में लो परी दिखाई कहीं दूर पर बिल्ली
चूहे राम भागे पीछे को दूर रह गई दिल्ली

दिनकर की एक बाल कविता 'किसको नमन करूं मैं' का भी काफी जिक्र होता है। दिनकर की एक ऐसी और कविता है 'सूरज का ब्याह' दिनकर की बाल कविताओं की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें कथात्मकता होती है। सूरज का ब्याह कविता में सूरज की शादी की खबर से मोर, कोयल, लता, विटप, जलचर सभी खुश हैं लेकिन एक वृद्ध मछली जलचरों को इस विवाह का भविष्य बताती है। वह कहती है -एक अकेला सूरज इतनी गर्मी भर देता है कि हम सभी जलचर झटपट करते हैं। सूरज का ब्याह होगा तो बच्चे भी होंगे और यह बच्चे मिलकर हम सब का जीना हराम कर देंगे। इससे बेहतर है सूरज कुमारा ही रहे आप भी इस कविता की कुछ पंक्तियां का रसास्वादन करें -

अगर सूरज ने ब्याह किया दस-पाँच पुत्र जन्माएगा
सोचो तब उतने सूरजों का ताप कौन सह पाएगा
अच्छा है सूरज कुँवारा है वंश विहीन अकेला है
इस प्रचंड जगत की खातिर बड़ा झमेला है

दिनकर की एक और रोचक बाल कविता 'पढ़क्कू की सूझ है। इसमें एक पढ़ा-लिखा आदमी तर्क शास्त्री से बहस करता है। प्रश्न यह है कि बैल कोल्हू में कैसे घुमता है। मालिक कैसे जान जाता है कि कोल्हू में बैल घूम रहा है। पढ़ा-लिखा आदमी बताता है कि उसने बैल के गली में एक घंटी बाँध दी है जिससे पता चल जाता है कि वह चल रहा है पर शास्त्री का तर्क है कि अगर बैल सिर्फ गर्दन हिलाता ही रह जाए तब भी घंटी बजती रहेगी। पढ़ा-लिखा आदमी का जवाब दिनकर की अंतिम पंक्तियों में देखें -

यहाँ सभी कुछ ठीक-ठाक है यह केवल माया है
बैल हमारा नहीं अभी तक मंतिक पढ़ पाया है

दिनकर की बाल रचनाओं में प्रकृति का भी बड़ा मनोमुग्धकारी वर्णन है -

टेसू राजा अड़े-खड़े
माँग रहे हैं दही-बड़े
बड़े कहाँ से लाऊं मैं
पहले खेत खुदाऊँ मैं
उसमें उड़द लगाऊं मैं
फसल काट घर लाऊं मैं

उनकी प्रकृति परक बाल कविताओं में बादल भी है, पानी भी है, घटा, हवा, खेत, बाग और दरिया भी है। दिनकर की एक कविता है - वर्षा जिसे पढ़ते हुए सारी प्रकृति जीवंत हो जाती है आप भी स्वाद लें -

अम्मा जरा देखो तो ऊपर
चले आ रहे हैं बादल
गरज रहे हैं बरस रहे हैं
दीख रहा है जल-ही-जल
हवा चल रही क्या पुरवाई
झूम रही है डाली-डाली
ऊपर काली घटा घिरी है
नीचे फैली हरियाली
भीग रहे हैं खेत बाग बन
भीग रहे हैं घर-आंगन
बाहर निकलूं मैं भी भीगूं

इन सब के अलावा भी जब दिनकर प्रगतिवादी चेतना की कविता रचते हैं तब भी उनका वात्सल्य रूप और लावण्य हमारे सामने आता है। उनकी कविता दूध-दूध में भूखे माँ के स्तन से बच्चों को दूध न मिलाना उनकी नाराजगी की वजह बनती है और वह इसके लिए भगवान तक को कटघरे में लाकर खड़े कर देते हैं। समर शेष है तथा शक्ति और क्षमा जैसी कविता आज भी बच्चों के पाठ्यक्रम का हिस्सा है। कहना ना होगा कि अन्य साहित्य की तरह दिनकर बाल साहित्य भी प्रभावी ढंग से लिखते हैं। उनकी बाल कविताओं में बच्चों को सीख तो मिलती ही है, पर्याप्त मनोरंजन भी प्राप्त होता है। दिनकर की मेमना और भेड़िया कविता में सुरक्षित स्थान पर खड़े मेमने की चुहलबाज़ी बच्चों को भरपूर ज्ञान और मनोरंजन देता है। उनकी एक रोचक कविता ज्योतिषी में एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन है जो आँख उठाकर तारा देखने के क्रम में नीचे गिर जाता है। इस कविता में दिनकर का संदेश है -

चलो मत आँखें मीचे ही
देख लो जब तब नीचे भी

उनकी चील का बच्चा कविता में चील का बच्चा बीमार है। दवाइयों से फायदा नहीं है, पर मैना किसी देवी-देवता के पास जाने को तैयार नहीं है क्योंकि इस चील के बच्चे ने कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ चोंच न मारी हो-

माँ बोली उधमी कहाँ पर जाऊं मैं
कौन देवता है जिसको गुहराऊँ मैं
तू ने किसके पिंडे का सम्मान रखा
किसकी थाली के प्रसाद का मान रखा
किसी देव के पास नहीं मैं जाऊंगी
जाऊं तो केवल उलाहना पाऊंगी

हम कह सकते हैं कि दिनकर की बाल कविताएं मात्रा में भले कम हों, रोचकता में कोई कमी नहीं है। अगर हम हिन्दी साहित्य के इतिहास का अध्ययन करें तो पाएंगे कि तमाम बड़े हिन्दी के कवियों ने बाल कविताएँ भी लिखी हैं यही कारण है कि आज बाल साहित्य इतना समृद्ध रूप में हमारे सामने है।

*ग्राम/ पोस्ट -माफी, वाया -अस्थावां, जिला नालंदा, बिहार।

तकनीकी आलेख

उष्णकटिबंधीय तसर में किसानों के नवाचार

जगदज्योति बिकंदाकट्टी*, धीरज जायसवाल, एच.एस. गडाद, विशाल मित्तल एवं एन.बी.चौधरी

सेरीकल्चर या रेशम पालन रेशमी कीड़ों की खेती कर रेशम उत्पादन की एक पारम्परिक और वैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसमें तसर सेरीकल्चर एक विशिष्ट शाखा है जिसमें एन्थीरिया प्रजाति के तसर कीड़ों का पालन किया जाता है जो मुख्यतः जंगली पौधों की पत्तियों पर निर्भर रहते हैं। तसर रेशम अपनी प्राकृतिक चमक, मजबूती और बनावट के कारण खास पहचान रखता है और यह भारत के कई ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था में अहम् योगदान देता है। हालाँकि तसर पालन को कीट संक्रमण, पर्यावरणीय बदलाव और विभिन्न रोगों जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिससे उत्पादन पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। इस संदर्भ में स्थानीय तकनीकी ज्ञान (Indigenous Technical Knowledge - ITK) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यह ज्ञान पारम्परिक अनुभवों पर आधारित होते हुए किसानों को सतत्, पर्यावरण-अनुकूल और लागत प्रभावी समाधान प्रदान करता है जिससे तसर सेरीकल्चर को अधिक सुरक्षित और लाभकारी बनाया जा सकता है।

उष्णकटिबंधीय तसर रेशम उत्पादन में किसानों द्वारा किए गए नवाचारों ने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति लाई है। किसानों ने परम्परागत तरीकों से हटकर आधुनिक तकनीकों और स्थायी पद्धतियों को अपनाया है- जैसे कि रोग-प्रतिरोधक तसर कीट प्रजातियों का चयन, मल्टी-कटर मशीनों का उपयोग और प्राकृतिक संसाधनों की सहायता से कीटपालन के पर्यावरण अनुकूल उपाय।

लाल चींटी नियंत्रण तकनीक एवं फोटो

पश्चिम *सिंहभूम*, झारखण्ड

गुलेल
पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

डरावना नायलॉन जाल
पलामू, झारखंड

चिड़िया फासी
गोड्डा, झारखंड

पक्षियों को डराने वाला उपकरण

कौआ भगावो
बस्तर, छत्तीसगढ़

झंडी
दुमका, झारखंड

पक्षी डरावना जाल
पश्चिम सिंहभूम, झारखण्ड

धड़ाप : गिलहरियों के प्रबंधन के लिए स्वदेशी जाल

गोड्डा, झारखंड

गोड्डा, झारखंड

खुरुंगा : चूहों के प्रबंधन के लिए स्वदेशी जाल

गोड्डा, झारखंड

गोड्डा, झारखंड

दौली : पौधों की छंटाई और पोलर्डिंग के लिए

सुकिंदा, ओडिशा

सुकिंदा, ओडिशा

गोह : जंगली गिरगिट के प्रबंधन के लिए

पलामू, झारखण्ड

पलामू, झारखण्ड

इसके साथ ही स्थानीय ज्ञान और अनुभव को वैज्ञानिक सलाह से जोड़कर किसानों ने उत्पादन क्षमता, गुणवत्ता और आय में वृद्धि की है। इन नवाचारों ने न केवल तसर उद्योग को सशक्त बनाया है बल्कि ग्रामीण आजीविका को भी मज़बूती प्रदान की है। परियोजना APR04015CN के तहत उष्णकटिबंधीय तसर में किसानों द्वारा अपनाये गये अनेक नवाचार की पहचान की गई है जिनके माध्यम से तसर रेशम की खेती में न केवल उत्पादन और गुणवत्ता में वृद्धि हुई है बल्कि इससे स्थानीय ज्ञान और पारम्परिक तरीकों को संरक्षित करने में भी सहायता मिली है। ये नवाचार आधुनिक तकनीकों को पारम्परिक समझ के साथ जोड़ते हैं जिससे सतत् और पर्यावरण अनुकूल तसर पालन संभव हो पाया है। किसानों द्वारा कीट और परभक्षियों (predators) के नियंत्रण में किए गए नवाचारों से उष्णकटिबंधीय तसर पालन में अनेक लाभ प्राप्त हुए हैं जिससे पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना कीट नियंत्रण संभव हुआ। इसके साथ ही उन्होंने तसर कीट के शत्रु पक्षियों और परभक्षी कीटों की पहचान कर उनके प्रबंधन के लिए खेतों में प्राकृतिक अवरोध और अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र विकसित किया। इन उपायों से तसर कीटों की मृत्यु दर में कमी आई, कोसा की गुणवत्ता में सुधार हुआ और उत्पादन में वृद्धि हुई। इन नवाचारों ने लागत कम करते हुए किसानों की आय बढ़ाई और तसर पालन को अधिक टिकाऊ और लाभकारी बनाया।

*वैज्ञानिक-डी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

तसर उत्पादन में शिकारी ततैयों की मौसमी सक्रियता और प्रबंधन

हनमंत गडाद*, श्रेयांश, अम्पी भगत, जितेंद्र सिंह, विशाल मित्तल, जय प्रकाश पाण्डेय एवं एन. बी. चौधरी

परिचय : तसर कीटपालन मध्य भारत में एक महत्वपूर्ण कृषि-वानिकी आधारित उद्योग है जो 3.5 लाख से अधिक परिवारों को आजीविका प्रदान करता है। हालाँकि हाल के वर्षों में शिकारी ततैया तसर कीटपालन के लिए एक गम्भीर चुनौती बन गई है । ये ततैया मुख्य रूप से पोलिस्टेस वंश से सम्बन्धित हैं और तसर रेशमकीट के लार्वा पर हमला करते हैं। ये अपने घोंसले झाड़ियों, झाड़ीदार पेड़ों की शाखाओं और कभी-कभी आस-पास की इमारतों पर बनाते हैं। विभिन्न राज्यों में इन्हें अलग-अलग स्थानीय नामों से जाना जाता है - जैसे कि बिहार और झारखंड में 'बिरनी', पश्चिम बंगाल में 'बोलटा', ओडिशा में 'बिरुडी' तथा छत्तीसगढ़ में 'कंडोर' और 'तुमेल'। मुख्य रूप से तसर कीटपालन में शिकारी ततैयों को कम हानिकारक माना जाता था लेकिन पिछले 3-4 वर्षों में इनके कारण तसर उत्पादन में औसतन 15-20% तक की हानि बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल और ओडिशा के कुछ क्षेत्रों में दर्ज की गई है। शिकारी ततैयों का सामाजिक व्यवहार और संरचना उन्हें विभिन्न कीटों जैसे कि इल्लियां, मैंटिस, टिड्डे और अन्य कीटों का प्रभावी शिकारी बनाती है। इनकी कॉलोनियों में एक रानी, कार्यकर्ता और ड्रोन होते हैं जो समन्वित रूप से कार्य करते हैं। समशीतोष्ण क्षेत्रों में ये कॉलोनियाँ एक मौसम तक सक्रिय रहती हैं जबकि उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में यह अवधि अधिक लम्बी हो सकती है। यद्यपि वे कृषि, बागवानी और वन जैसे अन्य पारिस्थितिकी तंत्रों के लिए बहुत फायदेमंद हैं लेकिन तसर रेशमकीट पर उनके शिकार के कारण तसर रेशम उत्पादन पर उनका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसे देखते हुए उनकी मौसमी गतिविधि को समझने और फसल के नुकसान को कम करने के लिए उन्हें कैसे प्रबंधित किया जा सकता है, यह समझने की आवश्यकता है।

शिकारी ततैयों की मौसमी सक्रियता : तसर पारिस्थितिकी तंत्र में शिकारी ततैयों की उपस्थिति आमतौर पर जून से अगस्त के महीनों के बीच देखी जाती है। इन महीनों के दौरान आमतौर पर बीज फसलें (प्रथम टी.वी. और प्रथम बी.वी.) ली जाती हैं जो ततैयों के हमले से अधिक प्रभावित होती हैं जबकि व्यावसायिक फसलें अपेक्षाकृत कम प्रभावित होती हैं। आम तौर पर यह देखा गया है कि ततैया की तीन प्रजातियां तसर रेशम के कीड़ों को नुकसान पहुँचाती हैं जिनमें शामिल हैं पोलिस्टेस ओलिवेसियस, पोलिस्टेस स्टिग्माटैमुलस और पोलिस्टेस स्ट्रिगोससएट्राटस । तीन शिकारी ततैया प्रजातियों में सेपोलिस्टेस ओलिवेशियस सबसे अधिक हानिकारक प्रजाति है जिसकी वार्षिक जीवन-चक्र को पाँच चरणों में विभाजित किया जा सकता है। हाइबरनेशन के बाद का चरण एकाकी चरण, उद्भव चरण, हाइबरनेशन पूर्व चरण और हाइबरनेशन चरण, जैसा कि फाम एवं अन्य, 2015 द्वारा बताया गया है।

हाइबरनेशन (शीतनिद्रा) के बाद (7 दिन) : यह चरण तब शुरू होता है जब ततैया अपने शीतकालीन शरण स्थल (हाइबरनेकुलम) को छोड़ देती हैं और यह एक सप्ताह (7 दिन) तक चलता है । रानी ततैयों के उद्भव पर तापमान का अधिक प्रभाव पड़ता है। उपयुक्त तापमान के आधार पर रानी ततैया देर मार्च, शुरुआती अप्रैल या मध्य अप्रैल में प्रकट हो सकती है और जनसंख्या बढ़ाने के लिए अपने प्रजनन चक्र की शुरुआत करती है।

एकाकी चरण (50 दिन) : ततैयों के वार्षिक चक्र का वह चरण है जो घोंसला बनाने की प्रक्रिया से शुरू होता है और तब समाप्त होता है जब पहली श्रमिक ततैया प्रकट होती है। यह चरण लगभग 50 दिनों तक चलता है। प्रारम्भ में रानी ततैया अकेले ही घोंसले का निर्माण करती है और अण्डे देती है। इस दौरान वह अपने अण्डों और लार्वा की देखभाल करती है और उनके लिए भोजन एकत्र करती है। जैसे-जैसे पहली श्रमिक ततैया विकसित होती हैं वे घोंसले की देखभाल और भोजन संग्रहण में योगदान देने लगती हैं जिससे रानी केवल अण्डे देने पर केन्द्रित हो जाती है।

उदगमन चरण (170 दिन) : इस चरण में पहली श्रमिक ततैया विकसित होकर घोंसले की देखभाल और विस्तार में योगदान देने लगती हैं। रानी अब केवल अण्डे देने पर केंद्रित होती है जबकि श्रमिक ततैया भोजन संग्रह, लार्वा पालन और घोंसले की सुरक्षा संभालती हैं जिससे कॉलोनी तेजी से विकसित होती है।

हाइबरनेशन से पहले (50 दिन) : इस चरण में कॉलोनी अपनी अधिकतम् जनसंख्या तक पहुँच जाती है और नई रानियों तथा नर ततैयों (males) का विकास होता है। श्रमिक ततैया कॉलोनी को बनाए रखने और भोजन संग्रह करने में सक्रिय रहती हैं। प्रजनन के बाद नई रानियाँ सुरक्षित आश्रय की तलाश में चली जाती हैं जबकि पुरानी रानी और श्रमिक ततैया धीरे-धीरे मरने लगती हैं जिससे कॉलोनी का विघटन शुरू हो जाता है।

हाइबरनेशन (80 दिन) : इस चरण में निषेचित रानियाँ सुरक्षित आश्रय (हाइबरनेकुलम) में चली जाती हैं और प्रतिकूल मौसम परिस्थितियों, विशेष रूप से ठंड से बचने के लिए निष्क्रिय अवस्था में चली जाती हैं। इस दौरान पुरानी कॉलोनी पूरी तरह समाप्त हो जाती है क्योंकि श्रमिक ततैया और नर ततैया मर जाते हैं। हाइबरनेशन अवधि के बाद अनुकूल तापमान मिलने पर रानियाँ जागृत होकर नए घोंसले बनाने और प्रजनन चक्र को पुनः शुरू करने के लिए तैयार होती हैं।

दिनचर सक्रियता : ततैये आमतौर पर दिन के गर्म समय, विशेष रूप से सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे के बीच सबसे अधिक सक्रिय रहते हैं क्योंकि वे अपनी गतिविधियों के लिए सूर्य के प्रकाश और गर्मी पर निर्भर होते हैं। ठंडे तापमान या बादल छाए रहने की स्थिति में उनकी खोजी गतिविधि कम हो जाती है। इसके अलावा बरसात के दिनों में ततैये रेशमकीटों का शिकार नहीं करते क्योंकि गीली और आर्द्र परिस्थितियाँ उनके गतिशीलता और शिकार करने की क्षमता को सीमित कर देती हैं।

शिकारी ततैयों की प्रबंधन : ततैयों के प्रभावी नियंत्रण के लिए विभिन्न रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं ।

चित्र -1 : रेशमकीटों के शिकारियों से बचाने के लिए नायलॉन जाल में तसर का कीटपालन

कल्चरल नियंत्रण के तहत पुटुस, ताड़ के पेड़ और अन्य झाड़ियों को हटाकर ततैयों के घोंसलों को नष्ट किया जाना चाहिए क्योंकि आमतौर पर तसर रेशमकीट शिकार करने वाले ततैया कीटपालन के आस-पास के झाड़ियों और झाड़ीदार पौधों में अपना घोंसला बनाते हैं। इसके अलावा उच्च संक्रमण वाले क्षेत्रों में द्वितीय द्विवार्षिकी फसल की ब्रशिंग 7-10 दिन देरी से की जानी चाहिए। इन उपायों के अलावा बहिष्करण तकनीक के रूप में चॉकी कीटपालन के दौरान नायलॉन जाल (चित्र-1) का उपयोग करना फायदेमंद होता है क्योंकि यह तसर रेशम के कीड़ों को ततैयों सहित विभिन्न शिकारियों से बचाता है। खासकर तीसरे इंस्टार तक क्योंकि ततैयों और अन्य शिकारियों का हमला मुख्य रूप से दूसरी और तीसरी अवस्था के लार्वों पर अधिक होता है।

यांत्रिक नियंत्रण के अंतर्गत कीटपालन क्षेत्रों और उसके आस-पास ततैयों के घोंसलों का नियमित निरीक्षण कर उन्हें समय पर हटाना आवश्यक है (चित्र-2)। ततैयों के डंक से बचने के लिए घोंसलों को देर शाम या सुबह के समय नष्ट करना उचित होता है और यदि घोंसलों को हटाना मुश्किल हो तो उन्हें भगाने के लिए धुआँ किया जा सकता है।

चित्र-2 : आस-पास की झाड़ियों से ततैयों के घोंसलों को नष्ट करना

उपरोक्त विधियों के अतिरिक्त ततैयों को चित्र-3 में दिखाए अनुसार गमीस्टिक के माध्यम से फँसाकर भी नियंत्रित किया जा सकता है। यह आदिवासी समुदायों द्वारा शिकारी कीड़ों और ततैयों को फँसाने के लिए विकसित स्वदेशी तकनीकी ज्ञान [Indigenous Technical Knowledge (ITK)] में से एक है। आदिवासी समुदाय पारम्परिक रूप से गमीस्टिक के लिए 'लासा' शब्द का इस्तेमाल करते हैं और चिपचिपा पदार्थ आमतौर पर बरगद के पेड़ और मोरेसी परिवार के अन्य पेड़ों के चिपचिपा पदार्थ से तैयार किया जाता है।

चित्र-3 : लस्से वाले डंडे का उपयोग कर के वयस्क ततैया को फँसाना

रासायनिक नियंत्रण के अंतर्गत तरल गुड़ में थोड़ी मात्रा में एसिटामिप्रिड (जहरीले पदार्थ) मिलाकर मिश्रण तैयार किया जाता है जिसे 3-4 छोटे सूती के थैलों में रखकर कीटपालन क्षेत्र के चारों ओर लटका दिया जाता है (चित्र-4)। यह मिश्रण ततैयों को आकर्षित करता है और इसको सेवन करने के बाद जहरीले पदार्थ की उपस्थिति के कारण वे मर जाते हैं। इन सभी उपायों को अपनाकर ततैयों की समस्या को प्रभावी ढंग से प्रबंधित किया जा सकता है।

चित्र-4 : रेशम कीटपालन के खेतों में जहरीले तरल गुड़ से भरे सूती के कपड़े

निष्कर्ष : उपरोक्त विधियों को अपनाकर ततैया के प्रकोप को कम किया जा सकता है एवं तसर रेशम का उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।

*वैज्ञानिक-सी, के.त.अ. व प्र.स., राँची।

तसर रेशमकीट के पेडंकल का रेशम वस्त्र निर्माण में महत्वपूर्ण उपयोगिता

आशु कुमार *, शेखर कुमार, प्रमोद कुमार दूबे, जय प्रकाश पाण्डेय एवं एन. बी. चौधरी

प्रस्तावना : तसर कोसा का डंठल एक महत्वपूर्ण संरचनात्मक घटक है जो कोसा निर्माण के दौरान कोसा को खाद्य पौधे से जोड़ता है। यह रेशम के कीड़े (*एन्थीरिया माइलिट्टा डी.*) द्वारा स्रावित रेशम धागे जैसी ही संरचना है। पेडंकल यांत्रिक सहायता प्रदान करता है और यह सुनिश्चित करता है कि कोसा पेड़ की शाखाओं या पत्तियों से सुरक्षित रूप से जुड़ा रहे। यह उष्णकटिबंधीय तसर कोसा का अभिन्न अंग है जिसका अभी तक कुशल तरीके से अन्वेषण नहीं किया जा सका है। उष्णकटिबंधीय तसर कोसा का डंठल *एन्थीरिया माइलिट्टा* के जीवन-चक्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसका जैविक और औद्योगिक दोनों तरह से महत्व है। पेडंकल जंगली तसर रेशमकीट *ए.माइलिट्टा* की एक विशिष्ट विशेषता है जो उन्हें पालतू तसर रेशम किस्मों से अलग करती है जिसमें ऐसी मजबूत लगाव संरचना का अभाव होता है। इसमें ऊनी रेशे की तरह गर्माहट के गुणों वाला मुलायम रेशमी रेशा बनाने की क्षमता है एवं इसमें सेरीसिन की मात्रा भी अधिक होती है और यह सेरीसिन का एक स्रोत हो सकता है जिसका उपयोग गैर-वस्त्र अनुप्रयोगों में किया जा सकता है।

चित्र-1 : पेडंकल

तसर पेडंकल की मुख्य विशेषताएं :

1. **संरचना :** यह फाइब्रोइन और सेरीसिन प्रोटीन से बना कोसा के समान लेकिन अधिक कठोर और मोटा होता है।

2. **मजबूती :** यह मजबूत और टिकाऊ होता है जिससे कोसा हवा और बारिश जैसे पर्यावरणीय तनाव का सामना करने में सक्षम होता है।

3. **लम्बाई और मोटाई :** पर्यावरणीय कारकों और भोज्य पौधों की प्रजातियों के आधार पर भिन्न-भिन्न होती है। आमतौर पर कुछ सेंटीमीटर लम्बी होती है।

4. **रेशम प्रसंस्करण में भूमिका :** आमतौर पर कोसा छंटाई के दौरान इसे हटा दिया जाता है क्योंकि इसका उपयोग रेशम धागाकरण में नहीं किया जाता है। यह पारम्परिक रेशम धागाकरण के लिए अनुपयुक्त है लेकिन वैकल्पिक उपयोगों के लिए मूल्यवान है।

तसर पेडंकल का जैविक महत्व :

संलग्नक तंत्र : पेडंकल कोसा को *टर्मिनलिया अर्जुन, टर्मिनलिया टोमेंटोसा* और *शोरिया रोबेस्टा* जैसे पौधों को मजबूती से पकड़ के रखने में मदद करता है तथा यह कोसा को हवा, बारिश या शिकार जैसी पर्यावरणीय गड़बड़ी के कारण गिरने से रोकता है।

रेशमकीट संरक्षण : एक पूर्ण विकसित डंठल यह सुनिश्चित करता है कि कोसा कीट के निकलने तक अप्रभावित रहे जिससे रेशमकीट का जीवन-चक्र सफलतापूर्वक पूरा हो जाता है।

विभिन्न पारि-प्रजातियों के बीच भिन्नता :

एन्थीरिया माइलिट्टा के विभिन्न पारि-प्रजातियों में पेडंकल की लम्बाई, मोटाई और मजबूती में भिन्नताएं पाई जाती हैं जो आनुवांशिक और पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित होती हैं। मौसमी परिस्थितियाँ (तापमान, आर्द्रता) और भोज्य पौधे का प्रकार, पेडंकल की विशेषताओं को प्रभावित करते हैं। हालांकि रेशम उद्योग में पेडंकल को अक्सर त्याग दिया जाता है लेकिन यह एक उल्लेखनीय अनुकूलन है जो जंगल में तसर रेशमकीटों के अस्तित्व को बढ़ाता है। यह कपड़ा और बायोपॉलिमर उद्योगों में मूल्य संवर्धन की भी क्षमता रखता है।

तसर पेडंकल का वैकल्पिक अनुप्रयोग : पेडंकल का उपयोग बलकल/स्पन धागा बनाने में किया जा सकता है। जिस धागे का इस्तेमाल शॉल, बंडी, स्टोल इत्यादि बनाने में किया जा सकता है। इसके अलावा इससे सेरीसिन निष्कर्षण का कार्य भी किया जा सकता है। पेडंकल से बने वस्त्र उपयोगी एवं अधिक समय तक उपयोग में लाये जा सकते हैं।

पेडंकल का बलकल धागे में रूपांतरण की प्रक्रिया : तसर कोसा का डंठल, हालांकि अपनी खुरदरी बनावट के कारण पारम्परिक रेशम धागाकरण के लिए अनुपयुक्त है लेकिन इसका उपयोग बलकल धागा बनाने के लिए किया जाता है जो एक पर्यावरण के अनुकूल, हस्तनिर्मित धागा है। बलकल धागे को एक मैनुअल या अर्ध-यांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से उत्पादित किया जाता है जो कठोर, गैर-रील करने योग्य रेशम फाइबर को स्पन करने योग्य बनाता है।

पेडंकल के रूपांतरण प्रक्रिया के चरण

1. **संग्रहण और छंटाई (सॉर्टिंग) :** तसर कोसा से पेडंकल एकत्र किए जाते हैं। धूल, मलबे और अवांछित सामग्री को हटाने के लिए उन्हें साफ किया जाता है।

2. **पेडंकल पकाना :** पेडंकल फाइबर को नरम करने के लिए पेडंकल को क्षारीय घोल आमतौर पर 12 ग्राम प्रति लीटर सोडियम कार्बोनेट में 60-90 मिनट उबाला जाता है। नियंत्रित कुकिंग सुनिश्चित करता है कि फाइबर कताई के लिए पर्याप्त ताकत बनाए रखे।

3. **फाइबर खोलना और कार्डिंग :** नरम हो चुके डंठलों को (बीटिंग) पीटा जाता है, छांटा जाता है या हाथ से अलग किया जाता है ताकि रेशों की संरचना ढीली हो जाए। एकरूपता के लिए रेशों को संरेखित करने के लिए हाथ से कार्डिंग या सरल मशीनों का उपयोग करके कार्डिंग की जाती है।

4. **कताई :** प्रसंस्कृत रेशों को अम्बर चरखा (पारम्परिक कताई पहियों) या मिल कताई मशीनों का उपयोग करके काता जाता है जिससे निरंतर बलकल धागा बनता है। धागे को मोड़कर एवं ऐंठन प्रदान कर मजबूत किया जाता है ताकि इसकी स्थायित्व एवं मजबूती बढ़े।

बलकल धागे की विशेषताएं :

» **मोटे और बनावट वाले :** हथकरघा बुनाई और शिल्प अनुप्रयोगों के लिए उपयुक्त।

» **पर्यावरण अनुकूल और टिकाऊ :** अपशिष्ट उपोत्पाद का उपयोग करता है जिससे रेशम उद्योग के अपशिष्ट में कमी आती है।

» **मजबूत और टिकाऊ :** गलीचे, असबाब और मोटे कपड़े बनाने में उपयोग किया जाता है।

» **मिश्रित क्षमता :** कोमलता और लचीलेपन में सुधार के लिए इसे कपास या ऊन के साथ मिश्रित किया जा सकता है।

बलकल धागे के अनुप्रयोग :

1. **कपड़ा और हस्तशिल्प उद्योग**

» पर्यावरण अनुकूल वस्त्रों की बुनाई के लिए हाथ से काते गए मोटे धागे में इसका उपयोग किया जाता है।

» **मिश्रित वस्त्र :** टिकाऊ कपड़ा मिश्रण बनाने के लिए इसे कपास, ऊन या जूट के साथ मिलाया जा सकता है।

पेडंकल | पेडंकल पकाना | अम्बर चरखा/मिल कताई | बलकल धागा | बलकल धागे से निर्मित वस्त्र

चित्र-2 : पेडंकल के धागे में रूपांतरण प्रक्रिया के चरण

2. **जैव-कम्पोजिट और फाइबर-आधारित सामग्री**

» **प्राकृतिक फाइबर सुदृढ़ीकरण :** टिकाऊ पैकेजिंग और निर्माण के लिए बायोडिग्रेडेबल समग्र सामग्रियों में संसाधित किया जा सकता है।

» **गैर-बुने हुए कपड़े :** असबाब और आंतरिक सजावट के लिए फेल्टेड या गैर-बुने हुए सामग्रियों में उपयोग किया जाता है।

» **हस्त निर्मित रस्सियाँ और डोरियाँ :** इसकी मजबूती के कारण इसे हस्तशिल्प और फर्नीचर बनाने के लिए रस्सियों या डोरियों में घुमाया जा सकता है।

3. **बायोमेडिकल और फार्मास्युटिकल अनुप्रयोग**

सेरीसिन निष्कर्षण : पेडंकल में सेरीसिन होता है जिसमें एंटीऑक्सीडेंट और घाव भरने वाले गुण होते हैं जो सौंदर्य प्रसाधनों और फार्मास्यूटिकल्स में उपयोगी होते हैं।

सिल्क प्रोटीन हाइड्रोलाइज़ेट्स : इसका उपयोग त्वचा देखभाल उत्पादों और बायोएक्टिव ड्रेसिंग में प्रोटीन-आधारित बायोमटेरियल के लिए किया जा सकता है।

5. **औद्योगिक अनुप्रयोग**

जैव-कम्पोजिट उत्पादन : पेडंकल से प्राप्त प्रसंस्कृत फाइब्रोइन का उपयोग जैव-निम्नीकरणीय कम्पोजिट बनाने में किया जा सकता है।

चिपकने वाले पदार्थ और कोटिंग्स : पेडंकल से निकाले गए रेशम प्रोटीन का उपयोग जैव-आधारित चिपकने वाले पदार्थों और कोटिंग्स में किया जा सकता है।

निष्कर्ष : तसर कोसा के डंठल जिसे कभी अपशिष्ट उत्पाद माना जाता था, उसका टिकाऊ वस्त्र बनाने, चिकित्सा और औद्योगिक अनुप्रयोगों में अपार संभावनाएं हैं। इसकी बायोडिग्रेडेबिलिटी, ताकत और प्रोटीन से भरपूर संरचना इसे पर्यावरण के अनुकूल नवाचारों के लिए एक मूल्यवान संसाधन बनाती है। सचमुच ही यह अति उपयोगी रेशम है जिसका सही उपयोग से तसर किसानों की आय बढ़ाने में मददगार साबित हो सकता है। साथ ही अच्छे गुणवत्ता का वस्त्र बनाया जा सकता है।

*वैज्ञानिक-बी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

रेशम के कीड़े का जीवन-चक्र : वोल्टिनिज़्म के संदर्भ में तसर रेशम के कीड़े पर विशेष जोर

निधि सुखीजा*, इम्मानुएल गिलवाक्स प्रभु, जितेंद्र सिंह, जय प्रकाश पाण्डेय एवं एन. बी. चौधरी

प्रस्तावना : रेशम के कीड़े का जीवन-चक्र सबसे उन्नत रूप की रूपांतरण प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है। इसे होलोमेटाबोलस कहा जाता है जिसमें रेशम के कीड़े अपने जीवन-चक्र को विकास के चार विभिन्न चरणों : अंडा, लार्वा, प्यूपा और वयस्क के अनुक्रमिक प्रगति के माध्यम से पूरा करते हैं। सभी किस्म के तसर कीटों का जीवन-चक्र वर्षा के मौसम की शुरुआत से शुरू होता है। वोल्टिनिज़्म और मोल्टिज़्म दो ऐसे लक्षण हैं जो तसर रेशम कीड़े के जीवन-चक्र को नियंत्रित करते हैं। वोल्टिनिज़्म का मतलब है वर्ष में पीढ़ियों की संख्या। इसलिए वोल्टिनिज़्म तसर रेशम कीड़ों की वार्षिक प्रजनन आवृत्ति से सम्बन्धित है। यह एक विरासत में मिलने वाला लक्षण है जो आनुवांशिकी और हार्मोन्स द्वारा नियंत्रित होता है। तसर रेशम कीड़ा एकल, द्वि. या त्रि. वोल्टाइन पाया जाता है। मोल्टिंग, जिसे खाल छोड़ना या एक्डाइसिस (Ecdysis) भी कहा जाता है वह प्रक्रिया है जिसमें एक कीड़ा अपने जीवन-चक्र के विशेष बिन्दुओं पर नियमित रूप से बाहरी परत या आवरण को छोड़ता है। इस लक्षण के आधार पर रेशम के कीड़ों को त्रि.मोल्टर्स, टेट्रा-मोल्टर्स, पेंटा-मोल्टर्स और हेक्सा-मोल्टर्स (बहुत दुर्लभ) में वर्गीकृत किया जा सकता है। सामान्यतः तसर रेशम कीड़े में टेट्रा-मोल्टर्स पाए जाते हैं। तापमान और प्रकाश काल में भिन्नताएं वयस्कों द्वारा अंडे देने में डायपॉज का कारण बनती हैं, जब वे गर्म, लम्बे दिन की स्थितियों में होते हैं। जबकि ठंडी, छोटे दिन की स्थितियों से आने वाले वयस्कों द्वारा गैर-डायपॉज अंडे दिए जाते हैं।

वोल्टिनिज़्म के लक्षण का उत्तराधिकार : तसर रेशम के कीड़ों में उनके वोल्टिनिज़्म के आधार पर तीन स्पष्ट प्रकार की नस्लें होती हैं : एकल-वोल्टाइन, द्वि.वोल्टाइन और त्रि.वोल्टाइन। एकल वोल्टाइन नस्ल में, जीवन-चक्र वर्ष में एक बार वर्षा के मौसम के दौरान दोहराया जाता है। द्वि. वोल्टाइन नस्लें वर्षा के दौरान उगाई जाती हैं। ऊँचाई तसर रेशम के कीड़ों के वोल्टिनिज़्म पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। तितली का निकलना तापमान और आर्द्रता के स्तर द्वारा निर्धारित होता है। अंडे अंडाकार होते हैं, dorso-ventrally चपटा और पूरी posterior धुरी के साथ द्विपक्षीय सममित होते हैं। लार्वा का शरीर आकार एरुसीफॉर्म होता है और इसमें काटने और चबाने वाले मुखांगों के साथ हिपोग्नैथस सिर होता है। यौन चिह्न पांचवें इन्स्टार में पार्श्व रूप से प्रकट होते हैं जो आठवें और नौवें पेट के खंडों के वेंट्रल सतह पर सफेद धब्बों के रूप में होते हैं। सभी इन्स्टार के दौरान लार्वा में पांच प्रकार के ट्यूबर्कल होते हैं। द्वि.वोल्टाइन तसर रेशम कीड़े का जीवन-चक्र साल में दो प्रजनन चक्रों में शामिल होता है जिसे द्वि. वोल्टाइन कहा जाता है, जो अगस्त से अक्टूबर और अक्टूबर से दिसम्बर तक होता है। इस अवधि के दौरान अगस्त से दिसम्बर तक तसर कीड़े सक्रिय और गैर-डाईपॉजिंग होते हैं जबकि वर्ष के शेष भाग के लिए वे एक निष्क्रिय अवस्था में चले जाते हैं जिसे डाईपॉज कहा जाता है। तसर कीड़ों के जीवन में सक्रिय और निष्क्रिय अवस्थाओं के बीच संक्रमण पर्यावरणीय और हार्मोनल प्रभावों के संयोजन द्वारा नियंत्रित होता है। त्रिवोल्टाइन नस्लों में साल में तीन प्रजनन चक्र होते हैं। इसके अतिरिक्त तीसरी फसल का पालन किया जाता है जिससे डाईपॉजिंग कोसा प्राप्त होते हैं। लार्वा का विकास संक्षिप्त होता है और लार्वा उच्च तापमान और आर्द्रता के प्रति प्रतिरोध दिखाते हैं। हालांकि लार्वा और कोसा दोनों आकार में छोटे होते हैं और वाणिज्यिक रूप से कोसा की गुणवत्ता निम्न होती है। पॉलीवोल्टाइन नस्लों के वयस्क गैर-डाईपॉजिंग अंडे देते हैं। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाए

जाने वाले रेशम के कीड़े, पॉलीवोल्टाइन स्वभाव का प्रदर्शन करते हैं जो निरंतर भ्रूण विकास द्वारा चिह्नित होता है। इसके विपरीत तापमान वाले क्षेत्रों में, जिन्हें एकल-वोल्टाइन कहा जाता है, वे एक वैकल्पिक डाईपॉज में जाते हैं जबकि द्वि.वोल्टाइन प्रकार पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित अनिवार्य डाईपॉज का अनुभव करते हैं। हालाँकि सभी नस्लों को सभी स्थानों पर नहीं पाला जा सकता है। केवल कुछ नस्लें व्यापक जलवायु स्थितियों के लिए अनुकूल हो सकती हैं। अनुकूलन के एक भाग के रूप में तसर रेशम के कीड़े अपने जीवन-चक्र (वोल्टिनिज़्म) के सक्रिय चरण को बढ़ा या घटा सकते हैं। उदाहरण के लिए तिरा, भंडारा, सुकिन्दा और डाबा त्रिवोल्टाइन इकोरेस के तसर रेशम के कीड़े अपने प्राकृतिक आवास से स्थानांतरित होने पर और राँची की स्थिति में पाले जाने पर द्वि.वोल्टाइन की तरह व्यवहार करने लगे, जैसा कि पूर्व के बहु-स्थान परीक्षणों में स्पष्ट है। यह इसलिए हो सकता है क्योंकि राँची 708 मीटर ऊँचाई पर स्थित है। इसके अलावा डाईपॉज में प्रवेश करने वाले प्रतिशत में वृद्धि की प्रवृत्ति भी देखी गई है। इनमें से तिरा इकोरेस ने द्वि.वोल्टिनिज़्म में अधिकतम् परिवर्तन दर्ज किया। इसी तरह यह भी बताया गया है कि जब मोदल तसर इकोरेस को और अधिक ऊँचाई पर पाला जाता है तो वे एकल-वोल्टाइन हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह दस्तावेजित किया गया है कि *ए.माइलिट्टा* का वोल्टिनिज़्म (एकल/द्वि./त्रि.) तापमान, सापेक्ष आर्द्रता, दिन की लम्बाई और वर्षा जैसे पर्यावरणीय चर से प्रभावित होता है। वोल्टिनिज़्म पैटर्न जिसे एक विशेष क्षेत्र में स्थिर माना जाता है, विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों में भिन्न हो सकता है। प्रकाश और तापमान सीधे मस्तिष्क पर कार्य करते हैं, Sub-oesophageal गैंग्लियन को उत्तेजित करते हैं और इस प्रकार डाईपॉज हार्मोन का उत्पादन करते हैं। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में चयनात्मक दबाव भिन्न होता है जिसमें डाईपॉज की घटना अक्षांश के साथ बढ़ती है। उष्णकटिबंधीय तसर रेशम के कीड़े *एन्थीरिया माइलिट्टा* ड्रूरी में दूसरी फसल के दौरान डाईपॉज प्रेरण पर अक्षांश और ऊँचाई से सम्बन्धित कारकों जैसे फोटोपिरियड और तापमान के प्रभाव की जाँच की। दूसरी फसल के व्यक्तियों में डाईपॉज प्रतिशत पर निर्जीव और जैविक कारकों के संयुक्त प्रभाव की जाँच करने के लिए मल्टीपल फैक्टर रिग्रेशन विश्लेषण किया गया। परिणामों ने संकेत दिया कि ऊँचाई, अक्षांश, न्यूनतम् तापमान, अधिकतम् तापमान, फोटोपिरियड और लार्वल अवधि ने मिलकर डाईपॉज प्रतिशत को बढ़ाने में 82.60 प्रतिशत योगदान दिया। न्यूनतम् तापमान इस प्रजाति में वैकल्पिक डाईपॉज की शुरुआत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फोटोपिरियड, लार्वल अवधि, अधिकतम् और न्यूनतम् तापमान, डाईपॉज प्रतिशत और वाणिज्यिक लक्षण जैसे कोसा वजन, लार्वल अवधि और रेशम अनुपात के बीच मजबूत सम्बन्ध देखे गए। निम्न अक्षांश पर पूरे वर्ष में फोटोपिरियड में कम भिन्नता थी जो एकल-वोल्टिनिज़्म की ओर ले जाती है, जबकि उच्च अक्षांश पर कम पीक फोटोपिरियड और उच्च तापमान के कारण बहुवोल्टिनिज़्म प्रदर्शित होता है। उच्च ऊँचाई ने उच्च अक्षांश के प्रभावों की नकल की जिसके परिणामस्वरूप तापमान कम और प्रति वर्ष जीवन-चक्र कम होते हैं। इन निष्कर्षों के आधार पर भारत का मुख्य उष्णकटिबंधीय तसर क्षेत्र एक एकल-वोल्टाइन क्षेत्र के रूप में पहचाना गया जबकि कुछ अपवाद उच्च ऊँचाई और घने वन के कारण कम तापमान वाले क्षेत्रों के लिए थे। साथ ही शुष्क और गर्म क्षेत्रों के लिए जहाँ पहले फसल का उदय प्रतिकूल परिस्थितियों और पत्तों की उपलब्धता के कारण विलम्बित होता है।

पोषण का वोल्टिनिज़्म पर प्रभाव : तसर रेशम के कीड़े के प्यूपों के वोल्टिनिज़्म पर एक सहयोगात्मक प्रभाव देखा गया। विशेषकर द्विवोल्टाइन और त्रिवोल्टाइन किस्मों के संदर्भ में जो मुख्य रूप से जिंक सामग्री के कारण है। यह सुझाव देता है कि जिंक स्तर तसर रेशम के कीड़ों के वोल्टिनिज़्म में एक निर्णायक कारक के रूप में कार्य करता है। सुपरऑक्साइड डिसमुटेज (SOD) एक एंजाइम है जो सुपरऑक्साइड मुक्त कणों को ऑक्सीजन और हाइड्रोजन पेरोक्साइड में परिवर्तित करके ऑक्सीडेटिव तनाव से कोशिकाओं की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह प्रतिक्रिया अत्यधिक प्रतिक्रियाशील और हानिकारक अणुओं, जिन्हें प्रतिक्रियाशील ऑक्सीजन प्रजातियाँ (ROS) कहा जाता है, के गठन को रोकने में मदद करती है। SOD एंजाइमों को अपनी क्रियाशीलता के लिए धातु आयनों की आवश्यकता हो सकती है और जिंक एक ऐसा सहकारक है। कुछ प्रकार के SOD जैसे कि कोशिकीय Cu/Zn-SOD, जो कई जीवों में पाए जाते हैं, जैसे कि Drosophila melanogaster में, जिंक आयन (Zincion) एंजाइम की संरचना और कार्य में महत्वपूर्ण होते हैं।

जिंक आयन एंजाइम के सक्रिय स्थान पर स्थित होता है, जहाँ यह सुपरऑक्साइड मुक्त कणों के परिवर्तित होने में मदद करता है। जिंक युक्त रूप का अधिक उत्पादन Drosophila melanogaster के जीवनकाल को बढ़ाने का कारण बना। यह सुझाव देता है कि जिंक की उपस्थिति SOD के सही कार्य और ऑक्सीडेटिव क्षति को कम करने की क्षमता के लिए महत्वपूर्ण है जिससे fruit fly मॉडल, जीव में दीर्घकालिकता को बढ़ावा मिलता है। अंतर्संविधानिक समूहों के बीच ऑक्सीडेटिव तनाव सूचकांक और एंटीऑक्सीडेंट रक्षा क्षमता की तुलना की और पाया कि TV समूह में ऑक्सीडेटिव तनाव स्तर बढ़ा हुआ, एंटीऑक्सीडेंट एंजाइमों की गतिविधि कम थी और उन्होंने संतुलन बनाए रखने के लिए कम सक्रिय यौगिक जैसे कि घटित ग्लूटाथियोन और एस्कॉर्बिक एसिड पर अधिक निर्भरता दिखाई।

इकडिसोन का डायपॉज़ पर प्रभाव : तसर रेशम के कीड़े *एन्थीरिया माइलिट्टा* ड्रूरी के गैर-डायपॉज़ (NDD) और डायपॉज़-निर्धारित (DD) लार्वा का लार्वल अवधि क्रमशः 28 दिन और 39 दिन रिपोर्ट की गई है। लार्वल इकडिसिस का लक्षण यह है कि मोल्टिंग से पहले इकडिसोन स्तर में वृद्धि होती है जबकि डायपॉज़ की शुरुआत में DD लार्वा में तीसरे इन्स्टार के दौरान इकडिसोन में अचानक कमी से होती है। इकडिसोन के शिखर विकासात्मक चरणों के पहले आते हैं जिसमें लार्वल-प्यूपल परिवर्तन से पहले दो प्रमुख शिखर होते हैं। फीडिंग के बाद NDD और DD लार्वा के बीच इकडिसोन स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होता लेकिन DD लार्वा में स्तर उच्च होते हैं।

डायपॉज़ से संबंधित व्यक्त अनुक्रम टैग (ESTs) : उष्णकटिबंधीय तसर रेशम के कीड़े *एन्थीरिया माइलिट्टा* ड्रूरी की डाबा द्विवोल्टाइन इकोरेस में वैकल्पिक प्यूपल डायपॉज़ होता है जिसके परिणामस्वरूप वयस्कों का अनियमित, असंगत और असंगठित रूप से उभरना होता है जिससे बीज भंडार में 10-30% की हानि होती है। डायपॉज़ की प्रेरणा, रखरखाव और समाप्ति को समझना इन समस्याओं को कम करने के लिए महत्वपूर्ण है। डायपॉज़-विशिष्ट व्यक्त अनुक्रम टैग (ESTs) की पहचान की जिसमें Hsp70, Hsp23, हेक्सामेरिन्स और PCNA शामिल हैं। विभिन्न ESTs डायपॉज़ के विभिन्न चरणों में देखे जाते हैं जिसमें Hsp70, Hsp23 और Hsp90 विशिष्ट चरणों में अपरेगुलेट होते हैं। PCNA डायपॉज़ के दौरान डाउनरेगुलेट होता है जबकि डायपॉज़ समाप्ति पर अपरेगुलेट होता है। कुछ ESTs की उपस्थिति डायपॉज़ समाप्ति की वास्तविक आयु को संकेतित करती है जिससे 195 दिनों से पुराने प्यूपों का कम तापमान उपचार करना संभव होता है ताकि पतंग उभरने का समय फसल कार्यक्रमों के साथ मेल खा सके। डाबा त्रि.वोल्टाइन इकोरेस, *एन्थीरिया माइलिट्टा* ड्रूरी का उगान भारत के पूर्वी हिस्सों में विशेषकर 20°N से 25°N के बीच की अक्षांश पर व्यापक रूप से किया जाता है। ये प्यूपे जनवरी से जून तक पाँच से छह महीने की वैकल्पिक प्यूपल डाइपॉज में रहते हैं जिससे असामान्य और असंगठित पतंग उभरने के कारण 25-30% तक हानियाँ होती हैं। खासकर जब सूखी स्थितियाँ प्री-मौसमी बारिश के बाद आती हैं। इन समस्याओं को हल करने के लिए प्यूपे को निम्न तापमान पर उपचारित किया जा सकता है ताकि डाइपॉज समाप्त किया जा सके। डाइपॉज समाप्ति की विशेष आयु को हेमोलिंफ जैव रासायनिक घटकों और प्रोटीन प्रोफाइल का विश्लेषण करके निर्धारित किया। उन्होंने पाया कि डाइपॉज के दौरान ट्रेहलोज़ की सांद्रता कम रहती है लेकिन जब प्यूपे 145-150 दिनों के हो जाते हैं तो यह बढ़ने लगती है। इसके विपरीत ग्लिसरोल और ग्लाइकोजन की मात्रा डाइपॉज के दौरान उच्च रहती है लेकिन उसी आयु पर घटने लगती है। इसके अलावा नॉन-डाइपॉज़िंग प्यूपे में प्रोटीन का स्तर लगातार अधिक होता है जबकि डाइपॉज़िंग प्यूपे में यह उतार-चढ़ाव करता है। महत्वपूर्ण रूप से 16 kD का एक डाइपॉज-विशिष्ट प्रोटीन बैंड 145-150 दिनों तक बना रहता है जो यह पुष्टि करता है कि इस आयु पर डाइपॉज को प्रभावी रूप से समाप्त किया जा सकता है। इस महत्वपूर्ण चरण में प्यूपे का उपयोग करने और निम्न तापमान उपचार के माध्यम से, किसान फसल की हानि को काफी कम कर सकते हैं और पतंगों के उभरने को फसल की अनुसूची के साथ समन्वयित कर सकते हैं।

*वैज्ञानिक-बी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

रेशम उद्योग के विभिन्न स्तरों पर तसर रेशम का मूल्य श्रृंखला विश्लेषण

अर्नब राय* एवं एन. बी. चौधरी

सारांश : समकालीन समय में भारत में तसर रेशम उद्योग एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है जो वैश्वीकरण, तकनीकी उन्नति और उपभोक्ता वरीयताओं में बदलाव के दौर से गुजर रहा है। तसर रेशम के अद्वितीय गुण जिसमें इसकी प्राकृतिक बनावट, समृद्ध रंग विविधताएँ और बायोडिग्रेडेबिलिटी शामिल हैं, इसे पर्यावरण के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं के लिए एक आकर्षक विकल्प बनाते हैं। यह अध्ययन तसर रेशम उद्योग के मूल्य श्रृंखला विश्लेषण पर आधारित है। यह अध्ययन पूर्वी भारत के साथ-साथ देश के अन्य भागों में तसर रेशम उत्पादों की भारी माँग के बावजूद तसर रेशम उद्योग के पिछड़ेपन के कारण को समझने के लिए किया गया है। अध्ययन से यह पता लगाना है कि उद्योग विभिन्न मूल्य श्रृंखला अभिकर्ताओं के लिए लाभदायक हैं या नहीं, वर्तमान स्थिति के उत्थान के लिए एक व्यवसाय मॉडल का निर्माण करना और यह पहचानना है कि कौन से कारक उद्योग पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। यह शोध विभिन्न समस्याओं का समाधान करेगा और क्षेत्रीय रेशम उत्पादन को परिपक्व और लाभदायक बनाने पर जोर देगा।

प्रस्तावना : रेशम धागाकरण के पारम्परिक तरीकों में रेशम के रेशे प्राप्त करने के लिए कोसा को सावधानीपूर्वक खोलना और उन्हें अलग करना शामिल है, जिन्हें फिर धागे में काता जाता है और उनकी गुणवत्ता और स्थायित्व को बढ़ाने के लिए विभिन्न पोस्ट-प्रोसेसिंग उपचारों के अधीन किया जाता है। हालाँकि मशीनीकृत धागाकरण मशीनों जैसी आधुनिक तकनीकों ने इस प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया है जिससे रेशम उत्पादन में उत्पादकता और दक्षता बढ़ी है। एकबार जब कच्चा रेशम धागा प्राप्त हो

जाता है तो इसे तैयार वस्त्रों में बुनने के लिए तैयार करने के लिए आगे की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। इसमें डिगमिंग, रंगाई और आकार देने जैसे चरण शामिल हैं, जो रेशम के धागे को रंग, बनावट और मजबूती प्रदान करते हैं जिससे इसकी सौंदर्य अपील और विपणन क्षमता बढ़ जाती है। कुशल कारीगर फिर रंगे हुए रेशम के धागे को साड़ी, स्कार्फ, कपड़े और साज-सामान सहित असंख्य उत्पादों में बदल देते हैं जिनमें से प्रत्येक उनके शिल्प कौशल और रचनात्मकता की पहचान करता है। मूल्य श्रृंखला में मूल्य संवर्धन और सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के अवसर प्रचुर मात्रा में हैं। खास तौर पर ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में जहाँ तसर रेशम उत्पादन प्रचलित है। किसानों द्वारा भोज्य पौधों की खेती से लेकर रेशम के कीड़ों के पालन और कारीगरों द्वारा वस्त्रों की बुनाई तक, मूल्य श्रृंखला का प्रत्येक चरण स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार, आय और कौशल विकास के अवसर पैदा करता है। इसके अलावा तसर रेशम मूल्य श्रृंखला में आधुनिक तकनीकों और विपणन रणनीतियों के एकीकरण से इसकी प्रतिस्पर्धात्मकता और बाजार पहुँच बढ़ाने की क्षमता है। हाल के वर्षों में पर्यावरण के प्रति बढ़ती जागरूकता और नैतिक विचारों के कारण टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल वस्त्रों के प्रति उपभोक्ता वरीयताओं में उल्लेखनीय बदलाव आया है। प्रचुर मात्रा में प्रकृति में उगाए जाने वाले पौधों की उपलब्धता गैर-शहतूती रेशम उत्पादन के लिए मुख्य अद्वितीय संसाधन हैं। पूर्वी भारत अर्थात् झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, बिहार की पर्यावरणीय और जलवायु परिस्थितियाँ वन आधारित तसर रेशम उत्पादन के लिए उपयुक्त हैं।

तालिका -1 : तसर रेशम उत्पादन में मूल्य श्रृंखला प्रदर्शनकर्ता और उनकी भूमिकाएं और जिम्मेदारियाँ

एजेंट	नियम और जिम्मेदारियाँ
उत्पादक सामग्री आपूर्तिकर्ता	इनपुट आपूर्तिकर्ता वे होते हैं जो उत्पादन प्रक्रिया के लिए सभी आवश्यक सामग्री या इनपुट की आपूर्ति करते हैं। रेशमकीट के अंडे अर्जुन और आसन के पौधे और विभिन्न उपकरण और आवश्यक उपकरण प्रमुख इनपुट हैं। तसर रेशमकीट के अंडे पूरी तरह से सरकार/संस्था द्वारा उत्पादित और सभी उत्पादकों को वितरित किए जाते हैं। अर्जुन और आसन पौधों के उत्पादन के लिए पौधे स्थानीय रूप से नर्सरी में उपलब्ध हैं।
उत्पादक	उत्पादक वे लोग होते हैं जो रेशमकीट के अंडों को तब तक पालते हैं जब तक कि उससे कोसा नहीं बन जाता। वे कोसा को प्राथमिक प्रसंस्करण के लिए आगे भेजते हैं। यहाँ के ज़्यादातर उत्पादक छोटे पैमाने के हैं। वे कोसा बनाते हैं और उसे प्राथमिक प्रसंस्करण के लिए भेजते हैं।
संग्राहक/प्राथमिक प्रसंस्करणकर्ता	वे मूल्य श्रृंखला में ऐसे अभिकर्ता हैं जो उत्पादकों द्वारा उत्पादित ताजा कोसा को आगे की प्रक्रिया के लिए इकट्ठा करते हैं। वे ताजा कोसा को रील करके प्रसंस्करण का प्राथमिक स्तर पूरा करते हैं जिससे रेशम का उत्पादन होता है जिसे कुछ महीनों तक संग्रहीत किया जाता है और फिर द्वितीयक प्रसंस्करण सुविधाओं को बेच दिया जाता है। कोसा से रेशम का उत्पादन करने के लिए प्रोसेसर द्वारा डीफ्लॉसिंग, स्पिनिंग जैसे विभिन्न ऑपरेशन किए जाते हैं।
निर्यातकों	निर्यातक वे लोग होते हैं जो रेशमी कपड़ों या उत्पादों के निर्यात के लिए जिम्मेदार होते हैं।

तसर रेशम उत्पादन उद्योग में गतिविधियों का प्रवाह चार्ट :

तसर उद्योग में मूल्य श्रृंखला की समस्याएँ : के.त.अ. व प्र.सं., राँची द्वारा तसर उत्पादन के क्षेत्र में 60 वर्षों से अधिक समय तक शोध किया गया है। मूल्य श्रृंखला बीज उत्पादन पालन तकनीक, प्रशिक्षण और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण से सम्बन्धित कई समस्याओं का समाधान किया गया है। फिर भी कई समस्याएँ अभी भी उद्योग के विकास को रोक रही हैं। तसर रेशम उद्योग की मूल्य श्रृंखला की कुछ महत्वपूर्ण समस्याएँ सूचीबद्ध हैं :

- विकास एजेंसियों के बीच कम समन्वय।
- विभिन्न क्षेत्रों में जलापूर्ति की कमी।
- विस्तार कार्यक्रमों की अपर्याप्त पहुंच और अनुवर्ती कार्रवाई।
- विपणन में विशेषज्ञता की कम उपलब्धता।
- उत्पादन की मात्रा और गुणवत्ता में भिन्नता और असंगति।
- गुणवत्ता प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी में बहुत कम शोध।

तसर रेशम कीटपालकों के सामने आने वाली समस्याएँ :

- अपरिपक्व रेशम कीटों की मृत्यु।
- अन्य गतिविधियों में व्यस्त होने के कारण वह अपना समय पूरी तरह से पालन-पोषण में नहीं लगा पाती।
- पालन-पोषण के लिए जगह की कमी।
- स्थानीय लोगों को बेचा जाने वाला कोसा बिचौलियों को बेचे जाने वाले कोसा से कम दर पर मिलता है।

तसर रेशम के कताई करने वालों के सामने आने वाली समस्याएं :

पहली महत्वपूर्ण समस्याएँ	दूसरी महत्वपूर्ण समस्याएँ
स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ (पीठ दर्द, कंधे का दर्द, आँख की समस्या)	पैसे की जल्दी में कीटपालकों को अपने कोसा बिचौलियों को बेचने पड़ते हैं
बिचौलियों की वजह से कोसा की मात्रा कम हो गई	निम्न-स्तरीय उत्पादों का सीमित बाजार छोटा होता जा रहा है

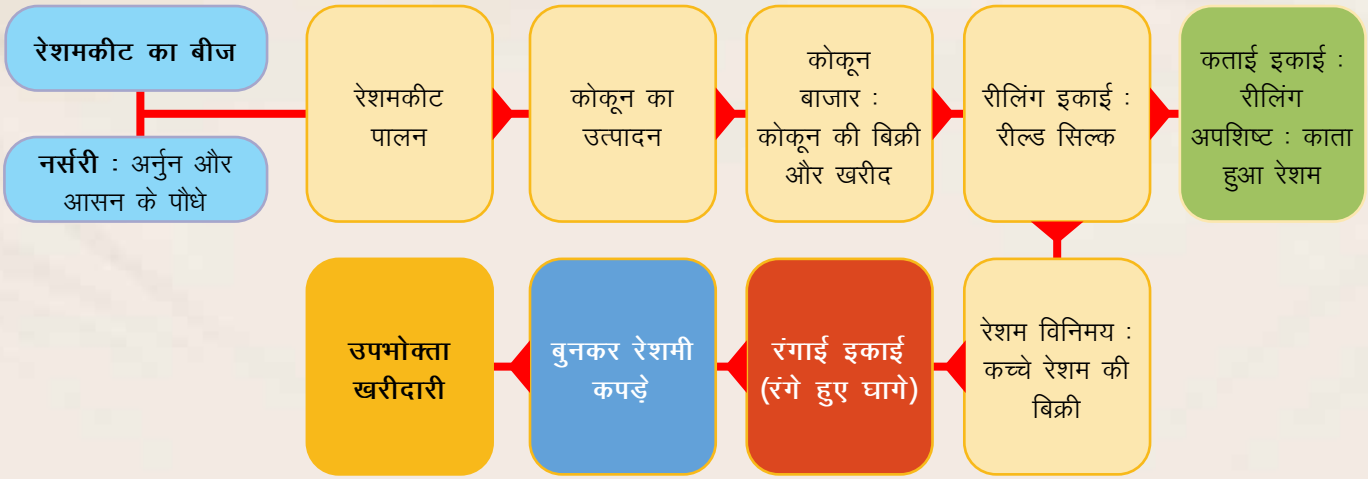

बुनकरों के सामने आने वाली समस्याएँ :

सर्वेक्षण से पता चला कि एक निश्चित प्रतिष्ठान में कार्यरत् बुनकरों की संख्या एक प्रतिष्ठान से दूसरे प्रतिष्ठान में भिन्न-भिन्न होती है। यह एक हथकरघे पर कार्यरत् एक बुनकर से लेकर सैकड़ों हथकरघों पर कार्यरत् सैकड़ों बुनकरों तक हो सकती है।

पहली महत्वपूर्ण समस्याएँ	दूसरी महत्वपूर्ण समस्याएँ
काम को गति देने के लिए जैक्वार्ड मशीन की आवश्यकता है	धागा खरीदने के लिए वित्तीय सहायता
कोई बुनाई शेड नहीं	आँख की समस्या

निष्कर्ष और सिफारिशें : तसर रेशम उद्योग के मूल्य श्रृंखला विश्लेषण पर अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि यह एक आवश्यक प्रक्रिया है जो संगठन को मूल्य-निर्माण गतिविधियों पर ध्यान केन्द्रित करने और बेकार गतिविधियों को खत्म करने में मदद करती है। यह संगठन को अधिक लाभ पहुँचाने में भी मदद करता है। इस मूल्य श्रृंखला विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य लाभ में वृद्धि करना है। इस विश्लेषण के माध्यम से ताकत और योग्यता हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण पहलुओं की पहचान की गई है।

» लार्वा की लागत में अंतर के मुद्दे को हल करने के लिए संभावित हस्तक्षेप यह है कि कीटपालकों को स्थानीय या पड़ोसी गाँवों से रेशमकीट लार्वा खरीदने की अनुमति दी जाए क्योंकि लार्वा सरकार से खरीदे गए लार्वा की तुलना में बेहतर रेशमकीट पैदा करता है।

» कीटपालक और धागाकार आपस में कोसा खरीदने और बेचने के लिए एक निश्चित दर पर समझौता कर सकते हैं जिससे किसी भी पक्ष पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

» रंगों की विविधता की भारी कमी है। रंगाई करने वाले मुख्य रूप से लाल, पीला, हरा, काला और सफ़ेद रंग ही बना पाते हैं। रंगाई करने वालों के लिए और अधिक रंग विकसित या उत्पादित किए जा सकते हैं। रंगाई के क्षेत्र में अनुभवी विशेषज्ञों को बुलाकर और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके ऐसा किया जा सकता है।

» तसर कपड़े को अन्य उत्पादों में विविधता प्रदान की जा सकती है जिससे अधिक मौद्रिक मूल्य प्राप्त होगा।

» झारखंड और छत्तीसगढ़ में युवाओं के लिए SHG के गठन से ब्रांडिंग की समस्या हल हो जाएगी। फिनिशिंग और पैकेजिंग में सुधार किया जा सकता है। SHG अपने उत्पादों पर लेबल भी लगा सकते हैं।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि मूल्य श्रृंखला के अभिकर्ता और तसर रेशम उद्योग के लाभार्थी अच्छी तरह से सुनिश्चित और कवर किए गए हैं, एक ऐसा मॉडल जो उपभोक्ताओं के लिए एक स्वतंत्र और निष्पक्ष बाजार को बनाए रखते हुए उनकी ज़रूरतों और माँगों को पूरा करता है, बहुत ज़रूरी है। प्रस्तावित मॉडल में सभी कमियों को शामिल किया जाना चाहिए ताकि समस्याओं का समाधान किया जा सके और ऐसे समाधान खोजे जा सकें जो किसी का शोषण न करें।

*वैज्ञानिक-बी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

बिना मातृभाषा के हिन्दी साहित्य भी वीरान रहेगा,
हिन्दी रहेगी तभी तो हिन्दुतान रहेगा।

तसर भोज्य पौधे के निष्पत्रक पीड़कों के भक्षण का प्रक्रिया और उससे बनने वाली पत्तियों में आकृति का विश्लेषण

अम्पी भगत*, हनमंत गडाद, जितेंद्र सिंह, विशाल मित्तल एवं एन.बी. चौधरी

परिचय : रेशम उत्पादन एक कृषि-आधारित कुटीर उद्योग है जिसमें खाद्य पौधों की खेती, रेशम के कीड़ों का पालन, गुणवत्ता वाले रेशम के धागे के लिए कोसा के धागाकरण और कताई शामिल है। खाद्य पौधा रेशम उत्पादन उद्योग में एक प्राथमिक कारक है। गुणवत्तापूर्ण पत्तियों वाले भोज्य पौधे की उपलब्धता रेशमकीट के पालन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। रेशमकीट के लार्वा द्वारा ग्रहण किए गए भोजन की मात्रा उसके गुणवत्ता, विकास दर, लार्वा की अवधि, जीवित रहने की दर और प्रजनन क्षमता जैसे विभिन्न मापदंडों को प्रभावित करती है । हालांकि रेशमकीट के अलावा कई अन्य कीट इन पौधों को खाते हैं और पत्तियों को नुकसान पहुंचाते हैं। इन सभी पत्तियों को नष्ट करने वाले तत्वों के कारण रेशमकीट पालन के लिए पत्तियों की कमी हो जाती जो अप्रत्यक्ष रूप से रेशम उत्पादन को प्रभावित करती है। इन भोज्य पौधों पर जो भी कीट पत्तियों का सेवन करती है उसमें वो अपना पत्तियों को सेवन करने का एक अनोखा छाप छोड़ती हैं (पत्तियों के बीचों-बीच मैं छेद, सतह को खुरोधना, कंकालीकरण और गैलिंग) जिससे एक विशेष आकृति बन जाती है। हर एक पीड़क की आकृति बनाने का तरीका अलग होता है। इन विभिन्न कीटों द्वारा बनाए गए आकृति की जानकारी होने से हमें भोज्य पौधों के पीड़कों की गतिविधि को समझने में मदद मिलेगी। इस पृष्ठभूमि के साथ विभिन्न भोज्य पौधों के कीटों से होने वाले नुकसान से पत्तियों में बनने वाले आकृति की जानकारी नीचे संक्षेप में चर्चा की गई है।

1. **गॉल कीट :**

गॉल कीट पौधों में असामान्य वृद्धि (गॉल) पैदा करने वाले कीट होते हैं जो पौधों के कोमल पत्तियों मैं अंडा देती है जिससे कुछ दिनों के बाद नीमपस बाहर निकलती है जो रस चूसकर अपना भोजन लेती हैं। साथ ही रासायनिक स्राव छोड़ती हैं जिसके कारण छोटे-छोटे दाने पत्तियों मैं आ जाती हैं (चित्र-1) और वयस्क जब अपना जीवन-चक्र पूरा करके बाहर आता है तो पत्तियाँ सकत और जाले का निशान की तरह दिखने लगती है।

चित्र-1 : गॉल कीट और उसके द्वारा पत्तियों में असामान्य छोटे-छोटे दाने

2. **जमपिंग लाइस :**

यह एक छोटी से पीली मक्खी की तरह होती है जिसे मेगा ट्रायोजा (Mega triozahirsuta) कहते हैं। यह आम तौर पर अपना जीवन-चक्र पूरा करने के लिए तसर भोज्य पौधा को चुनती है जिसमें वो अपना अंडा देती और बाद में इनके निम्मस द्वारा समूह मैं पत्तियों से भोजन लेती हैं जिसके कारण पत्तियां हल्की गुलाबी और मुड़कर ट्यूमर जैसे बन जाती हैं (चित्र-2)। पत्तियों पर हनीड्यू (चिपचिपा पदार्थ) और कालिख जैसी फफूंद के साथ-साथ गॉल या लेरप्स (मोम की परत) भी देखने को मिलती हैं।

चित्र-2 : जमपिंग लाइस और उसके द्वारा पत्तियों में ट्यूमर का रूप

3. **मई-जून बीटल :** ये भृंग मॉनसून की बारिश के तुरंत बाद निकलते हैं इसलिए इसका नाम मई-जून भृंग पड़ा, मई-जून बीटल पत्तियों में छिद्र करके नुकसान पहुँचाते हैं। यह पत्तियों के मध्य क्षेत्र में गोलाकार छेद कर भोज्य पौधे के पत्ती की परत का पोषण लेता है (चित्र-3)।

चित्र-3 : मई-जून बीटल और उसके द्वारा पत्तियों में गोलाकार छेद

4. **लाल बीटल :** लाल बीटल का प्रकोप मार्च से अक्टूबर तक दर्ज किया गया। जहाँ मई-जून माह में यह चरम सीमा मैं रहता है। यह तसर पौधे की पत्तियों के हिस्सों की सतह को खरोंच या कुतर देता है (चित्र-4)। जो महत्वपूर्ण सेलुलर संरचनाओं को नष्ट कर देता हैं जिससे पौधों मैं प्रकाश संश्लेषण और पोषक तत्वों के अवशोषण के अन्य तरीकों को जारी रखने की क्षमता मैं बाधा आने लगती है।

चित्र-4 : लाल बीटल और उसके द्वारा पत्तियों में खरोंचने का निशान

5. **ऐश वेविल :** ऐश वेविल का प्रकोप जून से नवम्बर तक देखने को मिलती है। वयस्क अनियत आहार प्रकृति प्रदर्शित करता है। पत्तियों के किनारे कटे-फटे या नोकदार दिखाई देते हैं जिससे पत्ती ताड़ की आकृति जैसी दिखती है (चित्र-5)।

चित्र-5 : ऐश वेविल और उसके द्वारा पत्तियों में ताड़ की आकृति

6. **वेपोरर टस्सॉक लार्वा :** टस्सॉक लार्वा या कैटरपिलर को उनके बालों वाले शरीर से आसानी से पहचाना जा सकता है जिनमें अक्सर बालों जैसे विशिष्ट गुच्छे होते हैं जो कम ग्रसन में 8-10% और गंभीर ग्रसन 70-90% तसर भोज्य पौधे के पत्तियों को नुकसान पहुंचाता है। यह कैटरपिलर लाल, काले और भूरे रंग के होते हैं। अनियमित तरीकों से पत्तियों को छल्लेदार करते हुए अपना भोजन लेती हैं (चित्र-6)।

चित्र-6 : वेपोरर टस्सॉक लार्वा और उसके द्वारा पर्ण पटल पर छल्लेदार रूप

7. **लीफ रोलिंग वीविल :** यह वीविल दो तरीकों से पत्तियों को नुकसान पहुँचाती है। भोजन के लिए वो पत्तियों की ऊपरी परत को खरोंचती है (चित्र-7)। दूसरा अंडे देने के लिए, अंडे को पत्तियों के सिरे के पास रख देती है। फिर पत्ती को मध्य शिरा के साथ मोड़ा जाता है ताकि एक साफ पत्ती के बिस्तर (निडस) में लपेटा जाता है (चित्र-7) जिसमें अंडा केंद्र के पास होता है। लार्वा अंडे से निकलते हैं और पत्तियों से बनी सिलेंडर के अंदर पत्ती के ऊत्तकों को खाता है और अंततः रोल के अंदर प्यूपा बन जाता है। कुछ समय बाद लीफ रोलिंग वीविल की एक नई पीढ़ी अपना जीवन-चक्र पूरा करने के लिए निकलती है।

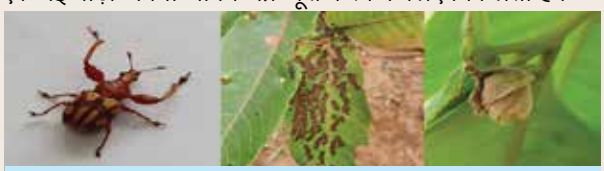

चित्र-7 : लीफ रोलिंग वीविल और उसके द्वारा पत्तों को खरोंचना और मोड़ने (निडस) का स्वरूप

8. **हैरी कैटरपिलर :** यह कैटरपिलर मुख्यत: अर्जुन के पत्तियों को क्षति पहुंचाता है। यह पत्ती की शिराओं के बीच पत्ती के ऊत्तकों को बाह्य त्वचीय परत को खुरच कर नुकसान पहुंचाता है जिससे पत्ती खुरदुरी हो जाती है और पत्ती का संरचनात्मक रूप "कंकाल" सी हो जाती है (चित्र-8)।

चित्र-8 : हैरी कैटरपिलर (सेलेपा सेल्टिस) और उसके द्वारा पत्तियों में कंकालीकरण रूप

9. **लीफ वेबर :** लीफ वेबर जिसे "पत्ती लपेटक" या "जाला कीट" भी कहा जाता है, एक ऐसा कीट है जो पत्तियों को आपस में जोड़कर जाल बनाता है और उन्हें नुकसान पहुंचाता है। लीफ वेबर शुरुआत में पत्तियों की सतह को खुरचकर खाते हैं। बाद में वे कोमल पत्तियों का जाल (चित्र-9) बनाते हैं जिसमें वो अपना जीवन-चक्र पूरा करते हैं। यह जाल उसके कई अन्य शत्रु से बचाने मैं मदद करती है।

चित्र-9 : लीफ वेबर और उसके द्वारा जाल (रेशमी धागों से पत्तियों को बुनना)

10. **लीफ माइनर :**

तसर भोज्य पौधे को दो प्रकार के लीफ माइनर से क्षति पहुंचता है। इसे पत्ती खनिक भी कहा जाता है। एक जो पत्तियों ऊत्तक परतों में सुरंग की आकार बनाता और भोजन करता है। दूसरा एक सफेद पतली परत (चित्र-10) की आकार पत्तियों में बनाता है। लीफ़ माइनर की वजह से पत्तियों पर सफ़ेद धारियां बन जाती हैं और पौधों को प्रकाश संश्लेषण करने में दिक्कत आती है।

चित्र-10 : लीफ माइनर और उसके द्वारा पत्तियों में सुरंग तथा सफेद परत की आकार

11. **बैग वर्म :** बैग वर्म एक प्रकार का पतंगा होता है जिसका लार्वा पेड़ों की पत्तियों और शाखाओं पर एक थैली बनाकर रहता है। लार्वा पत्तियों में हरित को खुरोंच देता है और अनियमित आकार के छेद कर देता है (चित्र-11)। बैग वर्म कैटरपिलर अपना पूरा जीवन रेशम और पत्तियों के छलावरण वाले टुकड़ों से बने एक सख्त सुरक्षात्मक आवरण के अंदर बिताता है। प्रत्येक कैटरपिलर अपना खुद का थैला बनाता है जिसे वह भोजन करते समय अपने साथ लेकर चलता है।

चित्र-11 : बैग वर्म द्वारा पत्तियों पर छोटे छेद साथ में पत्तियों के नीचे रेशमी स्टिक स्ट्रैंड बैग

*जेआरएफ, के.त.अ.व प्र.सं., राँची

तसर कीटपालन में ब्रशिंग डेट का पोस्ट कोकून पैरामीटर पर प्रभाव

शाज़िया मुमताज*, जितेंद्र सिंह, आशु कुमार, शेखर कुमार और एन.बी. चौधरी

प्रस्तावना : तसर कीटपालन भारत के दस राज्यों में आदिवासियों तथा कीटपालकों का प्रमुख आय का साधन है। बदलती जलवायु एवं चरम मौसम की घटनाएँ के कारण तसर उत्पदान बहुत तेजी से घट रहा है जिसके कारण तसर उत्पादन तथा कीटपालकों की आय में भारी कमी आ रही है जिसके कारण कीटपालक धीरे-धीरे तसर उत्पादन का कार्य छोड़ना शुरू कर दिए हैं। हम सभी जानते हैं कि तसर किसान/कीटपालक बहुत गरीब होते हैं। अतः तसर उत्पादन में अतिरिक्त धन खर्च नहीं कर सकते। इस स्थिति में ब्रशिंग की तारीख तसर रेशम उत्पादन प्रबंधन में एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां जल्दी और देर से ठंड की समस्या है। ब्रशिंग की तारीख का कोसा उत्पादन, कोसा का वजन, खोल का वजन, रेशम अनुपात प्रतिशत पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है इसलिए उचित ब्रशिंग की तारीख जलवायु कारकों जैसे तापमान और आर्द्रता के इष्टतम् उपयोग के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और यह पालन अवधि के साथ भी संगत है। तसर रेशम उत्पादन न केवल खराब मौसम के लिए प्रतिक्रिया करता है जो रोपण की तारीख को देरी करता है बल्कि उन समयों के लिए भी जब मौसम अनुकूल होता है इसलिए क्षेत्रीय स्तर पर ब्रशिंग की तारीख का चयन (रेशम कीड़ा वृद्धि और विकास के लिए उत्तम मौसम की स्थिति) न केवल कोसा की मात्रा और गुणवत्ता को बढ़ाता है बल्कि तसर रेशम के कीड़े पर कीट संक्रमण को भी कम करता है। डाबा बिवोल्टाइन (DBV) और डाबा त्रिवोल्टाइन (DTV) के बीच मुख्य अंतर उन पीढ़ियों या जैविक चक्रों में है जो ये रेशम कीड़े एक वर्ष में पूरा करते हैं। DBV रेशमकीट प्रति वर्ष दो जीवन- चक्र पूरा करते हैं जबकि DTV रेशम कीड़ा तीन जीवन-चक्र पूरा करता है। निम्नलिखित पोस्ट-कोकून पैरामीटर की जांच कर तुलनात्मक अध्ययन किया गया जैसे कोसा आकार, कोसा वजन, शेल वजन, शेल अनुपात, फिलामेंट लम्बाई, फिलामेंट डेनियर, नॉन-ब्रोकन फिलामेंट लम्बाई (NBFL), कच्चे रेशम की रिकवरी, रील करने की क्षमता, उबालने पर हानि और 1 किलोग्राम कच्चे रेशम का उत्पादन करने के लिए आवश्यक कोसों की संख्या। यह अध्ययन BV के तीन अलग-अलग ब्रशिंग डेट्स में किया गया।

सामग्री और विधियाँ : ब्रशिंग डेट के माध्यम से कीटपालन के दौरान विभिन्न मौसम तसर कीट को दिया जाता है। किस मौसम (ब्रशिंग डेट) में तसर कोसा का उत्पादन अधिक तथा तसर रेशमकीट को हानि पहुँचाने वाले कीट एवं रोगों की संख्या कम पाई गई, इस आधार पर उस क्षेत्र के लिए अनुकूल ब्रशिंग डेट का चयन होता है।

प्रयोग : अनुकूल ब्रशिंग डेट का चयन हेतु केन्द्रीय तसर अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्रक्षेत्र में अलग-अलग समय पर द्वितीय फसल में 5 रो.मु.च. का ब्रशिंग अर्जुन के पौधों पर किया गया।

ब्रशिंग डेट	कोसा/रो.मु.च.
T1= 22 सितम्बर	60
T2= 27 सितम्बर	40
T3= 02 अक्टूबर	30

प्रस्फुटन

ब्रशिंग

लार्वा

कोसा

चित्र सं.-1 : द्वितीय फसल में तसर लार्वा का अर्जुन के पौधों पर ब्रशिंग से कोसा उत्पादन

धागों का वजन करना

धागाकरण करना

धागा

वेस्ट

चित्र सं.2 : पोस्ट कोकून पैरामीटर का अध्ययन

अवलोकन की विधि : निम्नलिखित मापदंडों पर अवलोकन किया गया जैसे कि कोसा का वजन और शेल का वजन रिकॉर्ड किया गया तथा विकास पैरामीटर भी रिकॉर्ड किए गए। इस विश्लेषण के लिए दस यादृच्छिक रूप से चयनित तसर रेशमकीट कोसा चुने गए।

एकल कोसा का वजन (ग्राम) : दस कोसा चुने गए और औसत कोसा वजन (ग्राम) लिया गया। इलेक्ट्रॉनिक संतुलन का उपयोग करके 10 यादृच्छिक रूप से चुने गए कोसा लिए गए और उनका वजन किया गया। वजन ग्राम में व्यक्त किया गया।

एकल कोकून शैल वजन (जी) : 10 कोसा में से प्रत्येक के शैल वजन (जी) की गणना की गई, फ्लॉस और प्यूपा को हटाने के बाद इलेक्ट्रॉनिक संतुलन का उपयोग करके तौला गया। प्रत्येक प्रतिकृति के लिए यादृच्छिक रूप से दस कोसा शैल लिए गए।

एकल कोसा फिलामेंट मूल्यांकन : 10 कोसा के दूसरे समूह का परीक्षण फिलामेंट लम्बाई, एनबीएफएल (गैर टूटी हुई फिलामेंट लम्बाई) और फिलामेंट डेनियर के लिए किया गया। इनका परीक्षण करने के लिए पैरामीटर कोसा को तसर कोसा को पकाने हेतु संस्थान द्वारा विकसित विधि का उपयोग करके पकाया गया। कोसा को एक जाल कपड़े में इकट्ठा किया गया और उसके बाद इसे 6 ग्राम/लीटर वाशिंग सोडा और 5 ग्राम/लीटर बेकिंग सोडा के साथ बंद ढक्कन में 30 मिनट तक उबाला गया। उबालने के बाद कोसा को उसी स्थान में 25 मिनट तक भाप दी गई, इसे पानी के स्तर के ऊपर एक स्टैंड पर रखा गया। खाना पकाने के बाद कोसा को बाहर निकाला गया और ठंडा होने के लिए छोड़ दिया गया और व्यक्तिगत रूप से डिफ्लॉस्ड किया गया। डिफ्लॉसिंग के बाद व्यक्तिगत कोसा के तंतु एपप्रूवेट मशीन पर लपेटे गए, जहाँ व्यक्तिगत कोसा के लिए घूर्णनों की संख्या और टूटने की संख्या दर्ज की गई। कोसा से तंतु के पूरी तरह से अनवाइंड होने के बाद, लिपटे हुए तंतु की परत को हटा दिया गया और सूखने के लिए रखा गया। इस तंतु का वजन इलेक्ट्रॉनिक वजन संतुलन का उपयोग करके दर्ज किया गया और निम्नलिखित पैरामीटर नीचे दिए गए सूत्रों का उपयोग करके गणना की गई।

उबालने से होने वाला नुकसान (%) : यह कोसा पकाने की प्रक्रिया के दौरान कोसा के खोल के वजन का नुकसान है, जो मुख्य रूप से खाना पकाने के स्थान में सेरीसिन के घुलने के कारण होता है। उबालने से होने वाला नुकसान (%) = कोसा पकाने से पहले का खोल का वजन –कोसा पकाने के बाद का खोल का वजन) x 100 / कोसा पकाने से पहले का खोल का वजन।

तंतु की लम्बाई : यह कोसा शेल में रेशम तंतु की कुल लम्बाई है जिसे एप्प्रूवेट मशीन पर लपेटा गया था। मशीन का परिधि 1.125 मीटर है। तंतु की लम्बाई कार्यभार, उत्पादन की दर, रेशम के धागे की समानता और आउटपुट के डायनामोमेट्रिक गुणों को निर्धारित करती है।

एन बी एफ एल : नॉन ब्रोकन फिलामेंट लम्बाई वह रेशमी फिलामेंट की लम्बाई है जो कोसा से बिना टूटे प्राप्त होती है। यह एक बहुत महत्वपूर्ण पैरामीटर है जो प्रक्रिया की धागाकरण गति, दक्षता और उत्पादकता को निर्धारित करता है।

एनबीएफएल = फिलामेंट लम्बाई 1 + टूटने की संख्या

फिलामेंट डेनियर : यह कोसा से प्राप्त रेशम के फिलामेंट की बारीकी और मोटाई को मापता है। इसे 9000 मीटर लम्बे फिलामेंट का वजन ग्राम में परिभाषित किया जाता है। यह उस बुनाई की बारीकी की सीमा को निर्धारित करता है जो किसी विशेष फिलामेंट से बनाई जा सकती है क्योंकि यार्न डेनियर की सीमा व्यक्तिगत फिलामेंट डेनियर पर निर्भर करती है। जितना कम डेनियर होगा, उतना ही बारीक फिलामेंट होगा। डेनियर = फिलामेंट का वजन (ग्राम में) x 9000 फिलामेंट की लम्बाई (मीटर में)।

धागाकरण प्रदर्शन : 60 कोसा को पेडंकल काटने के बाद पकाने के लिए लिया गया। कोसा को सूखे के तसर कोसा पकाने की विधि का उपयोग करके पकाया गया। कोसा पकाने के बाद व्यक्तिगत कोसा को डिफ्लॉस्ड किया गया और धागाकरण प्रदर्शन को MRTM धागाकरण मशीन पर परीक्षण किया गया। जहाँ 8 कोसा के तंतु को एक साथ धागे के रूप में रील किया गया। टूटने की संख्या का अवलोकन किया गया और मैनुअल रूप से रिकॉर्ड किया गया। डिफ्लॉसिंग कचरा, पेलाडे कचरा और बने धागे को अलग रखा गया। इन सभी को सुखाने के बाद इलेक्ट्रॉनिक वजन संतुलन का उपयोग करके तौला गया। नीचे उल्लेखित विभिन्न मानकों की गणना इन डेटा के साथ की गई।

रीलैबिलिटी (%) : यह उस आसानी को दर्शाता है जिसके साथ फिलामेंट को कोसा से बाहर निकाला जा सकता है। यह धागाकरण के दौरान ब्रेक की संख्या पर निर्भर करता है। ब्रेक जितने अधिक होंगे, रीलैबिलिटी उतनी ही कम होगी। रीलैबिलिटी = रीलिंग के लिए लिये गए कुल कोसों की संख्या x 100 कुल कास्टिंग की संख्या कुल कास्टिंग की संख्या = लिए गए कोसों की संख्या + ब्रेक की संख्या 1 किलोग्राम कच्चे रेशम का उत्पादन करने के लिए आवश्यक कोसों की संख्या। यह कोसों की उत्पादकता का माप है जो कई कारकों जैसे शेल वजन, उबालने का नुकसान, फिलामेंट की लम्बाई, एन बी एफ एल, रीलैबिलिटी और कच्चे रेशम की वसूली पर निर्भर करता है।

1 किलोग्राम कच्चे रेशम के उत्पादन के लिए आवश्यक कोसा की संख्या : यह कोसा की उत्पादकता का माप है जो कई कारकों पर निर्भर करता है जैसे कि शेल का वजन, उबालने का नुकसान, फिलामेंट की लम्बाई, एन बी एफ एल, रीलाबिलिटी और कच्चे रेशम की वसूली। 1 किलोग्राम कच्चे रेशम के लिए आवश्यक कोसा की संख्या = लिए गए कोसा की संख्या x 1000 / उत्पादित कच्चे रेशम का वजन (ग्राम में)।

परिणाम : समय पर ब्रशिंग करने से कोसा की विशेषता जैसे कोसा भार, शेल भार तथा सिल्क रेसियो अच्छा मिलता है जबकि देर से ब्रशिंग करने से उक्त विशेषता में कमी देखने को मिलता है। एकल कोसा धागाकरण विशेषताएँ जैसे औसत फिलामेंट लम्बाई, एन बी एफ़ एल देर से ब्रशिंग करने पर घटता है जबकि डेनियर (ग्राम /9000 मीटर) में वृद्धि देखने को मिला। धागाकरण प्रदर्शन जैसे रीलेबिलिटी, कच्चे रेशम की रिकवरी यील्ड /1000 कोसा देर से ब्रशिंग करने से घटता है जबकि वेस्ट % बढ़ता है।

तालिका सं.1 : ब्रशिंग डेट का पोस्ट कोकून पैरामीटर्स पर प्रभाव

पोस्ट कोकून पैरामीटर्स	इकाई	T1 (22 सितम्बर)	T2 (27 सितम्बर)	T3 (02 अक्टूबर)
कोसा की विशेषताएं				
कोसा भार	ग्राम	13.62	10.27	8.70
शेल भार	ग्राम	2.20	1.44	1.20
सिल्क रेसियो	%	16.13	14.00	13,79
एकल कोसा धागाकरण विशेषताएँ				
औसत फिलामेंट लम्बाई	मीटर	997.54	805.39	720.40
एन बी एफ़ एल	मीटर	223.10	182.42	160.45
डेनियर	ग्राम/9000 मीटर	10.26	11.07	12.50
धागाकरण प्रदर्शन				
रीलेबिलिटी	%	29.53	24.31	20.30
कच्चे रेशम की रिकवरी	%	64.80	57.05	48.60
यील्ड/1000 कोसा	ग्राम	933.18	777.50	702.40
वेस्ट	%	35.20	42.95	55.00

निष्कर्ष : उचित समय पर तसर लार्वा का ब्रशिंग करके जहाँ एक ओर किसान तसर का उत्पादन एवं आय में वृद्धि करते हैं वहीं दूसरी ओर पोस्ट कोकून विशेषताएं भी अच्छा पाया जाता है। इस तकनीक को किसान आसानी से अपना सकते हैं क्योंकि इसमें कोई अतिरिक्त लागत नहीं लगती है तथा यह पर्यावरण अनुकूल है।

*परियोजना सहायक, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

महिलाओं के लिए तसर रेशम उद्योग में रोजगार की संभावनाएँ

नीरज शर्मा*, राहुल कुमार, अरुणा रानी, डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय एवं डॉ. एन. बी.चौधरी

परिचय : भारत में तसर रेशम उद्योग एक महत्वपूर्ण ग्रामीण उद्योग है जो 3.5 लाख लोगों को रोजगार प्रदान करता है। यह उद्योग विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के लिए आजीविका का एक सशक्त माध्यम बन चुका है। महिलाएं इस उद्योग में कीटपालन, धागा निकालने, बुनाई, रंगाई और विपणन जैसी विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। तसर रेशम प्राकृतिक रूप से उपलब्ध एक विशेष प्रकार का रेशम है जिसे मुख्य रूप से झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और बिहार जैसे राज्यों में उत्पादित किया जाता है। यह उद्योग महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता और आर्थिक स्वतंत्रता के द्वार खोलता है।

महिलाओं की भूमिका : तसर रेशम उत्पादन की पूरी प्रक्रिया में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

1. **कीटपालन :** तसर रेशम उत्पादन के पहले चरण में महिलाएं अर्जुन और आसन जैसे पेड़ों पर तसर कीटों का पालन करती हैं। यह कार्य धैर्य और सतर्कता की मांग करता है जिसमें महिलाएं अत्यधिक निपुण होती हैं।

2. **धागा निकालना :** जब कोसा तैयार हो जाते हैं तो महिलाएं पारम्परिक और आधुनिक विधियों से उनसे रेशम का धागा निकालती हैं। यह कार्य सूक्ष्मता और धैर्य की मांग करता है।

3. **बुनाई और रंगाई :** महिलाएं पारम्परिक हथकरघा और आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके सुंदर और आकर्षक रेशमी वस्त्र तैयार करती हैं। प्राकृतिक रंगों से रंगाई का कार्य भी महिलाएं ही करती हैं।

तसर कीटपालन करती महिला

तसर कीटों का स्थानांतरण करती महिला

तसर कोसों का कटाई एवं साफ-सफाई करती हुई महिला

तसर कोसों का कटाई एवं साफ-सफाई के पश्चात् कोसों को तसर बीजागार में ले जाते हुए महिलाएं

तसर बीजागार में कोसों का रखरखाव करती महिलाएं

तसर कोसों से रेशम के धागे को निकालती हुई महिलाएं

तसर रेशम के धागे को प्रदर्शित करती हुई महिलाएं

तसर कीटपालन करने का प्रशिक्षण लेते हुए महिलाएं

चित्र-1 : रेशम उत्पादन में महिलाओं द्वारा निभाई जाने वाली विभिन्न भूमिकाएँ एवं जिम्मेदारियाँ।

4. **विपणन :** ग्रामीण महिलाओं द्वारा बनाए गए तसर रेशम उत्पादों को बाजार में बेचने के लिए स्वयं सहायता समूह (SHG) और सहकारी समितियों का सहयोग लिया जाता है। कई महिलाएं अब डिजिटल प्लेटफार्मों का भी उपयोग कर रही हैं।

सरकारी सहायता और प्रशिक्षण कार्यक्रम : महिलाओं को तसर रेशम उद्योग से जोड़ने और उनके कौशल को विकसित करने के लिए सरकार विभिन्न योजनाएं और प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रही है।

1. **केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (CTRTI) :** यह संस्थान महिलाओं को तसर रेशम उत्पादन की आधुनिक तकनीकों और वैज्ञानिक विधियों का प्रशिक्षण प्रदान करता है।
2. **महिला किसान सशक्तिकरण योजना (MKSP) :** इस योजना के तहत महिलाओं को तसर रेशम उद्योग में स्वरोजगार और वित्तीय सहायता दी जाती है।
3. **राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) :** इस मिशन के तहत ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार और छोटे उद्यम शुरू करने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

रोजगार के अवसर : तसर रेशम उद्योग महिलाओं के लिए अनेक प्रकार के रोजगार के अवसर प्रदान करता है।

» **स्वरोजगार :** महिलाएं अपने घर से ही तसर रेशम उत्पादन से जुड़ सकती हैं और आत्मनिर्भर बन सकती हैं।

» **हथकरघा उद्योग :** इस उद्योग में महिलाएं कारीगर के रूप में काम कर सकती हैं और बुनाई व डिजाइनिंग में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकती हैं।

» **ऑनलाइन और ऑफलाइन व्यापार :** डिजिटल युग में महिलाएं अपने उत्पादों को ऑनलाइन प्लेटफार्मों के माध्यम से बेचकर बेहतर आय अर्जित कर सकती हैं।

» **चुनौतियाँ और समाधान :** हालांकि तसर रेशम उद्योग महिलाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करता है लेकिन इस क्षेत्र में कई चुनौतियाँ भी हैं।

» **तकनीकी ज्ञान की कमी :** कई ग्रामीण महिलाओं को आधुनिक तकनीकों की जानकारी नहीं होती। समाधान के रूप में सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

» **वित्तीय सहायता की कठिनाई :** महिलाएं अक्सर आर्थिक तंगी के कारण इस उद्योग में आगे नहीं बढ़ पातीं। विभिन्न सरकारी योजनाओं और बैंक ऋण योजनाओं से इस समस्या का समाधान किया जा सकता है।

» **बाजार की अनिश्चितता :** कई बार बाजार में उत्पादों की मांग में उतार-चढ़ाव होता है। इसके लिए सहकारी समितियों और सरकारी विपणन सहायता का सहारा लिया जा सकता है।

तालिका-1: "तसर रेशम पालन में महिलाओं की भूमिका और उनके लाभ"

गतिविधि	महिलाओं की भूमिका	महिलाओं को होने वाले लाभ
तसर भोज्य पौधा नर्सरी विकास	- अर्जुन, आसन, साल आदि पौधों की रोपाई और देखभाल - ग्राफ्टिंग, सिंचाई, नर्सरी प्रबंधन	- रोजगार के अवसर - नर्सरी प्रबंधन में कौशल विकास - आर्थिक स्वतंत्रता - स्वयं सहायता समूह (SHG) बनाने का अवसर
तसर रेशम कीटपालन	- तसर रेशम कीटों का इनडोर एवं आउटडोर पालन - कोसा (गोटियां) एकत्र करना, सफाई करना, छंटाई करना - पालन संबंधी रिकर्ड का संधारण	- कोसा बिक्री से नियमित मौसमी आय - उद्यमिता कौशल में वृद्धि - ग्रामीण आजीविका में सुधार - छोटे स्तर पर उद्योग स्थापित करने के अवसर
तसर बीज (DFL) उत्पादन - केंद्रीय रेशम बीज अधिनियम के अंतर्गत	- माता कीट ब्रशिंग, अंडा देना, अंडा धोना - बीज कोसा का चयन, बीज उत्पादन एवं वैज्ञानिक तरीके से संरक्षण	- बीज उत्पादन केंद्रों में विशेष रोजगार - केंद्रीय रेशम बीज अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत होकर स्वत: बीज बनाकर बेचना - कुशल कार्य के लिए अधिक मजदूरी - ज्ञान एवं जिम्मेदारी से सशक्तिकरण
रेशम संस्थानों में भागीदारी	- प्रोजेक्ट असिस्टेंट के रूप में कार्य - सेरीकल्चर असिस्टेंट - जूनियर रिसर्च फेलो - वैज्ञानिक - शोध छात्र	- सेरीकल्चर क्षेत्र में व्यावसायिक कैरियर - उच्च शिक्षा एवं शोध के अवसर - वैज्ञानिक एवं विस्तार कार्यों में नेतृत्व की भूमिका - राष्ट्रीय रेशम उद्योग में योगदान

निष्कर्ष : तसर रेशम उद्योग महिलाओं के लिए रोजगार और स्वरोजगार के नए द्वार खोल रहा है। सरकार और विभिन्न संस्थानों के सहयोग से यह उद्योग महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रहा है। यदि महिलाओं को उचित तकनीकी प्रशिक्षण वित्तीय सहायता और बाजार उपलब्धता प्रदान की जाए तो वे इस उद्योग में और भी बेहतर प्रदर्शन कर सकती हैं। साथ ही आम जनता भी महिलाओं द्वारा उत्पादित तसर रेशम के वस्त्रों को अपनाकर उनके प्रयासों को समर्थन दे सकती है। यह उद्योग न केवल महिलाओं को सशक्त बना रहा है बल्कि भारतीय संस्कृति और कारीगरी को भी वैश्विक मंच पर पहचान दिला रहा है।

आभार : हम केन्द्रीय रेशम बोर्ड, केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, पिस्का नगड़ी, राँची के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहते हैं जिन्होंने केन्द्रीय रेशम बीज अधिनियम के तहत प्रदान की गई छात्रवृत्तियों एवं वित्तीय सहायता से हमें लाभान्वित किया। आपके इस सहयोग से न केवल हमारे अनुसंधान एवं अध्ययन को प्रोत्साहन मिला है बल्कि रेशम उत्पादन के क्षेत्र में हमारे कार्यों को एक नई दिशा मिली है। आपकी यह उदारता एवं समर्थन हमारे लिए अत्यंत प्रेरणादायक है और इससे हमें इस क्षेत्र में और अधिक समर्पण एवं उत्साह के साथ कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

*सेरीकल्चर सहायक, के.त.अ. व प्र.सं. , राँची।

शीतोष्ण (ओक) तसर गतिविधियों में नर्सरी लगाने एवं वृक्षारोपण तकनीक

ए.एस.वर्मा*,
बिंकदाकट्टी जे,
वी.सी.फुलोरिया
एवं एन.बी.चौधरी

परिचय : भारत में उष्णकटिबंधीय तसर और ओक तसर कल्चर का अभ्यास भारत में शहतूत की शुरुआत से पहले भी उष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण बेल्ट में प्राचीन काल से किया जाता रहा है। ओक तसर कल्चर में विशेष रूप से लहरदार वन क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी लोगों के लिए पर्याप्त आय सृजन का साधन है। भारतीय ओक तसर रेशम का उत्पादन गैर-शहतूती रेशमकीट, *एन्थीरिया प्रॉयली* जे द्वारा किया जाता है। ओक तसर रेशमकीट एक समशीतोष्ण प्रजाति है जो अरुणाचल प्रदेश, असम, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड राज्यों में पाए जाने वाले ओक के पेड़ जो क्वेरकस की विभिन्न प्रजातियों की पत्तियों को खाता है। जम्मू-काश्मीर, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड मे बीच परिवार फ़ैगेसी, ऑर्डर फागेल्स और जीनस क्वेरकस से सम्बन्धित ओक, ओक तसर रेशमकीट *एन्थीरिया प्रॉयली* जे का एकमात्र खाद्य पौधा है। आमतौर पर ओक कहे जाने वाले कई पौधे क्वेरकस प्रजाति के नहीं हैं। अफ़्रीकी ओक, ऑस्ट्रेलियन ओक, बुल ओक, जेरूसलम ओक, रिवर ओक, शी-ओक, सिल्की ओक, तस्मानियाई ओक, ट्यूलिप ओक, सिल्वर ओक आदि। क्वेरकस सबसे बड़ी फ़ैगेसी परिवार है जिसमें कुछ वर्गीकरणों में 400 से अधिक प्रजातियाँ शामिल हैं लेकिन कुछ वर्गीकरण उपचारों से यह संख्या घटकर 300 हो जाती है।

भारत में उपलब्ध महत्वपूर्ण और विभिन्न प्रकार के ओक खाद्य पौधों की प्रजातियाँ :

» क्वेरकस इंकाना या ल्यूकोट्राइकोफोरा
» क्वेरकस सेरेटा
» क्वेरकस सेमीकार्पिफोलिया
» क्वेरकस डियाल्वाटा
» क्वेरकस फ्लोरिबंडा
» क्वेरकस हिमालयना
» क्वेरकस ग्रिफ़िथी

इन खाद्य पौधों में क्वेरकस सेरेटा तेजी से बढ़ने वाली प्रजाति है और इसे ओक तसर रेशम कीटपालन गतिविधियों के लिए व्यावसायिक रूप से वृक्षारोपण के लिए अनुशंसित किया गया है।

क्वेरकस सेरेटा नर्सरी लगाने की तकनीक :

बीजों का चयन :

» अक्टूबर से नबम्बर माह के दौरान क्वेरकस सेरेटा के परिपक्व एवं स्वस्थ बीजों को इकट्ठा कर सुरक्षित रखने होते हैं।
» एक हेक्टेयर क्षेत्र में पौध उगाने के लिए लगभग 12 किलोग्राम बीज एकत्र करें।
» क्वेरकस सेरेटा नर्सरी उगाने के लिए केवल 2.0 ग्राम के आस-पास के स्वस्थ बीजों का चयन करें। एक किलो में लगभग 500 बीज होते हैं।
» क्वेरकस सेरेटा बीज का वजन लगभग 2 ग्राम और बीजों मे अंकुरण 50 से 60% होता है जिसके अनुसार बीजों को एकत्रित करें ताकि नर्सरी सही रूप से तैयार की जा सके।

नर्सरी तकनीक :

» नर्सरी तैयार करने का काम मार्च महीने से शुरू करें।
» बीजों के बाहरी कठोर आवरण को हटा दें।
» नर्सरी उगाने के लिए 4'x6' आकार का बिस्तर तैयार करें।
» सभी बीजों को पानी में डुबो दें और जो बीज पानी में तैर रहे हों उन्हें हटा दें एवं पानी में नीचे बैठने वाले बीजों को ही उपयोग मे लायें।
» क्वेरकस सेरेटा नर्सरी तैयार करने के लिये मार्च-अप्रैल माह मे बीजों को जूट के थैले मे रखकर 48-72 घण्टे तक पानी में डुबोकर रखें।
» पानी में भिगोये गये बीजों को छाया मे बनी बालू की क्यारी पर फैलायें और उन्हें भीगे हुए जूट के बोरे या कपडे से ढक दें। ढकने के बाद उसके ऊपर पतली परत में बालू या मिट्टी डालें और बीजों में अंकुरण होने तक पानी का छिड़काव करते रहें ताकि बीज सूखने न पाये सूखने से बीजों में अंकुरण कम होने की सम्भावना बनी रहेगी।
» क्वेरकस सेरेटा के बीज 15-20 दिनों के भीतर अंकुरित होने लगेंगे।
» अंकुरित बीजों को ढेर से अलग कर और क्यारी में बीज-से-बीज की दूरी पर 4 इंच और पंक्ति से पंक्ति की दूरी पर 6 इंच की दूरी पर बोयें।
» अंकुरित बीजों को 25x15 से.मी. पॉलिथीन बैग में भी बोया जा सकता है।
» अंकुरित बीज बोने के लिए पॉलिथीन बैग में 3:2:1 या 3:1:1 के अनुपात में खाद, मिट्टी और बालू का मिश्रण भरा होना चाहिए।
» अंकुरित बीजों को पॉलिथीन बैग में लगभग 1 ईंच गहराई में रखा जा सकता है और इस बात का ध्यान रखना होता है कि अंकुरित भाग ऊपरी तरफ रहे।
» क्वेरकस सेरेटा के अंकुरण को लगभग 3 से 4 महीने तक छाया में रखना चाहिए।
» पौध की उचित वृद्धि के लिए समय-समय पर पानी देना और निराई करना सुनिश्चित करें।
» पौध की शीघ्र वृद्धि के लिए 0.5% यूरिया का छिड़काव करें।
» 3 से 4 महीने मे क्वेरकस सेरेटा नर्सरी तैयार हो जाती है।

क्वेरकस सेरेटा वृक्षारोपण तकनीक :

» अप्रैल-मई महीने के दौरान (बरसात के मौसम से पहले) या दिसम्बर महीने (बरसात के मौसम के बाद) गड्ढों के बीच 2x2 मीटर या 3x3 मीटर की दूरी पर 1.5'x1.5'x1.5' आकार के गड्ढे तैयार करें।
» क्वेरकस सेरेटा के पौधे एक हेक्टेयर भूमि में 6x6 फीट पर पौधे-से-पौधे के की दूरी पर लगभग 3,000 पौधों को लगाया जा सकता है तथा वृक्षारोपण यदि 2x2 मीटर की दूरी पर करना है तो एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए लिए 2,500 पौधों की आवश्यकता होती है और 3x3 मीटर की दूरी पर वृक्षारोपण के लिए 1,100 पौधे लगाए जा सकते हैं।
» पौधों की बेहतर वृद्धि के लिए प्रत्येक फिट में 2 किलो गोबर की खाद और मिट्टी भरी जानी चाहिए। पौधों के रोपण के लिए न्यूनतम् 4 महीने पुराने अंकुरण और 12 से 15 ईंच लम्बे अंकुरण का चयन करें। वृक्षारोपण गतिविधियाँ जुलाई या दिसंबर महीने के दौरान की जानी

आवरण के साथ बीज | साफ बीज | तैरते हुए खराब बीज | पॉलिथीन बैग तैयार करना | अंकुरित बीज लगाना

चित्र-1 : क्वेरकस सेरेटा नर्सरी तैयार करने की तकनीक

पौधों का अंकुरण | तैयार पौधे | वृक्षारोपण हेतु तैयार गड्डे | वृक्षारोपण | रोपित पौधे

चित्र-2 : क्वेरकस सेरेटा वृक्ष रोपण तकनीक

चाहिए। प्रत्येक पौधे के चारों ओर 1.5 फीट की गोलायी तैयार करें। समय-समय पर निराई-गुड़ाई और सिंचाई का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है।

नर्सरी बेड से पौध उखाड़ने के बाद बिना किसी देरी के तुरन्त पौधारोपण का कार्य शुरू कर देना चाहिए। धूप वाले दिन या दोपहर के दौरान वृक्षारोपण गतिविधियाँ न करें। जहाँ तक संभव हो वृक्षारोपण के बाद पौधों में सिंचाई/पानी देने में देरी न करें।

पौधों की सीमित ऊंचाई बनाए रखने के लिए प्रत्येक वर्ष हल्की छंटाई आवश्यक है। छंटाई के बाद पौधों के स्वस्थ विकास के लिए रासायनिक उर्वरक अवश्य देना चाहिए। वृक्षारोपण गतिविधियों के दौरान निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए। वृक्षारोपण के दौरान न्यूनतम् आयु और कम लम्बाई वाले पौधों को नहीं लगाना चाहिए। वृक्षारोपण के 5-6 वर्षों के बाद और नवम्बर-दिसम्बर के महीने के दौरान ओक तसर कीटपालन गतिविधियों के लिए स्वस्थ पत्ती की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए वार्षिक छंटाई की जानी चाहिए। कीटपालन गतिविधियों के दौरान आसान रखरखाव के लिए पौधे की 5 से 6 फीट की ऊंचाई पर छंटाई करते रहें अन्यथा क्वेरकस सेरेटा के पौधे की ऊंचाई 80 से 90 फीट तक बढ़ सकती है। बाद में पौधे की उम्र बढने के साथ-साथ 3 से 4 शाखाओं को बढ़ने दिया जाए और अन्य शाखाओं को पौधे से हटा देना चाहिये।

निष्कर्ष : भारत में शीतोष्ण (ओक) तसर पालन गतिविधियों के लिए प्राकृतिक वनों में कई प्रकार के वाणिज्यिक ओक खाद्य पौधे उपलब्ध हैं जो क्वेरकस सेरेटा, क्वेरकस सेमीकार्पिफोलिया, क्वेरकस डिल्डाटा, क्वेरकस फ्लोरिबंडा, क्वेरकस हिमालयाना, क्वेरकस ग्रिफिथि और क्वेरकस ल्यूकोट्रिकोफोरा आदि। इन खाद्य पौधों में क्वेरकस सेरेटा तेजी से बढ़ने वाली प्रजाति है और इसे ओक तसर गतिविधियों के लिए व्यावसायिक वृक्षारोपण के लिए अनुशंसित किया गया है। नर्सरी उगाने की गतिविधियाँ शुरू करने से पहले क्वेरकस सेरेटा के बीज संग्रह करना एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। ओक प्रजाति को प्राकृतिक रूप से विकसित होने में लगभग 15 वर्ष से अधिक का समय लगता है लेकिन क्वेरकस सेरेटा प्रजाति के पौधे 5-6 साल में ही लग जाते हैं। ओक तसर कीटपालन हेतु क्वेरकस सेरेटा प्रजाति का पौधा रोपण कर लाभ उठाया जा सकता है और निश्चित रूप से यह उत्तर-पूर्व और उत्तर-पश्चिम भारत में शीतोष्ण तसर गतिविधियों में वरदान साबित हो सकता है।

*वैज्ञानिक-डी, क्षे.रे.उ.अ.के., भीमताल।

उत्तर प्रदेश राज्य के सोनभद्र एवं मिर्जापुर में तसर रेशम उद्योग की व्यापक संभावनाएं

रनबीर सिंह*, डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय** एवं डॉ.एन.बी. चौधरी**

सारांश : तसर रेशम उत्पादन का उत्तर प्रदेश में काफी संभावना है क्योंकि यहाँ तसर रेशम उत्पादन के धागे एवं परिधान की काफी मांग हैं। पर्यटन की दृष्टि से देखा जाये जो उत्तर प्रदेश में विश्व के विभिन्न भागों से लाखों की संख्या में पर्यटक आते हैं जिसका वाराणसी एक प्रमुख केंद्र है। अतः रेशम की खपत के मामले में उत्तर प्रदेश अग्रणी राज्य है। सोनभद्र, ललितपुर इत्यादि जनपदों में झाँसी, मिर्जापुर में तसर के खाद्य, उत्कृष्ट गुणवत्ता के कोसों के उत्पादन की व्यापक संभावना है क्योंकि यहाँ पर प्रशिक्षित तसर कृषक मौजूद हैं। बुनकर भी हैं एवं वस्त्र खरीदने वाले भी हैं। अतः उत्तर प्रदेश राज्य में तसर रेशम उद्योग से जुड़े हजारों लोगों को प्रमुखता से जीविका प्रदान किया जा सकता है। आगामी वर्ष में सोनभद्र जनपद के आस-पास के प्रक्षेत्र में तसर खाद्य पौधे के पौधरोपण एवं तसर रेशमकीट के सीड जोन के रूप में स्थापित करने की आवश्कता है। साथ ही सोनभद्र के मधुपर, दुद्धी, गोविन्दपुर इत्यादि स्थानों पर धागाकरण एवं वस्त्र निर्माण की दिशा में व्यापाक संभावनाएं हैं। इस दिशा में राज्य रेशम विभाग, उत्तर प्रदेश एवं केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची का सार्थक प्रयास चल रहा है जिससे इस क्षेत्र में तसर को और बढ़ावा मिलेगा एवं उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलेगी व इस क्षेत्र से पलायन भी रुकेगा। उत्तर प्रदेश में तसर के उत्पादन में वृद्धि हुई है। विगत वर्ष उत्पादन भी बढ़ा है जो कि इस दिशा में अच्छा संकेत है।

प्रस्तावना : अर्जुन, आसन एवं साल की पत्ती से रेशम बनाने की विलक्षण प्रणाली तसर रेशमकीट में है। विभिन्न प्रकार के रेशम में तसर-रेशम का उत्पादन/उद्योग अत्यधिक महत्व का है क्योंकि इससे समाज के लाखों गरीब लोगों को जीवन-यापन का सहारा मिलता है एवं कीटपालन परोक्ष रूप से पर्यावरण के संरक्षण व वन संरक्षण में भी सहायक होता है। तसर रेशम अद्वितीय प्राकृतिक रंग, चमक के कारण राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर

बहुत ध्यान आकर्षित कर रहा है। जैसा कि हम जानते हैं, तसर रेशम का उत्पादन मुख्य रूप से गरीब, दलित, आदिवासी आर्थिक रूप से पिछड़े और जरूरतमंद समुदायों द्वारा किया जाता है। यह उद्योग सदियों से आदिवासी संस्कृति का एक अभिन्न अंग रहा है। तसर रेशम उद्योग प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से लगभग 3.5 लाखों लोगों की जीविका का प्रमुख साधन बना हुआ है। इस उद्योग की मदद से प्रायः ग्रामीण एवं महिलाओं को रोजगार मिलता है एवं उनका जीवन-यापन होता है। तसर उद्योग में मुख्यत: तीन सेक्टर होते हैं जैसे कि खाद्य-पौधे, रेशम-कीटपालन एवं रेशम-वस्त्र निर्माण जो कि ग्रामीण एवं अनोखा व्यवसाय है जिसमें परिवार के विभिन्न उम्र के लोगों को रोजगार मिलता है, बड़े-बुजुर्ग लोगों के लिए कीटपालन की देख-रेख का कार्य, युवाओं के लिए कीटपालन का कार्य, महिलाओं के लिए धागाकरण साथ ही कुशल व्यक्तियों हेतु वस्त्र निर्माण का कार्य। उत्तर प्रदेश राज्य के सोनभद्र, मिर्जापुर, झांसी, ललितपुर इत्यादि जनपद में तसर रेशम कीटपालन का कार्य प्रमुखता से किया जाता है। इन जनपदों में तसर खाद्य पौधे अर्जुन, आसन एवं साल के पौधे प्रमुखता से पाए जाते हैं। केंद्रीय तसर अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान, रांची द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकियों के बहुधा एवं प्रभावी उपयोग से तसर रेशम का उत्पादन विगत वर्षों में बढ़ा है परिणाम-स्वरूप तसर कृषकों की आय में भी वृद्धि हुई है। आने वाले दिनों में किसानों की आय और अधिक बढ़ाने हेतु धान की खेती के साथ तसर कीटपालन करने की योजना है जिसके तहत खेत की मेड़ पर तसर के पौधे (अर्जुन, आसन) लगाकर प्रति हेक्टेयर 10-20 हजार अतिरिक्त आय मिल सकता है। इसके अतिरिक्त तसर कीटपालन के साथ एग्रो-फारेस्ट्री, औषधीय पौधों की खेती, सब्जी की खेती, दलहनी फसलों की खेती इत्यादि की प्रणाली पर भी शोध प्राथमिक स्तर पर कार्य किया जा रहा है। तसर कोसों के उत्पादन से उत्तर प्रदेश राज्य के तसर रेशम उद्योग से जुड़े कृषकों के जीवन में बदलाव आया है। साथ ही बनारस में निर्मित तसर रेशम धागे/कपड़े को भी वैश्विक प्रसिद्धि मिल रही है। संस्थान द्वारा तसर रेशम को एक विशिष्ट सामग्री के रूप में बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित है। साथ ही उप-उत्पादों की उपयोगिता पर भी कार्य चल रहा है। इस दिशा में किये गए प्रयासों का विवरण नीचे दिया गया है :

अर्जुन वृक्ष रोपण जनपद-सोनभद्र :-

जनपद सोनभद्र में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के एग्रो फोरेस्ट्री अन्तर्गत कुल 125 एकड़ में अर्जुन वृक्ष रोपण वर्ष 2024-25 में पूर्ण कराया गया। कराये गये अर्जुन वृक्ष रोपण का स्थलवार विवरण निम्नानुसार है -

राजकीय रेशम प्रशिक्षण संस्थान, बरकछा, मिर्जापुर : रेशम विकास विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार का रेशम उत्पादन से जुड़े/इच्छुक कृषकों को राज्य स्तरीय प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु जनपद मिर्जापुर में लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल राजकीय रेशम प्रशिक्षण संस्थान, बरकछा में स्थापित किया गया है। इस प्रशिक्षण संस्थान में वर्ष 2019-20 से कृषकों का राज्य स्तरीय 5 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण प्रारम्भ हुआ जिसके क्रम में वर्ष 2024-25 का प्रशिक्षण सत्र दिनांक 30.09.2024 को प्रारम्भ कर दिनांक 22.03.2025 को सम्पन्न हुआ। इस प्रशिक्षण अविध में 24 बैच में 947 लाभार्थियों को शहतूती रेशम, एरी रेशम एवं तसर रेशम का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में राज्य रेशम विभाग के अधिकारी, सेवानिवृत्त राज्य रेशम विभाग के अधिकारी तथा केन्द्रीय रेशम बोर्ड के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी कार्मिकों का सहयोग रहा।

तसर धागाकरण कार्य जनपद सोनभद्र : जनपद सोनभद्र में उत्पादित तसर कोया का अधिकाधिक धागाकरण कराते हुए उत्पादित धागा का जनपद में ही कपड़ा बुनाई का कार्य कराये जाने का प्रयास किया गया जिसके क्रम में जनपद सोनभद्र में ही सोनभद्र-वाराणसी मार्ग पर ग्राम बट्ट, मधुपुर में खादी की संस्था काशी हस्तकला प्रतिष्ठान में 160 महिलाओं से चरखा एवं मटका से धागाकरण का कार्य कराया जा रहा है। साथ ही 6 लूम से बुनाई का कार्य भी प्रारम्भ कराया गया है। इस कार्य के प्रारम्भ होने से स्थानीय महिलाओं को उनके घरों के निकट ही रोजगार प्राप्त हो रहा है इससे प्रत्येक महिला को 5 से 7 घण्टे कार्य करने पर 150 से 250 रुपए तक कार्य के हिसाब से प्रति दिन आय होती है। इसके कारण अन्य क्षेत्रीय महिलाओं में रेशम धागाकरण एवं बुनाई के कार्य में रुझान आ रहा है। यह धागाकरण का कार्य अधोहस्ताक्षरी के मोटिवेशन के बाद 20 महिलाओं से माह सितम्बर 2022 से प्रारम्भ कराया गया था। इस कार्य में महिलाओं की भागीदारी निरन्तर बढ़ती जा रही है। अधोहस्ताक्षरी द्वारा संस्था को मोटिवेट कर कुछ भवन आदि का कार्य भी करवाया जा रहा है। साथ ही स्थानीय अधिकारियों का निरीक्षण कराना तथा कुछ महिलाओं को भागलपुर से एक्सपोजर विजिट कराना एवं केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, राँची के निदेशक महोदय से अनुरोध कर सभी महिलाओं को संस्था/कार्य स्थल पर ही धागाकरण का एक सप्ताह का प्रशिक्षण भी दिलाया गया।

उत्तर प्रदेश में तसर रेशम उद्योग का भावी परिदृश्य :

» विभिन्न तसर सूत, कपड़ा, कोसा, रेशम अपशिष्ट आदि की उपलब्धता सम्यक करने के लिए सामान्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म/पोर्टल का उपयोग जरूरी है। यह उत्पादकों, विक्रेताओं और उपभोक्ताओं को तसर बाजार क्षेत्र को एकीकृत करने में मदद करेगा।

» तसर किसानों/उत्पादकों के आस-पास कोसा बैंक, यार्न बैंक और फैब्रिक बैंक पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

क्र.सं.	फार्म/केन्द्र का नाम	वृक्षारोपण क्षेत्रफल एकड़ में	रोपित पौध प्रजाति	रोपित पौध दूरी	रोपित पौध संख्या
01	राजकीय रेशम फार्म, मुनगाडीह	34.00	अर्जुन	8 x 8 फीट	25187
02	राजकीय रेशम फार्म, मुर्धवा प्रथम	05.00	अर्जुन	8 x 8 फीट	3704
03	राजकीय रेशम फार्म, मुर्धवा द्वितीय	62.00	अर्जुन	8 x 8 फीट	45930
04	राजकीय रेशम फार्म, बगरवा	20.00	अर्जुन	8 x 8 फीट	14816
05	राजकीय रेशम फार्म, मनबसा	04.00	अर्जुन	8 x 8 फीट	2963
	योग	125.00			92600

» उद्यमियों का अधिक ध्यान आकर्षित करने के लिए बिजनेस इन्क्यूबेटर के माध्यम से उनकी सहायता की जा सकती है।

» तसर रेशम उद्योग को बढ़ावा देने के लिए रेशम को लोकप्रिय वाणिज्यिक पोर्टल से जोड़कर बढ़ावा दिया जा सकता है।

» कम-से-कम 20% तसर खाद्य पौधों के रोपण के लिए विभिन्न संगठनों जैसे सीसीएल/हिंडाल्को/बिरला/टाटा/सीमेंट कंपनियों इत्यादि के सीएसआर फंड एवं जनपद मिनरल फंड का सम्यक उपयोग।

» प्रदेश के प्रत्येक रेशम उत्पादन जिले में कम-से-कम 100 अति प्रगतिशील किसानों की पहचान और 20 प्रगतिशील किसानों की सफलता की कहानी को लोकप्रिय बनाना। इन किसानों को धागाकरण से लेकर फैब्रिक से लेकर मार्केटिंग स्टार्टअप तक में बढ़ावा दिया जा सकता है।

» तसर खाद्य पौधों का विशाल वृक्ष रोपण और उनके अभिजात वर्ग। एल. स्पेसिओसा और टी.अर्जुना (कुलीन वर्ग) को भविष्य में रोपण के लिए उपयोग करने की आवश्यकता है ताकि गेस्टेशन की अवधि को कम किया जा सके और तेजी से विकास किया जा सके।

» विभिन्न संगठनों के साथ व्यापक गठबंधन और आईसीएआर/केवीके/एनजीओ/कृषि विश्वविद्यालयों के साथ समावेशी सहयोग।

» तसर कृषि-वानिकी मॉडल केवीके बुनियादी ढांचे का प्रसार और उपयोग।

» गुणवत्ता से जुड़ी उत्पादकता वृद्धि के लिए तसर रेशम उत्पादन में कृषि-वस्त्र का परिचय।

» किसानों के आस-पास के तसर कोसों की खरीद पर अधिक ध्यान देना और उद्योग में आगे और पीछे लिंकेज की दिशा में त्वरित कार्रवाई करना।

» स्थानीय से वैश्विक स्तर पर तसर रेशम को बढ़ावा देना।

» रेशम उत्पादन के लिए अधिक किसान-समाज और एसएचजी का विकास।

» प्रौद्योगिकी प्रसार के लिए प्रिंट और डिजिटल मीडिया का उपयोग।

» तसर किसानों के लिए रियल-कनेक्ट और कॉल-सेंटर और तसर रेशम उत्पादन पर व्यापक जानकारी के लिए सिंगल विंडो सिस्टम।

» राज्य में अनुसंधान और विकास के लिए अधिक धनराशि के साथ-साथ केंद्र-राज्य में और बेहतर समन्वय। बीज क्षेत्र का सुदृढ़ीकरण और राज्यों के साथ उनका जुड़ाव।

» तसर रेशम उत्पादन के लिए नए सीड क्षेत्रों की पहचान और विस्तार पर अधिक ध्यान। बुनियादी ढांचे और जनशक्ति का उन्नयन। किसानों के प्रति अधिक उन्मुखीकरण/संपर्क के लिए आरईसी अवसंरचना/जनशक्ति को सुदृढ़ बनाना।

» उत्तर प्रदेश राज्य के तसर रेशम उद्योग के लिए विशेष सरकारी पैकेज की जरूरत है। इस पैकेज का उपयोग उत्पादकों को रेशम सामग्री प्रदान करने के लिए किया जा सकता है ताकि वे अपने उत्पाद को बाजार में बेहतर तरीके से बेच सकें।

» यह स्टॉक को प्रभावी करेगा और बाजार को स्थिर करेगा।

» तसर बाजार को बढ़ावा देने के लिए तसर रेशम की खरीद पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है।

» विभिन्न सरकारी कार्यालयों में तसर रेशम के उपयोग की आवश्यकता है जिससे तसर आधारित खरीद को और प्रभावी बनाया जा सकता है। यह तसर रेशम की विशाल उपयोगिता को बढ़ाएगा।

» निकट भविष्य में तापमान में और वृद्धि होने की उम्मीद के रूप में थर्मो-सहिष्णु रेशमकीट पर अनुसंधान एवं विकास सहयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

उपसंहार : तसर रेशम उद्योग की मदद से प्रायः ग्रामीण एवं गरीब लोगों को रोजगार मिलता है एवं उनका जीवन-यापन होता है। तसर उद्योग ग्रामीण स्तर का अनोखा व्यवसाय है जिसमें परिवार के प्रत्येक उम्र के लोगों को रोजगार मिलता है।

तसर रेशम उद्योग गरीब लोगों के आय सृजन के लिए रोजगार के अवसरों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तसर रेशम को इसकी चमक और अद्वितीय गुणवत्ता के साथ-साथ बड़े पैमाने पर गरीब आदिवासियों और महिलाओं की संख्या के पारम्परिक ग्रामीण स्तर के व्यवसाय के कारण एक विशिष्ट और अद्वितीय सामग्री के रूप में लोकप्रिय बनाने की आवश्यकता है। मिर्जापुर, सोनभद्र, झाँसी एवं ललितपुर जनपदों के आस-पास के प्रक्षेत्र में उच्च गुणवत्ता के तसर सीड कोसों के उत्पादन हेतु स्थापित करने की महती आवश्यकता है जिससे उपयुक्त मात्रा में सीड कोसा को तैयार किया जा सके इससे इस क्षेत्र में और रोजगार मिलेगा। आने वाले दिनों में किसानों की आय को और अधिक बढ़ाने हेतु तसर कीटपालन के साथ विभिन्न प्रकार के सह-खेती की प्रणाली पर कार्य किया जा रहा है ताकि अतिरिक्त आय मिल सके। साथ ही तसर कीट के अपशिष्ट से उत्पादकता बढ़ने में मदद मिलेगी। विकल्प के तौर पर तसर रेशम उद्योग के उप-उत्पादों के उपयोग पर भी शोध चल रहा है। व्यापक शोध से ज्ञात हुआ है कि कोकूनेज एवं इसके प्रतिरूप के उपयोग से धागाकरण किया जा सकता है। विभिन्न पारि-प्रजतियों के संरक्षण हेतु उनके भौगोलिक परिस्थियों के अनुरूप तकनीकी विकसित की है जिससे इनसे उत्पादित रेशम भी भाँति-भाँति से उपयोग किया जा सके। सोनभद्र, मिर्जापुर में उत्कृष्ट गुणवत्ता के कोसों के उत्पादन की व्यापक संभावना है क्योंकि यहाँ पर प्रशिक्षित तसर कृषक

मौजूद है, तसर के खाद्य पौधे भी हैं, बुनकर भी हैं एवं तसर वस्त्र खरीदने वाले भी हैं। अतः उत्तर प्रदेश राज्य में तसर रेशम उद्योग से जुड़े हजारों लोगों को प्रमुखता से जीविका प्रदान किया जा सकता है। उत्तर प्रदेश के तराई वाले जनपदों में तसर के साल के पौधों पर आधारित इकोरेस से तसर कोसा के उत्पादन की भी संभावना है जिससे इस क्षेत्र में तसर को और बढ़ावा मिलेगा एवं उत्पादकता बढाने में मदद मिलेगी व इस क्षेत्र से पलायन भी रुकेगा। बड़े पैमाने पर तसर कीटपालन की पहल तसर उद्योग को आगे बढ़ाने के लिए उत्तर प्रदेश राज्य के समर्पण का एक प्रमाण है। साथ ही इस राज्य में कोसा उत्पादन के लिए तसर खाद्य पौधों की पत्तियों की क्षमता का दोहन करने के लिए एक और ठोस प्रयास शुरू करने की जरूरत है।

*सहायक निदेशक, राज्य रेशम विभाग, सोनभद्र, **के.त.अ. व प्र.सं., नगड़ी, राँची।

विविधा

मन साधे सब सधे

अंकुश्री*

बातचीत में दिल, दिमाग और मन की बातें सबसे अधिक की जाती हैं। दिल और दिमाग शरीर के अंग हैं, मगर मन शरीर का अंग नहीं है। जिस तरह आस-पास बिखरा पर्यावरण दिखाई नहीं देता, उसी तरह पल-प्रति-पल प्रभावित करने वाला मन भी दृष्यमान नहीं है। ऐसा इसलिए कि मन अमूर्त है, इसका कोई भौतिक स्वरूप नहीं होता। मगर इसका प्रभाव मूर्त-अमूर्त दोनों है। यह सूक्ष्म-से-सूक्ष्म संवेदना को ग्रहण करके उसे उत्प्रेरित कर सकता है। उत्प्रेरणा भली या बुरी कोई भी हो सकती है। जिस तरह खुले और अनंत आकाश में कुछ भी समा जाता है या विचर सकता है, उसी तरह अनंत, निराकार और अदृश्य मन में सभी प्रकार के विचार, भावना, प्रेम, संवेदना, दुख, ईर्ष्या, क्रोध, खुशी आदि समाविष्ट हैं। हमारी ज्ञानेंद्रियाँ जिन संवेदनाओं को ग्रहण करती हैं, मन उससे प्रभावित हो जाता है। मन की कार्यविधि को समझने अथवा उसे नियंत्रित करने के उपाय के लिए मनोविज्ञान बना हुआ है। मानसिक स्वास्थ्य में उत्पन्न व्यवधान को मनोरोग कहते हैं जिसकी चिकित्सा मनोवैज्ञानिक द्वारा की जाती है। मनोविज्ञान के माध्यम से मानसिक रोग को ठीक कर मन को पुरानी अवस्था में लाने का प्रयास किया जाता है। मनोरोग की जो चिकित्सा की जाती है, वह चिकित्सकीय तो होती ही है, भावनात्मक अधिक होती है। मनोरोगी को स्वस्थ करने का सबसे बढ़िया उपाय उसके भटकते मन की उड़ान को नियंत्रित करना है। इसमें योग को बहुत कारगर माना गया है। अध्ययन की सुविधा के लिए मन को तीन भागों में बाँटा गया है - सचेतन, अचेतन और अर्द्धचेतन। सचेतन मन को मन का दशवाँ हिस्सा बताया गया है जिसका अधिकाधिक उपयोग किया जाता है। अचेतन मन में भूख, प्यास, शोक, खुशी आदि इच्छाएँ दबी रहती हैं। दबी हुई इच्छाएँ जब नियंत्रण से बाहर होकर प्रकट हो जाती हैं तो कई प्रकार के विरोधी लक्षण उत्पन्न होने लगते हैं, जो आगे चलकर मनोरोग के कारण बन जाते हैं। सचेतन मन और अचेतन मन के मध्य की स्थिति को अर्द्धचेतन मन कहा जाता है। मन के इस भाग का उपयोग इच्छानुसार किया जा सकता है। मन के इसी भाग में स्मरण शक्ति आती है जिसका उपयोग करके बिती बातें याद की जाती हैं जो अध्ययन या कार्य सम्पादन के लिए बहुत उपयोगी होती हैं। वेदों में अमूर्त मन को आत्मा की शक्ति कहा गया है। इसके बारे में सोचकर इसकी उपस्थिति महसूस किया जाता है। मन में तरह-तरह के संकल्प-विकल्प उठते रहते हैं जिन्हें विवेक शक्ति या बुद्धि द्वारा अच्छे-बुरे में पहचाना या अंतर किया जाता है। वाहन चलाने के लिए वाहन होने के साथ ही उसे चलाने का ज्ञान भी होना चाहिए, वरना वह इधर-उधर बहक कर दुर्घटनाग्रस्त हो जाएगा। उसी तरह मन को नियंत्रित करने के लिए बुद्धि का उपयोग किया जाता है। यदि बुद्धि द्वारा मन को नियंत्रित नहीं किया जाए तो वह अथाह में भटकते रह जाएगा। बुद्धि मन का डोर है। मन शिशु की तरह होता है। कोई शिशु जिस तरह बड़ों के अभिभावकत्व में पलता-बढ़ता है, उसी तरह बुद्धि के नियंत्रण में रह कर ही मन कुछ करता है। बुद्धि जिधर चाहती है, मन उधर घुमने लगता है। मगर मन पर बुद्धि का नियंत्रण बहुत देर तक नहीं रह पाता है। जैसे ही बुद्धि का नियंत्रण हटता है, मन पुनः भटकना शुरू कर देता है। मन बहुत चंचल और गतिमान होता है। इसकी चंचलता और गतिशीलता का आभास इसी बात से लगाया जा सकता है कि कमरे में बैठे व्यक्ति का मन तुरंत विश्व के किसी कोने या ब्रह्मांड के किसी पींड के साथ भ्रमण करने लग सकता है। मन व्यक्ति की जानकारियों के अनुसार भटकता ही है, यह ऐसी दिशा में भी भटकने लगता है जिसका पहले से कोई ज्ञान नहीं रहता है। कल्पना की उड़ान मन की विशेषता है। बातचीत में हम मन के गतिमान होने की बात कह देते हैं। मगर सच्चाई यह है कि मन की कोई गति नहीं होती। ऐसा इसलिए कि किसी भी गति की एक सीमा होती है जिसे मापा जा सकता है। मगर मन की गति की सीमा या माप नहीं होती। मन की स्थिति ऐसी है कि यह अभी यहाँ है और अगले ही क्षण चाँद या सूरज तक पहुँच जाता है। हवा, ध्वनि और प्रकाश की गति होती है, मगर दृष्टि की अपनी कोई गति नहीं होती। वह प्रकाश की गति से संचालित होकर हम तक पहुँचती है। मन की गति की तुलना कल्पना से की जा सकती है क्योंकि उसकी भी कोई गति नहीं होती। वस्तुतः कल्पना मन से ही उत्पन्न स्थिति है। हर प्रकार के सृजन से पहले उसकी कल्पना की जाती है। उसके बाद ही उसे आकार देना संभव हो पाता है। इस तरह जितने भी आविष्कार हैं, वे मन में उत्पन्न कल्पना की देन हैं। मन और बुद्धि के लिए अनेक परिभाषाएँ दी जाती हैं। किंतु सच्चाई यह है कि इन दोनों को किसी परिभाषा में नहीं बाँधा जा सकता है क्योंकि मन आकाश है तो बुद्धि ब्रह्मांड। मन तो अथाह है ही, ब्रह्मांड की थाह पाना भी संभव नहीं है। मन पर नियंत्रण करने वाले को मुनि कहा जाता है। साधु-संन्यासी बने बिना भी घर-गृहस्थी में रहकर मन को नियंत्रित किया जा सकता है। मन पर नियंत्रण सतत् अभ्यास से संभव हो पाता है। मन को नियंत्रित करने का तात्पर्य उसे किसी विषय पर केंद्रित करने से है। मन को भटकने से रोकने में जो जितना सक्षम होता है,

वह अपने विषय पर उतना ही अधिक केंद्रित रह पाता है। किसी एक सीध में नहीं चलने के कारण मन की दिशा बार-बार बदलती रहती है। सबसे बड़ी बात है कि इसके भटकाव की दिशा सार्थक कम, निरर्थक अधिक होती है। मन के भटकाव को रोकना ही मन को साधना है। इसीलिए कहा जाता है कि मन साधे सब सधे।

*अंकुश्री, 8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल, नामकुम, राँची।

साइबर क्राइम से सुरक्षा व जागरूकता

रेखा जैन*

'साइबर अपराध' जिसे कम्प्यूटर अपराध के रूप में भी जाना जाता है, में आपराधिक गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल होती है जो विशेष रूप से अवैध रूप से डेटा तक पहुंचने, संचारित करने या हेरफेर करने के लिए कम्प्यूटर या सम्बन्धित प्रणाली का उपयोग करके और/या उसे लक्ष्य बनाकर की जाती है। इलेक्ट्रॉनिक साधनों में आधुनिक दूरसंचार नेटवर्क जैसे कि इंटरनेट (चैट रूम, ई-मेल, नोटिस बोर्ड और समूह सहित नेटवर्क) और मोबाइल फोन (ब्लूटूथ/एसएमएस/एमएमएस) का उपयोग शामिल हो सकता है लेकिन यह इन्हीं तक सीमित नहीं है। जब संवेदनशील जानकारी को कानूनी या अन्य तरीके से रोककर जनता के सामने लीक कर दिया जाता है। इनमें से कुछ जानकारी में सैन्य तैनाती, आंतरिक सरकारी संचार और यहाँ तक कि उच्च-मूल्य वाले व्यक्तियों के बारे में निजी डेटा भी शामिल हो सकता है। साइबर अपराध सिर्फ़ व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, सरकारी और गैर-राज्य दोनों ही तरह के लोग साइबर अपराधों में शामिल होते हैं। आज के लगातार विकसित हो रहे खतरे के परिदृश्य में साइबर सुरक्षा जागरूकता क्यों आवश्यक है। साइबर सुरक्षा जागरूकता में नवीनतम् सुरक्षा खतरों, साइबर सुरक्षा सर्वोत्तम प्रथाओं, दुर्भावना पूर्ण लिंक पर क्लिक करने या संक्रमित अनुलग्नक डाउनलोड करने के खतरों, ऑनलाइन बातचीत करने, संवेदनशील जानकारी का खुलासा करने आदि के बारे में जागरूक होना शामिल है। साइबर अपराधियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले दुर्भावना पूर्ण तरीकों के बारे में जागरूक होने में मदद करती है कि वे कैसे आसान लक्ष्य बन सकते हैं, संभावित खतरों को कैसे पहचानें और इन कपटी खतरों का शिकार होने से बचने के लिए वे क्या कर सकते हैं। यह आपके कर्मचारियों को सही ज्ञान और संसाधनों के साथ सशक्त बनाता है ताकि वे किसी भी नुकसान का कारण बनने से पहले संभावित खतरों की पहचान कर सकें और उन्हें चिह्नित कर सकें।

साइबर अपराध के बढ़ते चलन के साथ साइबर सुरक्षा सभी आकार के व्यवसायों के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता है। सुरक्षा जागरूकता प्रशिक्षण किसी संगठन की साइबर सुरक्षा रणनीति का एक महत्वपूर्ण घटक है। इसमें कर्मचारियों को सुरक्षा जोखिमों और उनसे बचने के तरीकों के बारे में सूचित करने और उन्हें सुसज्जित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले विभिन्न उपकरण और तकनीकें शामिल हैं। इससे उन्हें यह समझने में मदद मिलती है कि आपका व्यवसाय हर दिन किन साइबर जोखिमों का सामना करता है, आपके व्यवसाय पर उनका क्या प्रभाव पड़ता है और डिजिटल संपत्तियों की सुरक्षा और सुरक्षा के सम्बन्ध में उनकी भूमिकाएँ और ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं। साइबर अपराधी लगातार विकसित हो रहे हैं और व्यवसायों से मूल्यवान डेटा चुराने के लिए कमजोरियों का फायदा उठाने के लिए नए तरीके तैयार कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, वे मानवीय व्यवहार और भावनाओं का फायदा उठाने की कोशिश करते हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। सुशिक्षित और प्रशिक्षित कर्मचारी इन खतरों को जल्दी से पहचान सकते हैं, जो साइबर सुरक्षा घटनाओं के जोखिम को काफी कम कर सकते हैं और डेटा उल्लंघनों को रोकने में मदद कर सकते हैं। सुरक्षा जागरूकता प्रशिक्षण न केवल खतरे पैदा करने वाले लोगों को उनके ट्रैक पर रोकने में मदद करता है बल्कि एक संगठनात्मक संस्कृति को भी बढ़ावा देता है जो बढ़ी हुई सुरक्षा पर केंद्रित है। साइबर सुरक्षा जागरूकता प्रशिक्षण आपके संगठन के अस्तित्व के लिए एक आवश्यकता है। पिछले कुछ वर्षों में साइबर सुरक्षा जागरूकता प्रशिक्षण केवल सुरक्षा पेशेवरों के लिए आरक्षित होने से लेकर आईटी प्रशासकों और अन्य कर्मचारियों तक एक लम्बा सफर तय कर चुका है। साइबर सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रमों का दायरा कर्मचारियों की संख्या, उनकी जागरूकता, बजट आदि के आधार पर अलग-अलग हो सकता है। दायरा चाहे जो भी हो किन्तु साइबर सुरक्षा जागरूकता में सभी को शामिल किया जाना चाहिए। संवेदनशील जानकारी का खुलासा करना, सिस्टम एक्सेस देना, क्रेडेंशियल साझा करना, फंड ट्रांसफर करना वगैरह। वेरिज़ोन की 2021 डेटा ब्रीच इन्वेस्टिगेशन रिपोर्ट से पता चला है कि 35% से ज़्यादा डेटा ब्रीच में फ़िशिंग शामिल थी। फ़िशिंग और सोशल इंजीनियरिंग हमले लक्षित और विश्वसनीय होते हैं जिससे वे अत्यधिक सफल होते हैं। हालाँकि सही प्रशिक्षण और कौशल के साथ आपके कर्मचारी चेतावनी के संकेतों को पहचान सकते हैं और इन घोटालों का शिकार होने की संभावना को बहुत कम कर सकते हैं। वेब ब्राउज़र हैकर्स के लिए सबसे ज़्यादा टारगेट होते हैं क्योंकि वे इंटरनेट के प्रवेश द्वार होते हैं और उनमें व्यक्तिगत जानकारी सहित बड़ी मात्रा में संवेदनशील डेटा होता है। आपके द्वारा ऑनलाइन देखी जाने वाली सभी वेबसाइट सुरक्षित नहीं होती हैं। इसलिए ब्राउज़र/इंटरनेट सुरक्षा प्रशिक्षण, जिसमें सर्वोत्तम अभ्यास, ब्राउज़र सुरक्षा युक्तियाँ, ब्राउज़र खतरों के विभिन्न प्रकार, इंटरनेट और सोशल मीडिया नीतियाँ शामिल हैं, गोपनीयता बनाए रखने और सुरक्षित रूप से वेब ब्राउज़ करने में काफ़ी मददगार हो सकते हैं। आपके संगठन की जानकारी सबसे मूल्यवान सम्पत्ति है इसलिए इसकी गोपनीयता, अखंडता और उपलब्धता की रक्षा करना सभी की जिम्मेदारी होनी चाहिए। आपके प्रशिक्षण कार्यक्रमों में ऐसे पाठ्यक्रम शामिल होने चाहिए जो डेटा सुरक्षा की गंभीरता और डेटा की सुरक्षा के प्रति जिम्मेदारियों पर जोर देते हों। कर्मचारियों को घटनाओं की रिपोर्टिंग के बारे में भी प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि समस्याओं का तुरंत समाधान किया जा सके और जोखिम को कम किया जा सके। कंधे पर लैपटॉप लादकर यात्रा करने वालों से सावधान रहने से लेकर आपकी कम्पनी द्वारा दिए गए लैपटॉप और मोबाइल डिवाइस को संभावित सुरक्षा जोखिमों से बचाने तक सब कुछ शामिल है। उदाहरण के लिए दूर जाते समय डिवाइस को लॉक

करना, वर्कस्टेशन को साफ रखना, टेलगेटिंग से बचना और गोपनीय फाइलों और मुद्रित सामग्रियों को सुरक्षित स्थान पर रखना। आज के ख़तरनाक माहौल में मज़बूत पासवर्ड रखने का महत्व सर्वोपरि है। सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रमों में पासवर्ड प्रबंधन और पासवर्ड की सर्वोत्तम प्रथाओं को शामिल किया जाना चाहिए जिसमें मज़बूत पासवर्ड क्या होता है और इसे कैसे बनाया जाता है, शामिल है। आपके कर्मचारियों को भी खाते से छेड़छाड़ को रोकने के लिए। साइबर सुरक्षा जागरूकता साइबर अपराध को हल नहीं कर सकती है, आज व्यवसाय संभावित जोखिमों को कम करने में इसके महत्व को समझते हैं। वास्तव में अधिकांश कंपनियाँ अपने कर्मचारियों को किसी-न-किसी तरह का सुरक्षा जागरूकता प्रशिक्षण प्रदान करती हैं। हालाँकि हाल के वर्षों में सफल डेटा उल्लंघनों के आँकड़े बताते हैं कि साइबर जागरूकता में अभी भी सुधार की गुंजाइश है। डिजिटल दुनिया में साइबर सुरक्षा जागरूकता बहुत ज़रूरी है। साइबर अपराधी लगातार नए हमले के तरीके अपनाते रहते हैं। नए रुझानों को समझना और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अपडेट करना जितना आसान लगता है, उससे कहीं ज़्यादा मुश्किल है। इससे साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण सामग्री भी तेज़ी से पुरानी होती जा रही है क्योंकि आज काम आने वाला ज्ञान और कौशल कल के खतरों के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता है। साइबर अपराध सिर्फ़ बड़ी कम्पनियों के लिए ही नहीं बल्कि छोटे व्यवसायों के लिए भी एक बढ़ती चुनौती है। अत्याधुनिक सुरक्षा समाधान लागू करने, सुरक्षा कर्मियों को तैनात करने और कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने के बावजूद ख़तरा पैदा करने वाले लोग सुरक्षा प्रणालियों से सफलतापूर्वक बच निकलते हैं। जब साइबर सुरक्षा से जुड़ी घटनाएं होती हैं तो आपका सुरक्षित बैकअप आपकी अंतिम सुरक्षा पंक्ति होती है। साइबर क्राइम से बचने के लिए सबसे अच्छी बात है कुछ सावधानियां बरतना। अगर आप इंटरनेट का इस्तेमाल कर रहे हैं तो आपको साइबर क्राइम से बचने के लिए नीचे दिए गए सुझावों के बारे में जरूर पता होना चाहिए।

(1) सम्पूर्ण एंटी-वायरस सुरक्षा का उपयोग करें।
(2) हमेशा एक मजबूत पासवर्ड का उपयोग करें व
(3) अपने सॉफ्टवेयर को अपडेट रखें।
(4) सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सभी निजी जानकारियों को लॉक करके रखें।
(5) अपनी पहचान सुरक्षित रखें।
(6) समझें कि अगर आप पीड़ित बन जाएं तो क्या करें।

अपने बच्चों को इंटरनेट का उपयोग करने से रोके बिना इंटरनेट के स्वीकार्य उपयोग के बारे में सिखाएँ। उन्हें ऑनलाइन उत्पीड़न, पीछा करना या धमकाना जैसी किसी भी तरह की अवैध गतिविधि के बारे में पता होना चाहिए। इसी तरह अपने बच्चे की व्यक्तिगत जानकारी साझा करते समय सावधान रहें क्योंकि पहचान चोर अक्सर बच्चों को निशाना बनाते हैं। अगर किसी भी परिस्थिति में आपको लगता है कि आप साइबर क्राइम का शिकार हो गए हैं तो सबसे पहले स्थानीय पुलिस को सूचित करें। इसी तरह अगर आपको लगता है कि अपराधियों ने आपकी पहचान चुरा ली है तो उन कम्पनियों और बैंकों को सूचित करें जहां धोखाधड़ी हुई है और धोखाधड़ी अलर्ट लगाएं और अपनी क्रेडिट रिपोर्ट प्राप्त करें। एक तरह से साइबर अपराध से लड़ना हर किसी का काम है। इसलिए इसे अपना दायित्व समझें और साइबर अपराध के खिलाफ लड़ाई का हिस्सा बनें। इंटरनेट हमारे दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। इसने हमारे आपस में संवाद करने, मित्र बनाने, नई सूचना (अपडेट) साझा करने, खेल (गेम) खेलने और खरीदारी करने के तरीके को बदल दिया है। यह हमारे दैनिक जीवन के अधिकांश पहलुओं को प्रभावित कर रहा है। साइबर अपराधों की रोकथाम पर जानकारी के प्रचार-प्रसार के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक हैं। चूंकि साइबर अपराध अंतरराष्ट्रीय और कपटी अपराधों के सबसे तेजी से बढ़ते रूपों में से एक है इसलिए यह महसूस किया जाता है कि इसकी रोकथाम के लिए 'साइबर स्वच्छता' को बढ़ाने की सख्त जरूरत है। ऑनलाइन दुनिया में सुरक्षित रहने के लिए साइबर की कुछ सुरक्षित प्रथाओं का पालन करना महत्वपूर्ण है जो हमारे ऑनलाइन अनुभव को और उपयोगी एवं परिणामात्मक बनाने में मदद कर सकते हैं।

*C 17, Third Floor Front, Ganesh Nagar, PO Tilak Nagar, New Delhi.

समाज सुधारक थे डॉक्टर राम मनोहर लोहिया

अंकुर सिंह*

23 मार्च, 1910 को डॉक्टर राम मनोहर लोहिया जी का जन्म अकबरपुर, फैजाबाद (उ. प्र.) जिले में हरिलाल एवं चंदा देवी के घर हुआ था और मृत्यु 12 अक्टूबर 1967 को नई दिल्ली के एक अस्पताल में हुई थी। जिसके बाद दिल्ली के उस हॉस्पिटल का नाम डॉक्टर राम मनोहर लोहिया हॉस्पिटल कर दिया गया। डॉक्टर राम मनोहर लोहिया के पिता हरिलाल जी गाँधी जी के परम भक्त थे और अपने साथ राम मनोहर को भी गाँधीवादी सभाओं में ले जाते थे। बचपन में ही लोहिया जी गाँधी जी के विचारों से काफी प्रभावित होकर आजीवन गाँधी जी के विचारधारा पर चलने का प्रण ले लिए। 1921 में डॉक्टर लोहिया पंडित नेहरू के सम्पर्क में आए और कुछ वर्षों तक उनके साथ कार्य किये। परन्तु उन दोनों के बीच विभिन्न मुद्दों और सिद्धांतों को लेकर अक्सर आपसी टकराव और मतभेद दिखाई पड़ते थे। नेहरू जी के खर्चों के विरोध पर लोहिया जी का नारा एक आना बनाम तीन आना खूब प्रचलित था, उस समय। लोहिया जी स्वतंत्रता सेनानी और राजनेता के साथ-साथ समाज सुधारक भी थे। उन्होंने नारी कल्याण के लिए और जातिवाद को समाज से दूर करने के लिए अनेक सामाजिक कार्यक्रम किए। अक्सर अपने चुनावी और सामाजिक कार्यक्रमों में अपने सुनने वालों से सभा में हाथ उठवा कर कसम दिलाते थे कि कभी किसी नारी पर हाथ नहीं उठाओगे। इस पर एक मजेदार किस्सा भी है, एकबार एक लोहियावादी लोहिया जी के सभा से देर रात अपने घर पहुँचा और उसके घर पहुँचते ही उसकी पत्नी ने देर से आने के वजह से उसको काफी भला-बुरा कहा और बातों-ही-बातों में लोहिया जी की भी आलोचना करने लगी। काफी देर तक वह व्यक्ति सुनता रहा फिर अपनी पत्नी से बोला - "आज मेरे सामने तुम जो इतना बोल पा रही हो उसके पीछे भी लोहिया

जी हैं क्योंकि उनके सभा में मैंने कसम खाई है कि किसी भी महिला पर हाथ नहीं उठाऊंगा।" इतना सुनते ही उस व्यक्ति की पत्नी चुप हो गई और अपने कहे शब्दों पर बहुत पछताई। आज के परिवेश में सभी राजनीतिक दल नारी उत्थान की बात तो करते हैं लेकिन उनके दल में कई ऐसे नेता मिल जायेंगे जो नारी शोषण के मामले में अभियुक्त है फिर भी राजनीतिक दल ने उन्हें पार्टी में उच्च पद देने के साथ-साथ चुनाव लड़ने के लिए पार्टी का सिम्बल पकड़ा देती है। जातिवाद को समाज से दूर करने के उपाय पर लोहिया जी कहते थे कि अलग-अलग जातियों में रोटी और बेटी का रिश्ता होना चाहिए। अर्थात् विभिन्न जातियों में आपसी खान-पान के साथ सामाजिक रिश्ते भी होना चाहिए जिससे उनके मन से आपसी भेदभाव और असमानता की भावना समाप्त हो सके। वर्तमान परिस्थिति में देश आजादी के इतने वर्षों बाद भी जातिवाद का दंश झेल रहा है जिसे लोहिया जी के रोटी और बेटी के रिश्ते वाले फॉर्मूले से काफी हद तक समाप्त किया जा सकता है। आजकल एक तरफ जहां राजनीतिक दल (पार्टी) जनता के सामने देश से जातिवाद को दूर करने का दिखावा तो करती है वहीं दूसरी तरफ वोटों के लिए उम्मीदवारों के चयन में उनके जाति को प्राथमिकता देती है। देश के लगभग सभी चुनावों में जाति और धर्म के नाम पर वोटों का ध्रुवीकरण काफी जोरो से होता है। लोहिया जी के अनुयायियों से यही कहना चाहूँगा कि लोहिया जी के आदर्शों पर चलने से देश की कई समस्याएं स्वतः समाप्त हो जाएँगी जो लोहिया जी के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

*हरदासीपुर, चंदवक, जौनपुर, उ. प्र.।

पर्यटन

राजगीर, नालन्दा और पावापुरी की यात्रा

एन.के.सिन्हा*

यात्राएँ करना किसे अच्छा नहीं लगता। यात्राएँ सुखद हों या तकलीफ देह/कष्टदायक दोनों ही याद रहते हैं। हम लोगों को पता है कि हमारे देश में इतनी जगहें देखने लायक हैं कि चाहकर भी हम उन सभी स्थानों पर जा नहीं सकते। कारण अनेक हो सकते हैं। जैसे-साधन की कमी, शरीर की अवस्था, स्थान विशेष तक पहुँचने का मार्ग दुरूह होना, घर-परिवार की मजबूरी आदि-आदि। जैसे हमारे देश में हर पाँच मील पर बोलियाँ, रहन-सहन, खान-पान में बदलाव हमें नजर आता है वैसे ही बहुत सारे स्थानों पर हमें कुछ-न-कुछ बदलाव देखने को मिलता है। कहीं पुराने समय का मंदिर, किसी सभ्यता का अवशेष, कहीं आधुनिक काल के डैम, पार्क, विकसित किए गए पर्यटन स्थल, झरने आदि-आदि। बिहार और उससे अलग होकर बने राज्य झारखण्ड में भी ऐसे पर्यटन स्थलों की कोई कमी नहीं है। यात्रा में एकाकीपन खलता है और कभी-कभी वह परेशानी भी पैदा करता है। खासकर तब जब अचानक किसी की तबियत खराब हो जाए या किसी अन्य तरह की समस्या आ जाए किन्तु यदि कुछ अन्य पहचान के लोगों का साथ मिल जाता है तो छोटी-मोटी कठिनाइयों पर हम आसानी से काबू पा लेते हैं और यात्रा का आनंद भी बढ़ जाता है। अत्यांक्षरी, गीत गाते, गप्पे मारते, रास्ते में उतरकर विश्राम करते और खाते-पीते हम कब गंतव्य तक पहुँच जाते हैं इसका हमें भान ही नहीं होता। हमारे कुछ परिचितों की इच्छा हो रही थी कि इस दफे हमलोग कहीं साथ घुमने का कार्यक्रम बनायें। कोई भालगपुर के नजदीक प्राचीन विक्रमशीला विश्वविद्यालय, कोई संसार के पहले लोकतंत्र की जन्म स्थली वैशाली तो कोई राँची से नजदीक माइथान डैम और पंचेते डैम चलने की सलाह दे रहा था तो कोई द्वापर युग से प्रसिद्ध राजगीर/राजगृह चलने की। राजगीर जाने का सुझाव देने वालों का कहना था कि हम वहाँ जाकर अगल-बगल के प्राचीन स्थलों यानि नालन्दा और पावापुरी को भी देख सकते हैं। खैर विचार-विमर्श के बाद यह तय पाया कि हम सभी इस बार राजगीर चलेंगे। जुलाई, 2023 के अंतिम सप्ताह में मलमास मेला अपने उत्कर्ष पर था और पूरी तरह सज गया था। कहते हैं कि मलमास में छत्तीस कोटि देवताओं का यहाँ निवास होता है। जैसा कि बहुतों को जानकारी है कि प्रत्येक तीन वर्षों के उपरांत राजगीर में मलमास (स्थानीय लोग इसे लौंद भी कहते हैं) का मेला लगता है और यह मेला पूरे एक महीने तक चलता है। बिहार में सोनपुर मेले के बाद इसी का स्थान आता है जो अपनी विशालता के लिए प्रसिद्ध है। आप जिन वस्तुओं की कल्पना कर सकते हैं और जिनकी नहीं भी वह सभी प्राय: यहाँ आपको मिल ही जायेंगे। चौबीस घंटे में कब दिन और कब रात का वक्त है, यह मेले के समय पता ही नहीं चलता। थिएटर, झूला, घरेलू वस्तुएँ, सजावट का सामान, खेती-बाड़ी का सामान, तरह-तरह के खिलौने, नाच-गान, खाने-पीने के स्वादिष्ट व्यंजन, पोशाक, मौत का कुंआ, जादुगरी का खेल, तरह-तरह के तमाशे/मनोरंजन और भी बहुत कुछ देखने को लोगों का हुजूम उमड़ पड़ता है। हमें मालूम था कि इन दिनों वहाँ होटल का मिलना या धर्मशालाओं में ठहरने की व्यवस्था करना बहुत मुश्किल है। हम लोगों ने तय किया कि हम बिहार शरीफ में रुकेंगे। अत: हम दो बोलेरो गाड़ी पर सवार होकर राँची से 10.00 बजे रात्रि में निकल पड़े। ये स्थान बस और रेल दोनों से ही जुड़े हुए हैं और कोई भी अपनी सुविधानुसार इन सेवाओं का उपयोग करके भी आसानी से पहुँच सकता है। भ्रमण के लिए ऑटो, ताँगा आदि भी हमेशा मिलते रहते हैं। राँची से हजारीबाग, कोडरमा, रजौली, नवादा होते हुए हम लोग सुबह छ: बजे बिहार शरीफ पहुँचे। होटल में स्थान सुरक्षित होने के कारण हमें कोई कठिनाई नहीं हुई। गरमा-गरम चाय और कचौड़ी-जलेबी तथा चने-आलू की सब्जी नाश्ते में पाकर हमारा मन खुश हो गया। किसी ने हमें बताया कि बिहार शरीफ में अनुग्रह पार्क के पास रबड़ी बहुत स्वादिष्ट मिलती है तो हमने रुककर रबड़ी का आनंद भी लिया और राजगीर के लिए निकल पड़े। रास्ते में नालन्दा मिला और फिर सिलाव। सिलाव के प्रसिद्ध खाजों को खाने के लिए जिसकी धूम दुनिया भर में है, (यहाँ से ऑनलाइन खाजों की बुकिंग विदेशों के लिए इतनी होती है कि उसे पूरा करने में दो-चार दिनों का समय भी कम पड़ता है) हम लोग अपने को रोक नहीं सके। यह देखकर हमें घोर आश्चर्य हुआ कि प्राय: सभी दुकानों के लम्बे-लम्बे बोर्ड पर लिखा था 'सिलाव के प्रसिद्ध काली साह हलवाई के खाजे की दुकान।' खैर हम लोग एक दुकान पर रुके और खाजा का स्वाद लिया। खाजा मुँह में जाते ही जैसे हवा हो गया। चीनी के खाजे, नमकीन खाजे, सादे खाजे, खाजा खाकर मन तृप्त हो गया और हमारे मुँह

से अनायास निकल पड़ा वाह-वाह क्या स्वाद है। हम बोलोरों से बढ़ रहे थे कि हमें एक द्वार मिला जिसमें लिखा था आपका राजगीर में स्वागत है। बिहार शरीफ से राजगीर की दूरी करीब 22-23 किलोमीटर है और घण्टे भर में हम लोग रास्ते में रुकते हुए वहाँ पहुँच ही गये। दिन का नौ बज रहा था। नजारा ऐसा था मानों कहीं कुछ लूट हो रही हो और एक बड़ी भीड़ दौड़ी जा रही हो। चींटियों की तरह लोग तो नजर आ रह थे लेकिन जमीन नजर ही नहीं आ रहा था जैसे लड्डू पर जब चींटियाँ सिपट जाती है तो सिर्फ चींटियाँ ही नजर आती हैं लड्डू नहीं। इतनी भीड़ में हमारी गाड़ी किसी तरह आगे बढ़ रही थी। हमने सोचा कि लोगों की भीड़ कुण्ड स्नान के लिए जा रही है तो क्यों नहीं हम दर्शनीय स्थानों को देखने चलें। हम लोगों ने सबसे पहले मनियार मठ जाना तय किया। हमें बताया गया कि कुछ वर्षों पहले तक यह एक गहरा कुआँ था मगर जब कुछ प्रेमी जोड़ों ने उसमें कूदकर जान दे दी तो कुएँ को भी भर दिया गया। इससे कुछ प्राचीन ऐतिहासिक महत्व की मूर्तियाँ निकाली गई थीं जिनमें नाग-नागिन, भगवान बुद्ध और भगवान महावीर, भगवान गणेश और भगवान शिव आदि की मूर्तियाँ प्रमुख हैं। कहते हैं कि यहाँ एक बड़ा मणि वाला विषधर नाग का निवास था जिसकी फुफकार कुएँ में झाकने वालों को सुनाई पड़ती थी। इससे आगे बढ़ने पर जरासंघ का खजाना जिसमें दो कमरे हैं हमें मिला। कहते हैं कि एक कमरा जो एक बहुत बड़े चट्टान से बंद किया गया था, अँगरेजों ने बारूद लगाकर तोड डाला, उसमें क्या मिला यह किसी को मालूम नहीं। मगर दूसरा कमरा अभी भी सुरक्षित है। इसे भी तोड़ने के कई प्रयास हुए मगर यह तोड़ा नहीं जा सका। इसके पत्थर पर, जिससे यह कमरा बंद किया गया था, कुछ पाली या किसी अन्य भाषा में लिखा है जो आज तक पढ़ा नहीं जा सका। यहाँ ऊपर की तरफ कुछ खुला हिस्सा दरारनुमा है जिससे लोग एक या दो रुपए का सिक्का अंदर फेंककर आवाज सुनकर अनुमान करते हैं कि वह कितना बड़ा हो सकता है और कितना भर गया होगा। अब हम जरासंघ के अखाड़े की ओर चले। यह एकदम किनारे एवं सूनी जगह पर है (यदि कम लोग दल में हों तो यहाँ नहीं जाना ही उचित है कारण लूटपाट की घटना अक्सर वहाँ होती रहती है)। यहाँ की मिट्टी दूध की तरह सफेद है जो इस बात का प्रमाण है कि इस जमीन को दूध से पटाया जाता था ताकि मिट्टी चिकनी हो जाए। यहीं भीम और जरासंघ के बीच 18 दिनों तक मल्ल युद्ध हुआ था जिसमें भगवान श्री कृष्ण के इशारे पर भीम ने जरासंघ का वध किया था। उसके शरीर को तिनके की तरह दो भागों में चीरकर। अब हमारी गाड़ी बिम्बिसार के किले की तरफ मोड़ दी गई। कहते हैं बिम्बिसार भगवान बुद्ध के दर्शन एक कैदी का जीवन व्यतीत करते हुए यहाँ से किया करता था जो गृद्धकूट पर्वत पर अक्सर आते-जाते रहते थे। इस किले से कुछ आगे और बढ़ने पर (दक्षिण दिशा में) पहाड़ों की तली में दो समानांतर चौड़ी-सी पहियों के गुजरने का चिह्न दिखता है जो नारदीगंज की ओर नजर आता है। कहा जाता है कि भगवान श्री कृष्ण जरासंघ से युद्ध में हारकर इसी ओर से भाग जाते थे और इस कारण उनका नाम रण छोड़ पड़ा था। गृद्धकूट पर्वत उन पाँच पहाड़ियों में सबसे ऊँचा है जिनसे राजगीर अथवा राजगृह घिरा हुआ है। यह भगवान बुद्ध के प्रमुख शिष्य आनंद का निवास भी था। इसके बगल के पर्वत रत्नागिरी पर आजकल विश्व शांति स्तूप देखने के लिए भारी भीड़ जाती-आती रहती है। रज्जू मार्ग से यहाँ पर्यटक आते-जाते हैं जिसमें 114 कुर्सियाँ लगी हुई हैं। हम लोगों ने इस रज्जू मार्ग से विश्व शांति स्तूप पहुँचकर भगवान बुद्ध की प्रतिमा देखी जो चारों दिशाओं में स्थापित हैं। यह रज्जू मार्ग बृहस्पतिवार को बंद रहता है, ऐसा हमें बताया गया। इस स्तूप का निर्माण जापान के फूजी गुरु जी द्वारा करवाया गया था। इस रज्जू मार्ग की लम्बाई लगभग 2200 फीट है और इसके कुर्सी पर बैठकर नीचे की गहरी खाई/घाटी देखकर यात्रियों के मन में डर उत्पन्न हो जाता है। हम लोगों ने बेणु वन (पुराने समय में यह सुगंधित बाँसों का कुंज था) देखा। यह उपवन बहुत सुन्दर है, यहाँ एक बड़ा तालाब है, सुन्दर फूलों को देख हम लोगों का मन खुश हो गया। कहते हैं इस तालाब में भगवान बुद्ध स्नान किया करते थे। यहाँ उन्होंने अपने परम शिष्यों सरिपुत्र और महाभोग्दलायन को दीक्षा दी थी। सप्तपर्णी गुफा में भगवान बुद्ध के निर्वाण के बाद 500 मुख्य शिष्यों का प्रथम सम्मेलन हुआ था। समय तेजी से बीत रहा था और हम मुख्य कुण्ड (गरम जल की धारा) के पास पुल (वनगंगा नदी के ऊपर) पर होकर पहुँच रह थे। मलमास के कारण भीड़ इतनी थी कि एक पग बढ़ाना भी दूभर था। खैर हम सतधरवा, अब इसमें केवल पाँच ही जल धाराएँ बहती हैं, पहले इसमें सात जल धाराएँ थीं, इसलिए इनका नाम सतधरवा रखा गया था। इसकी उल्टी दिशा में ब्रह्मकुण्ड है जिसमें सीढ़ियाँ से उतरकर लोग स्नान कर रहे थे। ब्रह्मकुण्ड में इतनी भीड़ थी कि हमें कुचले जाने का डर सता रहा था। सतधरवा में धक्का-मुक्की के बाद हम लोग किसी तरह स्नान कर पाये। शुरू में तो हमें लगा कि हमारे बदन पर खौलता पानी डाल दिया गया हो मगर फिर स्नान इतना अच्छा लगने लगा कि उसके नीचे से हटने की इच्छा नहीं होती थी। इसके ऊपर व्यास कुण्ड में भी बहुत भीड़ थी। हम लोग आगे चढ़ते-चढ़ते हुए जरासंघ के बैठक पर पहुँचे। यहाँ से राजगीर का विहंगम दृश्य देखकर हमें लगा कि शायद उस जमाने में यह बैठक इसलिए बनवाई गई होगी ताकि राजगृह में किसी भी प्रवेश करने वालों पर यहाँ से कड़ी निगरानी रखी जा सके। वन गंगा एक ठंडे पानी की पहाड़ी नदी है। हमें बताया गया कि जरासंघ के बैठक से ऊपर जाने पर (इसमें करीब 2 घंटे लगने का अनुमान लोगों ने बताया) वहाँ एक बड़ा-सा झील है जिससे गरम जल की धारा इन कुण्डों में सालों भर अनवरत् बहती रहती है। इस कुण्ड से 1.5 किलोमीटर की दूरी पर पूरब दिशा में मखदूम कुण्ड और उससे कुछ आगे राम-सीता कुण्ड भी है। मशहूर संत मखदूम शाह शर्फूद्दीन (इन्होंने 12 वर्षों तक राजगीर में साधना की थी) के नाम पर यह कुण्ड दोनों ही समुदायों के लिए खुला रहता है। ये मनेर शरीफ के रहने वाले थे और इनका दरगाह बिहार शरीफ में है जहाँ भारत के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री भी जाकर सर झुकाते हैं। कुछ देर हम लोगों ने मलमास मेले का भी आनंद लिया। ऐसा विश्वास है कि मलमास के महीने में 36 कोटि हिन्दू देवी-देवताओं का यहाँ आगमन होता है और तब यह और भी पवित्र हो जाता है। कुछ ही वर्ष पहले राज्य सरकार ने यहाँ एक झील का निर्माण किया है जिसे घोड़ा-कटोरा नाम दिया गया है। यह सचमुच बहुत सुन्दर है और इसे देखकर हमें लगा हम किसी स्वप्न लोक में आ गये हैं। राजगृह की वादियाँ बहुत ही मनोरम एवं सुन्दर है। इसे देखकर हमारी सारी थकान मिट गई। राजगीर में राज्य सरकार सफारी, क्रिकेट स्टेडियम आदि का निर्माण करवा रही है जो आगंतुकों को आकर्षिक करेगी। हमने विदेशों से आये बुद्ध धर्म के अनुयायियों के द्वारा बनाये गये जापानी, वर्मा, तिब्बती बुद्ध मंदिर भी देखे जहाँ वहाँ के लोग पूजा में लीन थे। वीरायतन म्यूजियम भी एक दर्शनीय स्थान है। पुरातन नालन्दा विश्वविद्यालय की गरिमा फिर से स्थापित हो, इसके लिए यहाँ उसी नाम से नया विश्वविद्यालय बनाया गया है जो दर्शनीय है। हमें वह भवन बहुत सुन्दर लगा। कुछ और भी स्थान देखने लायक हैं किन्तु एक दिन में सब कुछ देखना संभव ही नहीं था। वहीं खाना खाकर रात लगभग 10.00 बजे हम

वापस अपने होटल में विश्राम हेतु बिहार शरीफ पहुँच गये। राजगीर हिन्दू धर्म, बौध धर्म और जैन धर्म तीनों की मिलन स्थली है। हमें अगले दिन फिर सबेरे उठना था। चाय-नाश्ता के बाद हम लोग विश्व विख्यात नालन्दा विश्वविद्यालय के खण्डहरों को देखने के लिए रवाना हो गये। आधा घंटा के सफर के बाद हम लोग पर्यटन विभाग के खिड़की पर थे जहाँ से प्रवेश शुल्क अदा कर इन खण्डहरों में प्रवेश के लिए हमने टिकट लिया। यहाँ कई गाइड आपको घेर लेंगे। कुछ स्वतंत्र गाइड रूप से पेशा करते हैं और कुछ सरकार से निबंधित हैं। खण्डहरों में घुमाने के लिए कोई 500 तो कोई 250 रुपए माँगता है। हमने 200 रुपए में एक गाइड लिया। नालन्दा के खण्डहरों के विषय में एक बात बहुत ही मशहूर है और वह यह कि यह भग्नावशेष जीवंत है। विश्व के कोने-कोने से लोग इसे देखने आया करते हैं। उस दिन एक दल श्रीलंका से और दूसरा जापान से आया हुआ था। सरकार की ओर से उन्हें सुरक्षा दी गई थी। हमने वहाँ अठ पहला कुआँ देखा जिसमें पानी भरा था। खाना बनाने का चूल्हा, छात्रों के रहने का स्थान, जली हुई पुस्तकालय का हिस्सा भी हमने देखा। कहते हैं कि विदेशी आक्रांता बख्तियार खिलजी ने इस पुस्तकालय को जला देने का आदेश दिया था। यहाँ इतनी पुस्तकें थीं कि वह तीन महीनों तक धू-धू कर जलता रहा था। यहाँ 10000 विद्यार्थियों और 1500 शिक्षकों के रहने की व्यवस्था थी। पाल वंश के राजाओं ने इसकी उन्नति के लिए आर्थिक मदद की थी और हर्षवर्धन ने 100 गाँवों की मालगुजारी इस विश्वविद्यालय के नाम कर दी थी ताकि यहाँ के छात्रों को भिक्षाटन नहीं करना पड़े और उनके समुचित और पौष्टिक खान-पान (दूध, दही, घी, आटा, चावल आदि-आदि) की सुचारु रूप से व्यवस्था होती रहे। गाइड ने हमें वे नाले और गोलनुमा बनावटों को दिखाया जिसके कारण एक कमरे में जलाई गई थोड़ी-सी लकड़ी से उत्पन्न गर्मी कई-कई कमरों को जाड़े के दिनों में गर्म रखा जाता था और गर्मी के दिनों में गोलनुमा बनावट से आती हवा कमरों को ठंडा किया करता था। खाना पकाना, स्नान करना आदि से जो पानी नालों में जाता था उसकी निकासी के लिए जमीन के काफी नीचे बड़ा-सा नाला बनाया गया था जिससे पूरा पानी परिसर के बाहर निकल जाता था। वहाँ कैसे और किस स्तर के शिक्षक रहे होंगे यह इसी से पता चलता है कि वहाँ पढ़ाई के लिए आने वाले छात्रों की परीक्षा पहले द्वारपाल लिया करते थे और सफल छात्रों को ही वहाँ प्रवेश मिल पाता था। इस प्राचीन विश्व विख्यात विश्वविद्यालय में जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, कंबोडिया, सोमालिया, तिब्बत, चीन आदि-आदि देशों के छात्र विद्याध्ययन के लिए आते थे। यहाँ ज्योतिष, इतिहास, गणित, साहित्य, विज्ञान, औषधि विज्ञान आदि की उस समय की श्रेष्ठतम् शिक्षा दी जाती थी। ह्वेनसांग और फाहियान ने विस्तृत रूप से इसका विवरण अपने संस्मरण में लिखा था। यहाँ खुदाई में कई तरह के पात्र, समुद्रगुप्त के समय का ताम पत्र, कुमारगुप्त काल का एक सिक्का तथा बुद्ध भगवान की मूर्तियाँ मिली हैं जो इसकी वैभव गाथा को स्थापित करती है। ह्वेनसांग ने 5वीं शताब्दी में इस विश्वविद्यालय के विषय में बहुत कुछ लिखा है। वह लिखता है कि यहाँ उसने भगवान बुद्ध की एक विशाल ताम्बे की भव्य और सुन्दर मूर्ति देखी थी जिसकी ऊँचाई 80 फुट थी। नालन्दा विश्वविद्यालय के खण्डहरों के सामने विश्व में कहीं के भी अवशेष नहीं टिकते हैं। यह शायद विशेष इसलिए भी है कि इसे देखकर हमें ऐसा लगता है कि जैसे एक-डेढ़ सौ वर्ष पहले ही इसे बनाया गया होगा। नालन्दा को पूरी तरह बारीकी से देखने के लिए एक-दो दिन का समय आवश्यक है किन्तु हमारा कार्यक्रम कम समय के लिए बनाया गया था। अत: हमें अपना लोभ संवरण करना पड़ा। गाइड ने हमें बताया कि वहाँ से कुछ ही दूरी पर बड़गाँव का छठ तालाब है जहाँ वर्ष में दो बार (चैती और कार्तिक) छठ महापर्व का आयोजन होता है और राज्य के कोने-कोने से दोनों ही अवसरों पर 6 से 7 लाख तक श्रद्धालुओं का यहाँ आगमन होता है। यहाँ एक मंदिर है जिसमें सूर्य देव, उनकी पत्नियों आदि की मूर्तियाँ हैं। हम लोग वहाँ नहीं जा पाये। गाइड ने हमें यह भी बताया कि भगवान श्री कृष्ण के पुत्र साम्ब को यहीं पर कुष्ठ रोग से मुक्ति मिली थी। वहाँ होटल में खाना खाकर हम जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान महावीर की समाधि स्थल पावापुरी के लिए निकल गये। दिन का तीन बज चुका था और थकान हम सबों पर हावी था। नालन्दा से पुन: बिहार शरीफ के उस मोड़ पर हम पहुँचे जहाँ से नवादा के लिए सड़क जाती है ; इसी रास्ते से हम लोग बिहार शरीफ पहुँचे थे। करीब 20-22 किलोमीटर की दूरी तय करके हम लोग पावापुरी पहुँच गये। पावा गाँव जाने के सड़क पर एक द्वार बना हुआ है। यहाँ गाँव मंदिर, दिगम्बर जैन मंदिर (कुंदलपुर), ह्वेनसांग मेमोरियल तथा अन्य कई जैन मंदिर भी हैं जहाँ जैन समुदाय के लोगों का सालों भर आना-जाना लगा ही रहता है। शाम के वक्त से पहले हम यहाँ का प्रसिद्ध जल मंदिर देख लेना चाहते थे सो हम गाड़ी से मंदिर जाने के रास्ते पर चल पड़े। कुछ ही देर बाद हमें सामने ही जल मंदिर दिखने लगा। मंदिर के चारों ओर तालाब है और उसमें पानी भरा हुआ है। यह जल मंदिर एक टापू के समान स्थान पर निर्मित है और वहाँ तक पहुँचने के लिए एक पुल बनाया गया है जिससे यात्रीगण/श्रद्धालुगण पैदल वहाँ तक आते-जाते हैं। संध्या करीब थी, हल्की हवा चल रही थी, लालिमा छाने लगी थी, वहाँ का दृश्य अपूर्व था और ऐसे समय में हम लोग भगवान महावीर के इस समाधि स्थल पर थे जो आज जल मंदिर के नाम से विख्यात है। साफ जल में बड़ी-बड़ी मछलियाँ तैर रही थीं। लगता था अभी हाल में ही इस तालाब की सफाई हुई थी क्योंकि तालाब के बाहरी किनारों पर जलकुम्भी का ढ़ेर पड़ा था। हम लोग फरही साथ लेकर गये थे। मछलियाँ बिना डर के किनारे पर आकर हमारे हाथों से चावल के फरही खा रही थीं। मंदिर के सेवादार ने हमें बताया कि इन मछलियों को कोई नहीं पकड़ता और यदि कोई मछली जीवन मुक्त हो जाती है तो उसे यहाँ दफना दिया जाता है। शाम ढलने लगी थी। अगल-बगल के एक-दो मंदिर जल्दी-जल्दी हमने देखे और हम पावापुरी से निकल पड़े। होटल आकर हमने खाना खाया, विश्राम किया, अपने सामान गाड़ी में रखे और इस यात्रा की यादें संजोये वापासी के लिए निकल पड़े। सच कहें तो हमें इन स्थानों को ठीक से देखने के लिए कम-से-कम चार दिनों का कार्यक्रम हमें बनाना चाहिए था पर खैर हमारी यह यात्रा बहुत सुखद और अच्छी रही और हम सुबह 5.00 बजते-बजते सकुशल अपने आवास पर वापस पहुँच गये थे। इस यात्रा वृतांत को पढ़कर यदि किसी के मन में भी इन स्थानों को देखने की उत्कंठा जगे तो मैं अपना यह प्रयास सफल समझूँगा।

*फ्लैट नं.2सी, अंजली अपार्टमेंट, हातमा, काँके रोड, राँची।

हिन्दी से हिंदुस्तान है, तभी तो हिन्दी हमारी शान है।

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य अतिथि झारखण्ड के महामहिम राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार का स्वागत करते संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी। साथ में हैं राँची विश्वविद्यालय, राँची के कुलपति डॉ.अजीत कुमार सिन्हा।

संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में उपस्थित देश के कई राज्यों से आये तसर रेशम वैज्ञानिकों, किसानों एवं मीडिया कर्मियों का एक दृश्य।

संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान पत्रकारों से वार्ता करते झारखण्ड के महामहिम राज्यपाल श्री संतोष कुमार गंगवार। साथ में हैं संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

राँची दौरे के दौरान जम्मू व कश्मीर के महामहिम राज्यपाल श्री मनोज सिन्हा का स्वागत करते इस संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

इस संस्थान द्वारा शोध विस्तार एवं अन्य गतिविधियों के सम्यक कार्यान्वयन हेतु इस संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी को केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री पी.शिवकुमार, भा.व.से. द्वारा प्रशंसा-पत्र प्रदान किया गया।

इस संस्थान में आयोजित अनुसंधान सलाहकार समिति की 55वीं बैठक में उपस्थित होने वाले वैज्ञानिकों/अधिकारियों का एक दृश्य।

के.रे.बो.-के.त.अ. व प्र.सं., राँची एवं महाराष्ट्र राज्य रेशम विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आरमोरी, गढ़चिरौली, महाराष्ट्र में आयोजित तसर रेशम कृषि मेला में मुख्य अतिथि का स्वागत करते इस संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

के.रे.बो.-के.त.अ. व प्र.सं., राँची एवं महाराष्ट्र राज्य रेशम विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आरमोरी, गढ़चिरौली, महाराष्ट्र में आयोजित तसर रेशम कृषि मेला में सभा को सम्बोधित करते इस संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

इस संस्थान द्वारा चन्द्रशेखर सिंह नगर भवन, बाँका (बिहार) में आयोजित तसर रेशम कृषि मेला का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते श्री अंशुल कुमार, भा.प्र.से., जिलाधिकारी, बाँका (बिहार), इस संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी एवं अन्य गणमान्य अतिथि।

इस संस्थान द्वारा चन्द्रशेखर सिंह नगर भवन, बाँका (बिहार) में आयोजित तसर रेशम कृषि मेला में उपस्थित वैज्ञानिकों एवं किसानों का एक दृश्य।

इस संस्थान द्वारा दुमका में आयोजित तसर रेशम कृषि मेला में इस संस्थान द्वारा प्रकाशित राजभाषा गृह पत्रिका रेशम वाणी, अंक-60 का विमोचन करते मेला के गणमान्य अतिथियों एवं इस संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

इस संस्थान द्वारा दुमका में आयोजित तसर रेशम कृषि मेला में उपस्थित वैज्ञानिकों/तसर कृषकों का एक दृश्य

उत्कर्ष ओडिशा : मेक इन ओडिशा कॉन्क्लेव 2025 के तहत भुवनेश्वर, ओडिशा में आयोजित कार्यक्रम में ओडिशा के सिमलीपाल बायोस्फेयर में उष्णकटिबंधीय तसर रेशमकीट की मोदल इकोरेस के इन-सिटू संरक्षण के लिए इस संस्थान एवं वस्त्र और हथकरघा निदेशालय- रेशम उत्पादन क्षेत्र, ओडिशा के साथ समझौता ज्ञापन का एक दृश्य।

उत्कर्ष ओडिशा : मेक इन ओडिशा कॉन्क्लेव 2025 के तहत भुवनेश्वर, ओडिशा में आयोजित कार्यक्रम में इस संस्थान द्वारा लगाये गये स्टॉल पर गणमान्य अतिथियों को तसर रेशमकीट के बारे में जानकारी देते संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

इस संस्थान में देश के विभिन्न राज्यों के आईएफएस अधिकारियों के लिए तसर रेशम उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर आयोजित प्रशिक्षण के दौरान रेशमकीट भोज्य पौधे आसन एवं अर्जुन नर्सरी के बारे में जानकारी देते संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

इस संस्थान द्वारा नैनोपोर आधारित ट्रांसक्रिप्टोम सीक्वेंसिंग और डेटा विश्लेषण पर आयोजित पाँच दिवसीय हैण्डस- ऑन प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित इस संस्थान एवं भारत के अन्य 10 राज्यों से आये वैज्ञानिकों एवं अन्य कर्मचारियों का एक दृश्य।

संस्थान में आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा में शपथ लेते संस्थान के वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी।

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर के सदस्य सचिव श्री पी.शिवकुमार, भा.व.से. तथा ग्रामीण उद्योग विभाग (रेशम क्षेत्र), छत्तीसगढ़ के निदेशक श्री यशवंत कुमार, भा.प्र.से. द्वारा तसर रेशमकीट की रैली इकोरेस के स्व-स्थाने संरक्षण के लिए परियोजना के अंतर्गत समझौता ज्ञापन का एक दृश्य।

मीडिया सुर्खियाँ

गिरिराज सिंह ने केंद्रीय रेशम बोर्ड-सीटीआरटीआई व हस्तशिल्प रांची के प्रगति की समीक्षा की

रेशम के कीटपालन की प्रणाली विकसित करने की जरूरत: मंत्री

कीटपालन की प्रणाली विकसित करने की आवश्यकता: श्री गिरिराज सिंह

झारखंड के बुनकरों व किसानों की आमदनी बढ़ाने पर दें जोर : गिरिराज

तसर रेशम कृषकों की सफलता को लेकर आयेगी आयाम : प्रो. बिमल प्रसाद

रेशम सखी के रूप में 10 महिलाओं ने लिया प्रशिक्षण

किसानों को दी गई रेशम उत्पादन की जानकारी

तसर उत्पादन से रोजगार सृजन की संभावनाएं: डीडीसी

तसर रेशम उत्पादन से ग्रामीण रोजगार सृजन की असीम संभावना: अभिजीत सिन्हा

बुनकरों और किसानों की आमदनी बढ़ाने पर दें जोर : गिरिराज

विज्ञान से विकास की असीम संभावनाएं: डा एन बी चौधरी निदेशक सीएसबी सीटीआरटीआई रांची

ज्ञान-विज्ञान के तालमेल से समाज को बना सकते हैं सक्षम: डॉ. चौधरी

तसर संस्थान में जीनोम सिक्वेंसिंग पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

जलवायु परिवर्तन का तसर उत्पादन पर अधिक प्रभाव

प्रजनन केंद्र चक्रधरपुर का किया अवलोकन

तसर रेशम उद्योग में नवाचार से उद्यमिता को मिल रहा बढ़ावा

जीनोम सिक्वेंसिंग पर प्रशिक्षण महत्वपूर्ण

रेशम उद्योग की गतिविधियों से कराया अवगत

ऋषिकेश एक पवित्र तीर्थ स्थल

हरीशचंद्र पांडे*

उत्तराखंड की पावन धरा कुदरत के अनोखे सौंदर्य से सराबोर है। उत्तराखंड को देवभूमि भी कहा जाता है। ऋषिकेश यहाँ का एक सुकूनदायक तीर्थ स्थल है। हिमालय का प्रवेश द्वार ऋषिकेश जहाँ पहुँचकर गंगा पर्वत मालाओं को पीछे छोड़ समतल धरातल की तरफ आगे बढ़ जाती है। हरिद्वार से मात्र 24 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ऋषिकेश विश्व प्रसिद्ध एक योग केंद्र है। ऋषिकेश का शांत वातावरण कई विख्यात आश्रमों का घर है। उत्तराखण्ड में समुद्र तल से 1360 फीट की ऊंचाई पर स्थित ऋषिकेश भारत के सबसे पवित्र तीर्थ स्थलों में एक है। हिमालय की निचली पहाड़ियों और प्राकृतिक सुन्दरता से घिरे इस धार्मिक स्थान से बहती गंगा नदी इसे अतुल्य बनाती है। ऋषिकेश को केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री का प्रवेश द्वार माना जाता है। कहा जाता है कि इस स्थान पर ध्यान लगाने से मोक्ष प्राप्त होता है। हर साल यहाँ के आश्रमों के बड़ी संख्या में तीर्थ यात्री ध्यान लगाने और मन की शान्ति के लिए आते हैं। विदेशी पर्यटक भी यहाँ आध्यात्मिक सुख की चाह में नियमित रूप से आते रहते हैं। ऋषिकेश से सम्बंधित अनेक धार्मिक कथाएँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि समुद्र मंथन के दौरान निकला विष शिव ने इसी स्थान पर पिया था। विष पीने के बाद उनका गला नीला पड़ गया और उन्हें नीलकंठ के नाम से जाना गया। एक अन्य अनुश्रुति के अनुसार भगवान राम ने वनवास के दौरान यहाँ के जंगलों में अपना समय व्यतीत किया था। रस्सी से बना लक्ष्मण झूला इसका प्रमाण माना जाता है। 1939 ई. में लक्ष्मण झूले का पुनर्निर्माण किया गया। यह भी कहा जाता है कि ऋषि राभ्या ने यहाँ ईश्वर के दर्शन के लिए कठोर तपस्या की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान ऋषिकेश के अवतार में प्रकट हुए। तब से इस स्थान को ऋषिकेश नाम से जाना जाता है।

लक्ष्मण झूला : गंगा नदी के एक किनारे को दूसरे किनारे से जोड़ता है। यह झूला नगर की विशिष्ट की पहचान है। इसे 1939 में बनवाया गया था। कहा जाता है कि गंगा नदी को पार करने के लिए लक्ष्मण ने इस स्थान पर जूट का झूला बनवाया था। झूले के बीच में पहुंचने पर वह हिलता हुआ प्रतीत होता है। 450 फीट लम्बे इस झूले के समीप ही लक्ष्मण और रघुनाथ मंदिर हैं। झूले पर खड़े होकर आस-पास के खूबसूरत नजारों का आनंद लिया जा सकता है। लक्ष्मण झूला के समान राम झूला भी नजदीक ही स्थित है। यह झूला शिवानंद और स्वर्ग आश्रम के बीच बना है इसलिए इसे शिवानंद झूला के नाम से भी जाना जाता है। ऋषिकेश मैं गंगाजी के किनारे की रेट बड़ी ही नर्म और मुलायम है, इस पर बैठने से यह माँ की गोद जैसी स्नेहमयी और ममतापूर्ण लगती है, यहाँ बैठकर दर्शन करने मात्र से हृदय मैं असीम शांति और रामत्व का उदय होने लगता है।

त्रिवेणी घाट : ऋषिकेश में स्नान करने का यह प्रमुख घाट है जहां प्रात: काल में अनेक श्रद्धालु पवित्र गंगा नदी में डुबकी लगाते हैं। कहा जाता है कि इस स्थान पर हिन्दू धर्म की तीन प्रमुख नदियों गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम होता है। इसी स्थान से गंगा नदी दायीं ओर मुड़ जाती है। शाम को होने वाली यहां की आरती का नजारा बेहद आकर्षक होता है।

राम झूला पुल : स्वामी विशुद्धानन्द द्वारा स्थापित यह आश्रम ऋषिकेश का सबसे प्राचीन आश्रम है। स्वामी जी को काली कमली वाले नाम से भी जाना जाता था। इस स्थान पर बहुत से सुन्दर मंदिर बने हुए हैं। यहां खाने-पीने के अनेक रेस्तरां हैं जहां सिर्फ शाकाहारी भोजन ही परोसा जाता है। आश्रम के आस-पास हस्तशिल्प के सामान की बहुत सी दुकानें हैं।

नीलकंठ महादेव मंदिर : लगभग 5500 फीट की ऊंचाई पर स्वर्ग आश्रम की पहाड़ी की चोटी पर नीलकंठ महादेव मंदिर स्थित है। कहा जाता है कि भगवान शिव ने इसी स्थान पर समुद्र मंथन से निकला विष ग्रहण किया गया था। विषपान के बाद विष के प्रभाव से उनका गला नीला पड़ गया था और उन्हें नीलकंठ नाम से जाना गया था। मंदिर परिसर में पानी का एक झरना है जहां भक्तगण मंदिर के दर्शन करने से पहले स्नान करते हैं।

भरत मंदिर : यह ऋषिकेश का सबसे प्राचीन मंदिर है जिसे 12वीं शताब्दी में आदि गुरु शंकराचार्य ने बनवाया था। भगवान राम के छोटे भाई भरत को समर्पित यह मंदिर त्रिवेणी घाट के निकट ओल्ड टाउन में स्थित है। मंदिर का मूल रूप 1398 में तैमूर आक्रमण के दौरान क्षतिग्रस्त कर दिया गया था। हालांकि मंदिर की बहुत सी महत्वपूर्ण चीजों को उस हमले के बाद आज तक संरक्षित रखा गया है। मंदिर के अंदरूनी गर्भगृह में भगवान विष्णु की प्रतिमा एकल शालीग्राम पत्थर पर उकेरी गई है। आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा रखा गया श्रीयंत्र भी यहां देखा जा सकता है।

कैलाश निकेतन मंदिर : लक्ष्मण झूले को पार करते ही कैलाश निकेतन मंदिर है। 12 खंडों में बना यह विशाल मंदिर ऋषिकेश के अन्य मंदिरों से भिन्न है। इस मंदिर में सभी देवी-देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं।

वशिष्ठ गुफा : ऋषिकेश से 22 किमी. की दूरी पर 3000 साल पुरानी वशिष्ठ गुफा बद्रीनाथ-केदारनाथ मार्ग पर स्थित है। इस स्थान पर बहुत से साधुओं विश्राम और ध्यान लगाए देखे जा सकते हैं। कहा जाता है यह स्थान भगवान राम और बहुत से राजाओं के पुरोहित वशिष्ठ का निवास स्थल था। वशिष्ठ गुफा में साधुओं को ध्यान मग्न मुद्रा में देखा जा सकता है। गुफा के भीतर एक शिवलिंग भी स्थापित है।

गीता भवन : राम झूला पार करते ही गीता भवन है जिसे 1950 ई. में श्रीजय दयाल गोयन्का जी ने बनवाया गया था। यह अपनी दर्शनीय दीवारों के लिए प्रसिद्ध है। यहां रामायण और महाभारत के चित्रों से सजी दीवारें इस स्थान को आकर्षण बनाती हैं। यहां एक आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी और गीता प्रेस गोरखपुर की एक शाखा भी है। प्रवचन और कीर्तन मंदिर की नियमित क्रियाएं हैं। शाम को यहां भक्ति संगीत की आनंद लिया जा सकता है। तीर्थ यात्रियों के ठहरने के लिए यहां सैकड़ों कमरे हैं। ऋषिकेश जो भी एकबार आता है वह इस पावन स्थल की यात्रा को भूल नहीं पाता। यहाँ पर उचित दर पर होटल तथा गेस्ट हाउस मिल जाते हैं। राजधानी दिल्ली से बस या रेल मार्ग से यहाँ आया जा सकता है। देहरादून से यहाँ तक सीधी बस हैं। दिल्ली से देहरादून तक हवाई मार्ग से आने की अच्छी सुविधा है।

*Shubham vihar, R k tent road, Kusumkhera, Haldwani.

अजमेर शरीफ में सुकून है

पूनम पांडे*

अजमेर की दरगाह आना किसी आध्यात्मिक सपने का सच हो जाना है। जो भी यहाँ पहली बार आता है वो इसे अद्भुत और सुकूनदायक ही पाता है। अजमेर शरीफ को तो अजमेर के दिल की धड़कन कहा ही जाता है। संगीत प्रेमी तो यहाँ पर हर समय होने वाली सूफी कव्वाली सुनकर रोमांचित हो जाते हैं। विश्व विख्यात अजमेर शरीफ की चौखट चूमना मानो मन की अपार खुशी हासिल करना है। यहाँ पर गुलाब के फूल और चादर दोनों ही पेश किये जाते हैं। दुनिया भर में साम्प्रदायिक सौहार्द का सन्देश फैलाने वाले सूफी संत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह अजमेर को धार्मिक पर्यटन के क्षेत्र में विश्व पटल पर अंकित करवाती है। बुलंद दरवाजा, देग, महफिलखाना, अकबरी मस्जिद, शाहजहांनी मस्जिद, बेगमी दालान गरीब नवाज के मुरीदों की निशानियों के रूप में नजर आती है वही बसंत में कव्वालियों के साथ पीले फूले की पेशकश, देर रात तक चलने वाली महफिलों से अकीदत का सुर आबाद रहता है। हर साल ख्वाजा ग़रीब नवाज के उर्स में लाखों की संख्या में जायरीन यहाँ आते हैं तब पूरा शहर सूफी रंगो से सजा नजर आता है। ऐसा कहते हैं कि ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती साहब (र.अ.) ने अपने जीवन में हज करने के मक्का-मदीना की अनगिनत बार पैदल यात्रा की। इसके बाद गुरु के आदेश से अपने चालीस साथियों के साथ हिन्दुस्तान आये। लाहौर में विश्राम करने के बाद जब वह आनासागर अजमेर पहुँचे तो उन्होंने यहाँ पर ठहरने का फैसला किया। वर्ष 291 हिजरी मुताबिक ईस्वी सन् 1224 में हिन्दुस्तान में उस समय गुलाम वंश के बादशाह इलतुतमिश (कुतबुदीन एबक का जंवाई और रजिया सुलतान का पिता) का शासन था और वह ख्वाजा साहब का मुरीद था। ख्वाजा साहब ने दिल्ली की दो बार यात्रा की और बादशाह से कहकर अजमेर के किसानों की जब्त की गई जमीन को छुड़ाने के बाद उन सभी किसानों के हक में आदेश जारी कराये। दिल्ली में उनके शिष्य हजरत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी माने हुए सूफी संत थे। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती साहब सरल हृदय के संत थे और उनकी सादगी, इंसानियत, दया, सबके साथ शांति और मदद, दुखी लोगों की सेवा की भावना ने लोगों को उनका मुरीद बना दिया। वे दिन-रात खुदा की इबादत में मशगूल रहते थे। अजमेर में ख्वाजा साहब आनासागर के किनारे खोबरनाथ के भैरव मंदिर की गुफा में या वर्तमान स्थान पर बनी मजार वाले स्थान पर झोपड़ी बनाकर अपने ध्यान में डूबे रहते थे। ख्वाजा मुइनुद्दीन हसन चिश्ती सूफी परम्परा में चिश्तिया सिलसिले के ऐसे प्रवर्तक मार्गदर्शक रहे हैं जो उनके बाद संसार में प्रसिद्ध हो गया। अंग्रेजों के शासन काल में ख्वाजा साहब के प्रति सभी धर्मों के लोगों की आस्था देखकर लार्ड कर्जन ने अपनी किताब में लिखा कि उसने हिन्दुस्तान में एक कब्र को लोगों के दिलों पर राज करते देखा है। एक कहावत है कि ख्वाजा जी की चौखट से कोई निराश नहीं लौटता है। बालीवुड की नामी-गिरामी हस्तियों से लेकर जाने-माने उद्योगपति और कई देशो के राष्ट्राध्यक्ष यहाँ हाजिरी देते रहते हैं। जाने-माने संगीतकार रहमान यहाँ हर साल जियारत करने हाजिर होते हैं। रहमान तो यहाँ पहली बार आकर इतने भावुक हो गये कि तब ही उन्होंने अजमेर में एक घर खरीद लिया ताकि उनका परिवार और सम्बन्धी जब चाहें यहाँ आ सकें। संसार भर में लोकप्रिय अजमेर शरीफ दरगाह अजमेर जंक्शन से केवल दो किलोमीटर की दूरी पर है, जहाँ तक जाने का छोटा-सा पैदल रास्ता भी है जो सिर्फ पंद्रह से सोलह मिनट पैदल चल कर आराम से तय किया जा सकता है। इस पूरे रास्ते में जायरीनों का जत्था मन को उत्साहित कर देता है। अजमेर जंक्शन से लेकर दरगाह तक कम-से-कम चार सौ छोटे-बड़े होटल व गेस्ट हाउस हैं जो मात्र साठ रुपए प्रतिदिन से लेकर पाँच सितारा सुविधा के साथ पाँच हजार रुपए प्रतिदिन की कीमत पर उपलब्ध हो जाते हैं। दरगाह परिसर से लगा हुआ एक शानदार बाजार भी है जो देखते ही बनता है। इस बाजार का कुल क्षेत्रफल चार से पाँच किलोमीटर तक है। यहाँ हर तरह का सामान मिलता है। ख्वाजा साहब की इस अनोखी दरगाह में हाजिरी लगाने और मन्नत माँगने वाले लाखों की तादाद में आते हैं। यहाँ हर आमो खास जायरीन को खुली छूट है कि वह पूरी शिद्दत से जब चाहे, जहाँ पर चाहे, जियारत कर सकता है। यह दरगाह इतनी खुली-खुली और साफ-सुथरी रहती है कि चादर और फूल पेश करने के बाद भी जायरीन वापस नहीं जाते। मंत्र-मुग्ध होकर बैठे रहते हैं। चारों तरफ गुलाब की महक लोबान की खुशबू से माहौल लक-दक रहता है। यह विशाल आस्ताने और खुले-खुले बरामदों से सुसज्जित मजार सारी दुनिया में ख्वाजा के मुरीदों के दिल में सुकून का अनूठा अहसास पैदा कर देती है।

*Durgesh, Pushker road, kotra, Ajmer

कहानी

सरपंच की बेटी

डॉ. प्रदीप उपाध्याय*

आज वह बहुत खुश थी। उसने कभी यह कल्पना भी नहीं की थी कि उसे गाँव अच्छे लगने लगेंगे। हालाँकि वह गाँव में ही पली-बढ़ी थी, पढ़ाई भी गाँव में ही की थी लेकिन शहरों का सम्मोहन उसके मन में समाया हुआ था किन्तु फिर भी वह शहर में कहाँ जा पाई थी, गई भी तो जल्दी ही मोहभंग हो गया। जब शादी की बात आई थी तब उसने कहाँ गाँव में शादी करने के लिए हाँ कही थी किन्तु फिर भी दसवीं फेल राम प्रसाद से ब्याह दी गई। उसने अपने पिता से कहा भी था कि दादा मुझे गाँव में शादी नहीं करनी है। पिता किशन को छोड़कर किसी ने भी उसका साथ नहीं दिया था। किशन ने कहा भी था कि सरपंच की बेटी ऐसे साधारण घर में ब्याहेंगे तो लोग-बाग क्या कहेंगे और फिर सरपंच की बेटी क्या ससुराल में रोटी बेलने का काम करेगी ! किशन की बात का प्रतिवाद करते हुए रूक्मा ने कहा भी था - "रूक्मा से रूक्मा देवी बना देने से कोई

देवी नहीं हो जाती और न ही चूल्हे-चौके से मुक्ति पा जाती है। मुझे सरपंच बन जाने के बाद भी चूल्हा ही तो फूँकना पड़ रहा है। जहाँ भी सरकारी काम-काज के लिए जाना पड़ता है तो तुम्हारे साथ घूँघट ओढ़े ही तो कागजों पर अँगूठा लगाने का काम करना रहता है। सब कुछ तो सरपंच पति ही रहते हैं जैसे की तुम हो। ऐसी अँगूठा वाली सरपंची से तो खेती-बाड़ी की मजूरन और घर की चूल्हा फूँकन भली है।" तब दादा ने बात काटते हुए जीज्जी को जोरदार डाँट लगाई थी। फिर भी हर तरफ से उसकी बात नहीं मानी गई, आखिर कितना तो रोई थी, गिड़गिड़ाई थी...माँ ने तो बिल्कुल भी साथ नहीं दिया था बल्कि वह तो टस-से-मस नहीं हुई और अड़ ही गई थी कि ब्याह तो राम प्रसाद से ही करना पड़ेगा। बिरादरी के लोगों ने राम प्रसाद के परिवार की बहुत ज्यादा तारीफ क्या कर दी, घर भर के लोग एक तरफ हो गए थे, ताऊ, काका भाई सभी तो एक तरफ हो गए थे। मजबूरी में किशन को भी सहमति देना पड़ी। हाँ किशन को अपनी सरपंची का गुरुर जरूर था। हालाँकि उसकी पत्नी सरपंच थी लेकिन हर कोई उसे ही सरपंच कहता था। वैसे भी विधायक गोविंद जी का वह खास आदमी था और वफादार सिपाही ही बना रहा और बदले में महिला आरक्षित सीट पर उसकी औरत को ही तो सरपंची मिल गई थी। जाहिर सी बात है कि पद-प्रतिष्ठा आदमी की ठसक तो बढ़ा ही देते हैं लेकिन फिर भी कुटुम्बी और जाति-समाज की बात और मान-मर्यादा तो रखनी ही पड़ती है। जाति-समाज के लोगों ने तर्क भी दिया कि सीधे-सच्चे लोग हैं, खेती बाड़ी भी है और लड़का भी पढ़ा-लिखा है, लड़की निभ जाएगी और फिर हमारे समाज के बहुत लोग हैं वहाँ पर, क्या पता कल को रूक्मा जैसा भाग्य छोरी का भी जाग जाए। बूढ़े ताऊ ने और ज्ञान की बात रख दी - "किसना, रूक्मा भी तो अनपढ़ थी और शादी के बाद मजदूरी करने जाती ही थी लेकिन भाग्य ने पलटा खाया और देखो आज वह सरपंच है। क्या पता छोरी का भाग्य उससे मजदूरी ही नहीं करवाए।" उसने इन सब बातों का प्रतिवाद भी किया था और कहा भी -"भाग्य वगैरह तो बाद की बात है। आज जो सामने दिख रहा है, उसकी बात करना चाहिए। जहाँ तक उन लोगों के सीधे-सादे होने की बात है, ऊपर से सीधे-सादे दिखने वाले लोग जरूरी नहीं कि सीधे-सच्चे ही हों लेकिन उसकी बात का किसपर असर होना था। हाँ, ससुराल जाकर उसे तत्काल ही समझ में आ गया था कि जिन्हें सीधा-सादा बताया जा रहा था, वे इतने सीधे-सादे हैं नहीं। सास सौरम तो उसे फूटी आँख नहीं सुहाती थी और ससुर दरियाव तो दिखने में अल्लाह की गाय...लेकिन भीतर तो जैसे कालिमा कूट-कूटकर भरी हुई थी। कितना काइयां है वह...और पैसा तो जैसे उससे छूटता ही नहीं है...मुंजी कहीं का! शादी के बाद जब पहली बार वह मायके लौटी थी तो दो साल तक उसने ससुराल में वापस कदम ही नहीं रखा था लेकिन नाते-रिश्तेदारों के दबाव में उसकी बिदाई हो पाई थी। उसने अपने पिता से कहा भी था कि -"दादा, तुमने भी मुझे किसके साथ बाँध दिया। वो लोग दाड़की-मजूरी पर जाते हैं तो जाएँ...मेरी बला से। पर मैं तो मजूरी करने नहीं जाने वाली। मैं मजूरी पर जाऊँगी तो तुम्हारा ही नाम खराब होगा।" पिता किशन को गुस्सा तो बहुत आया और अपने समधी को फोन पर पचास बातें भी सुनाई थी। कह भी दिया था कि मेरी छोरी पढ़ी-लिखी है, वह दाड़की-मजदूरी नहीं करेगी लेकिन माँ ने उसे समझाने के लिहाज से बोला भी था कि- "निम्मी बेटा, मजूरी करने से कोई छोटा थोड़े ही हो जाता है और हम लोग तो खेती-किसानी वाले लोग हैं। हमें तो खेती-बाड़ी के काम से जी नहीं चुराना चाहिए। सरपंची आज है, कल नहीं रहेगी तब तो हमें दाड़की-मजदूरी ही करनी पड़ेगी। उस समय कौन दूसरा पेट भरने आएगा।" तब उसने पलटते हुए कहा था कि- "जीज्जी, क्या इसी दिन के लिए मुझे पढ़ाया-लिखाया था। मैं भी दसवीं पास हूँ और फिर तू खुद भी तो गाँव की सरपंच है। जब गाँव में खबर लगेगी तो लोग क्या कहेंगे। वे बोलेंगे कि छोरी को कैसी जगह ब्याह दिया! ससुराल वाले छोरी से मजूरी कराते हैं! गाँव भर में तेरी क्या इज्जत रह जाएगी।" "अरे पेट भरने के लिए काम करने से कौन-सी इज्जत खराब होती है। कोई भी काम छोटा-बड़ा नहीं होता। पहले हम भी तो दाड़की -मजदूरी ही करते थे। हाँ, मेरी एक बात ध्यान रखना कि तू पढ़ी-लिखी है। गाँव की समस्याओं के बारे में अच्छी तरह से जानती है। तूझे अगर कभी गाँव सरपंच का मौका मिले तो पीछे मत हटना। वहां अभी से लोगों से मेल-जोल बढ़ाना शुरू कर देना। और हां, मेरे जैसी सरपंची मत करना। घूँघट ओढ़े, अंगूठा लगाने वाली सरपंच।" तब उसने कह दिया था कि "तेरे से तो बात करना ही बेकार है। तू तो दादा से बोल दे और राम प्रसाद को शहर में काम दिला दे। अब मुझे गाँव में रहना भी नहीं है और न ही मजदूरी करनी है और न ही सरपंची करना।" उधर किशन ने समधी से लड़-झगड़कर राम प्रसाद की नौकरी शहर में एक बिल्डर के यहाँ लगवा दी थी लेकिन शहर के खर्चे उठाना क्या मामूली बात है और फिर वहाँ कोई सरपंची का प्रभाव तो चल नहीं सकता था। नौबत यह आ गई थी कि राम प्रसाद के साथ उसे भी कोई काम खोजना जरूरी लगने लगा था। आखिर राम प्रसाद भी तो चौकीदारी के काम पर ही लगा था। वह हर बार ताने भी देता था कि इससे तो अच्छा हमारे गाँव में ही दाड़की-मजदूरी करना था। लोगों की गंदी निगाहों से खुद को बचते-बचाते निम्मी वापस गाँव लौटने का मन बना चुकी थी। इन तीन-चार वर्षों में वे भी तो दो से चार हो गए थे और अंततः उन्होंने वापस गाँव लौटने का फैसला कर लिया था। तब भी उसने सोच रखा था कि भले ही वह कम पढ़ी है लेकिन जितना भी पढ़ी है, उसका कहीं-न-कहीं बेहतर उपयोग जरूर करेगी। ससुराल के गाँव में सास-ससुर के विरोध के बाद भी उसने सामाजिक कामों में भाग लेना चालू कर दिया था और एक दिन भाग्य ने साथ दे दिया। पंचायतों के चुनाव में इस बार देवली गाँव महिला आरक्षित सीट घोषित हुई और पढ़ी-लिखी महिला के नाते विधायक गोविंद जी की सिफारिश पर उसे टिकट मिल गया और उसने जीत भी हासिल कर ली। हाँ, आज वह खुश जरूर थी लेकिन उसने यह भी निश्चय कर लिया था कि गाँव प्रमुख होने के नाते सारे फैसले वही करेगी। राम प्रसाद का सरपंच पति के रूप में दखल उसे स्वीकार नहीं होगा। वह वास्तविक सरपंच बनकर गाँव के विकास के लिए आगे आएगी।

*16, अम्बिका भवन, उपाध्याय नगर, मेंढकी रोड, देवास, म.प्र.।

एडजस्ट

रेखा भारती मिश्रा*

उम्र का पंद्रहवाँ साल था जब मालती का विवाह हुआ। वह तो अभी जवानी की दहलीज पर ही थी परंतु पति उससे दुगुनी उम्र का। अब माता-पिता का दोष कहे या नियति का। उस जमाने में लड़कियाँ विरोध भी कहाँ कर पाती थी। कैसा भी वर उन्हें मिल जाए, उसे स्वीकार करना ही पड़ता था। मालती पूरी तरह गृहस्थी में रम गई। खुद को पति और परिवार के लिए समर्पित कर चुकी थी। जैसे गौरैया तिनका-तिनका चुनकर घोंसला बनाती है, वैसे ही मालती एक-एक पल को मोती सा पिरोकर अपनी गृहस्थी सजा रही थी। देखते-देखते शादी के सात साल बीत गए लेकिन अभी तक मालती की गोद सूनी थी। परिवार वाले ताने सुनाते ही रहते थे लेकिन अब तो पड़ोस और मोहल्ले वाले भी उलाहना देने से नहीं चूकते थे। उसके विवाह के बाद जो लड़कियाँ ब्याही गई, उनके बच्चे स्कूल जाना भी आरम्भ कर दिए थे। अब धीरे-धीरे यह टीस मालती के दिल को भेदने लगी। उसके सब्र का बाँध दरक रहा था। सहनशीलता की ओढ़ी हुई चादर तार-तार हो रही थी। "जाने कैसी बहू ब्याह लायी हूँ कि अब तक घर में बच्चे की किलकारियाँ नहीं गूंजी। लगता है पोते-पोतियों का मुँह देखना मुझे नसीब नहीं है। कहीं बच्चों की आस लगाए मेरी सांस ही न टूट जाए"– मालती की सास ने कहा। "जीजी...ऐसा क्यूँ कहती हो ! लम्बी आयु हो तुम्हारी। पोते-पोतियों का मुँह क्यों नहीं देखोगी भला... जरूर देखोगी। अब अगर इस पेड़ में फल नहीं लग रहा तो पेड़ ही बदल डालो, अपने बेटे की दूसरी शादी कर दो... भला कब तक इससे आस लगाओगी"। अपनी सास और पड़ोस की काकी की बात सुनकर मालती बेहद दुखी हो गयी। अब उसके अंदर मातृत्व सुख पाने की लालसा और भी तीव्र हो गयी। वह दर्द और टीस जिसे वो सभी से छुपाकर अपने अंदर समेटे रहती, आज आँखों के रास्ते बेखौफ बाहर आ गए। मन में बार-बार विचार कौंधने लगा... "ईश्वर ने मुझे क्यूँ इस सुख से वंचित किया"। मालती परेशान रहने लगी। मन उचाट होता जा रहा था। घर के कामों में भी पहले जैसी तल्लीनता नहीं रही। अब वह पूजा-पाठ से भी निराश होने लगी। अबतक जाने कितनी मन्नतें माँग चुकी थी। आखिर ईश्वर ने मालती की सुन ली और उसके आँचल में खुशियों के पुष्प गुच्छ डाल दिए। उसने जुड़वां बच्चों को जन्म दिया। मालती की सास ने पूरे मोहल्ले में मिठाइयां बाँटी, ईश्वर ने उन्हें जुड़वां पोते जो दिए थे। मालती के मन में प्रेम और वात्सल्य का भाव यूँ उभर रहा था मानों सूखे-प्यासे अधरो पर किसी ने अमृत वर्षा कर दी है और मालती उस अमृत पान से तृप्त हुई जा रही थी। समय बीतता जा रहा था। मालती अपने खुशहाल जीवन में पूरी तरह रमी हुई थी। दोनों बच्चे अब स्कूल जाने लगे थे। मालती पढ़ी-लिखी तो नहीं थी मगर बच्चों को बड़े करीने से संवारकर स्कूल भेजा करती थी मानो वो अपनी सारी उम्मीदों और सपनों को बच्चों में साकार कर रही थी। इन खुशियों को आत्मसात किए दस साल बीत गए थे लेकिन मालती को कल की ही बात लगती। गृहस्थी और बच्चों में व्यस्त वह खुशहाल जिंदगी जी रही थी परंतु, वक़्त को शायद उसकी खुशियाँ खल रही थी। दुख ने पैर पसारना शुरू कर दिया था। एक सड़क हादसे में मालती के पति गम्भीर रूप से घायल हो गए। उसकी सास पहले ही गुजर चुकी थी। मोहल्ले वाले और कुछ दूर के रिश्तेदारों की मदद से पति को शहर के बड़े अस्पताल में भर्ती करवाया। बड़े अस्पताल के बिल भी बड़े... अकेली मालती नि:सहाय हुई जा रही थी। पति की ईलाज के लिए मालती को अपने गहने भी बेचने पड़ गए पर नियति मानों उसके जीवन को दुखद और कठिनाई युक्त बनाने की ठान चुकी थी। बहुत प्रयास करने के बाद भी उसके पति नहीं बचे। मालती के पास दौलत के नाम पर भी कुछ नहीं बचा। अब बचा था तो मात्र दोनों बच्चों का जीवन और उनका भविष्य। अब घर और बच्चों की जिम्मेदारी उसे अकेले ही उठाना था। वह इनसे विमुख भी कैसे हो सकती थी कितने उलाहने सुनकर और कितनी मन्नतों के बाद बच्चों का जन्म हुआ था। वह अब अपने बच्चों के जीवन को संवारने में ही अपना सारा सुख समझ रही थी। अब उसके लिए एक दृढ़ माँ बने रहना जरूरी था। शिक्षित न होने के कारण वह कोई नौकरी नहीं कर सकती थी मगर वह सिलाई आदि में पारंगत थी। उसने किसी तरह एक सिलाई मशीन खरीदा और कपड़े सिलने का काम शुरू किया। सिलाई के साथ वह अचार-पापड़ बनाकर भी बेचने लगी। अब वह अपना गुजारा करने के साथ-साथ दोनों बच्चों के पढ़ाई का भी खर्च वहन कर पा रही थी। समय अपनी गति से बढ़ता रहा। अब मालती के दोनो बेटे बड़ी कम्पनी में अच्छी पोस्ट पर कार्यरत् थे। पुणे के अलग-अलग हिस्सों में दोनों ने फ्लैट ले रखा था। वे अपनी जीवन संगिनी भी चुन चुके थे। मालती छोटे से शहर के अपने उसी पुराने घर में आज भी रह रही थी। पहले तो बेटे-बहू दो-एक दिन के लिए आ जाया करते थे लेकिन बच्चे होने के बाद उन्होंने आना कम कर दिया... कहते कि बच्चों का मन वहाँ नहीं लगता है। पहले मालती का शरीर साथ दे रहा था और पड़ोसियों के साथ स्नेह रहने के कारण उसका मन भी लगा रहता लेकिन अब मालती खुद का बोझ उठाते हुए थकने लगी थी। बूड्ढी हड्डियाँ भी दैनिक कार्य करने में अकड़ने लगी थी। वहाँ के लोगों ने उसे समझाया, "अब तुम्हे अपने बेटों के पास रहना चाहिए, वे तो यहाँ आकर रहेंगे नहीं सो तुम ही चली जाओ उनके पास"। मालती को भी एहसास हुआ कि अब उसके आराम करने के दिन हैं। अपने होनहार बेटों के रहते नाहक ही वह यहाँ पड़ी है। उसकी उम्र अब पोते-पोतियों के बीच रहने की हो चली है। बेटे को बुलाकर मालती उसके साथ चली गई। छोटे शहर की खुली हवा में रहने वाली मालती महानगर की ऊँची इमारत में रहने लगी। अपने पड़ोसियों से भी आत्मीयता रखने वाली यहाँ खुद में ही सिमटने को मजबूर थी। महानगर के मॉडर्न लाइफ में वह सेट नहीं हो पा रही थी। उसकी ग्रामीण भाषा किसी को ठीक से समझ नहीं आती थी इसलिए वह पास-पड़ोस में किसी से दो बात भी नहीं कर सकती थी। बेटे-बहू अपनी दुनिया में व्यस्त तो उनके बच्चे खुद में ही मग्न। कुछ दिनों तक छोटे बेटे के पास रहने गयी लेकिन वहाँ भी ऐसी ही स्थिति थी। मालती का शरीर धीरे-धीरे लाचार हो रहा था। इस बुढ़ापे में उसे कुछ-न-कुछ स्वास्थ्य समस्याएँ भी होने लगी। यूरिनल इंफेक्शन होने की वजह से बार-बार बाथरूम जाना पड़ता, कभी-कभी तो बाथरूम जाने के क्रम में रास्ते में ही यूरिन पास हो जाता। अब मालती को वहाँ रहना और भी मुश्किल हो रहा था। उसे बहुत कुछ सुनना पड़ता था। मालती का ईलाज चल रहा था लेकिन बहुएँ उसे घर में रखने को तैयार न थी। बड़े शहर के उस सजे-धजे घर में मालती के उस गंदे-बूढे तन को किस कोने में रखते। बेटे-बहुओं ने विचार किया कि माँ को वृद्धाश्रम में रखवा दिया जाए, कभी-कभी वहाँ जाकर माँ से मिल लिया करेंगे। मालती को जब यह बताया गया तो वह बेचैन रहने लगी। अपना घर

छोड़कर आते हुए इतनी दुखी नहीं थी जितना दुख वह आज महसूस कर रही थी। आज उसे वृद्धाश्रम जाना था। मालती देवी की आँखें नम थी। मन तो बच्चों के साथ गहरे तक बँधा था जिसकी गाँठें वह खोल नहीं पा रही थी। वर्षों पुराने इस मोहपाश से निकलना उसके लिए असंभव सा प्रतीत हो रहा था। वह जितना बंधन मुक्त होने का प्रयास करती गांठें उतनी कसती जाती। वह अपनी वेदना को दबाने का भरपूर प्रयास कर रही थी लेकिन उसकी आँखें चुगली करने वाली थी, अपने कोर से कुछ बूँदें गिरा देती जो मालती के बेजान वृद्ध गालों पर से लुढ़कते हुए कपड़ों पर जा गिरते। "माँ... इस बड़े शहर के मॉडर्न लाइफ में तुम सेट ही नहीं कर पा रही थी और ये लोग भी तुम्हारे साथ एडजस्ट नहीं हो रहे थे इसलिए हमने तुम्हें वृद्धाश्रम में रखने का विचार किया", बड़े बेटे ने मालती की गीली आँखें देखकर कहा। "अब इसे दिल पर मत लगाना, यह सब हमें तुम्हारे लिए करना पड़ रहा है। इस घर में तुम्हें अकेले मन नहीं लगता था लेकिन वहाँ हम उम्र लोगों के बीच तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा। देखना जल्द ही तुम उनके साथ एडजस्ट कर लोगी और घुल मिल जाओगी और हम सब दूर थोड़े ही हो रहे हैं, जब कहोगी मिलने आ जाया करेंगे"। बेटे की बात सुनकर मालती मन-ही-मन सोचने लगी, "हाँ... वहाँ कुछ मिले-न-मिले इस नए जमाने में हमारे जमाने के लोग तो मिलेंगे ही जिनमें शायद उसी के जैसा अपनापन भरा हो और शायद वे लोग मालती की बूढ़ी हड्डियों के साथ एडजस्ट कर लें"। यह सोचकर मालती हृदय में उफनते भावों को मजबूती देकर कपड़े समेटने लगी तभी वहाँ कुछ लोगों का आगमन हुआ। "अर्चना जी आज अचानक कैसे आना हुआ और ये लोग कौन हैं!" मालती की बहू की आवाज में आश्चर्य था। "क्या करूँ, आप लोगों के व्यवहार से इतनी आहत हुई कि मुझे अचानक आना ही पड़ा। मुझे मालूम हो चुका है कि आप अपनी बीमार माँ को वृद्धाश्रम भेज रही हैं। मेरे साथ ये एनजीओ के लोग हैं जो बुजुर्गों के लिए काम करते हैं। हमने पुलिस को कॉल कर दिया है वो अभी आती ही होगी"। अर्चना जी की बात सुनकर मालती के बेटे-बहू घबरा गए। उन्होंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि बात पुलिस तक पहुँच जाएगी लेकिन यह हुआ कैसे वो समझ नहीं पा रहे थे। "आप लोग यही सोच रहे हैं न कि बात बाहर कैसे गई!" सभी के उड़े हुए चेहरे देखकर अर्चना बोली, "कुछ दिन पहले जब मैं आपके घर अपने बेटे के बर्थडे पार्टी के लिए निमंत्रण देने आयी थी उस दिन मुझे थोड़ा बहुत एहसास हो गया कि आप इस बुजुर्ग महिला के साथ अनुकूल व्यवहार नहीं करते। उसके बाद से मैं आपके व्यवहार पर नजर रखी हुई थी।" मालती कमरे के दरवाजे पर खड़ी नम आँखों से सब देख रही थी। मालती के बेटे-बहू के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी। डर और पछतावे का मिश्रित भाव चेहरे पर दिख रहा था। पुलिस आने के डर से उन्होंने अपने किए की माफी माँगते हुए कानूनी कार्रवाई न करने की विनती की। उन्होंने स्पष्ट किया कि अपनी माँ को वो वृद्धाश्रम नहीं भेजेंगे और घर में बहुत आदर के साथ रखते हुए सारी सुविधाएँ मुहैय्या कराएंगे। अर्चना मालती के पास जाकर उनके आँसू पोंछती है तो वह बोलती है, "बेटी... आज तुमने मेरे बेटे को वो शिक्षा दी जिसे मैं नहीं दे पायी।" "ऐसी बात नहीं है माँ जी, मैं उन्हें बस एडजस्ट करना सीखा रही हूँ क्योंकि वे भूल चुके हैं कि उनकी परवरिश में आपने जिंदगी में कितने समझौते किए हैं।" कहकर अर्चना जाने के लिए मुड़ी। अर्चना ने उन्हें चेतावनी देकर छोड़ दिया। एनजीओ वालों ने बेटे-बहू से इकरार करवाया कि वे अपनी माँ को घर में रखेंगे और अच्छी तरह देखभाल करेंगे। बीच-बीच में आते रहने का बोलकर अर्चना जी और अन्य वहाँ से चले गए।

*रेखा भारती मिश्रा C/o कौशल कुमार मिश्रा, कदमकुआं, पटना (बिहार)।

अनोखे सपने

मुग्धा पाण्डेय*

सपने अक्सर चौका देते हैं। एक अविश्वसनीय सी दुनिया देखकर हम पसीने-पसीने होकर जाग जाते हैं। तब हमारी सांस-में-सांस आती है कि ओह, यह तो सपना था। ये सपने भी अपने-आप में किसी अजूबे से कम नहीं होते। सपने देख पाना उनको याद करके महसूस भी करना यह एक कुदरती उपहार के समान ही तो है। अक्सर सपना याद नहीं रहता है। रहता भी है तो बस टुकड़े-टुकड़े में ही। कितने ही लोग तो अपना सपना पूरा-का-पूरा याद रखते हैं और उसे अपनी बातचीत के दौरान हूबहू साझा भी कर लेते हैं। ऐसा लगता है कि सपने किसी भी इंसान के लिए उसके जीवित होने का संकेत होता है। सपने की अनुभति इस जीवित होने में रंग भरने का काम करती है। कितने ही लोग कहते हैं कि उनको सपने में जीवन की कोई दिशा भी मिल गई। कोई कहता है कि जीवन की किसी जटिल समस्या का हल मिल गया आदि, इत्यादि। गहरी या कम गहरी नींद में कोई एक या दो सपने देखना या स्वप्न में कोई संकेत पा लेना। यह तो शायद अधिकतर लोगों के साथ होता ही है। काफी समय से मनोवैज्ञानिक भी इस बात को मानने लगे हैं कि सपने अगर याद रखे जायें, सिलसिलेवार इनकी भाषा को समझा जाये तो इनमें कुछ-न-कुछ उपयोगी और गहरा संदेश तो विद्यमान होता ही है। सपनों की बात चलती है तो सिगमंड फ्रायड का नाम जुबान पर आ ही जाता है। जाने माने मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक सिगमंड फ्रायड ने उन्नीसवीं सदी में सपनों पर एक रोचक पुस्तक लिखी जिसका शीर्षक है "द इंटरप्रिटेशन ऑफ ड्रीम्स"। यह पुस्तक बहुत चर्चित हुई थी। इस पुस्तक में पहली बार सपनों को मनोविज्ञान से जोड़कर देखा गया था। इससे पहले यूनान में भी सपनों को लेकर काफी शोध हुए हैं। ऐसे अनगिनत संदर्भ मिलते हैं कि यूनान में सदियों पहले से बीमार लोगों को मंदिर में लाकर गहरी नींद में सुलाया जाता था। ऐसा विश्वास था कि मंदिर में सोने से रोगी को ऐसा सपना जरूर ही आयेगा कि उसके संकेत से अपनी जीवन शैली को बदलकर वह रोगमुक्त हो जायेगा। जाने माने गणितज्ञ व आस्तिक रामानुजन गणित के किसी मुश्किल सवाल को हल करने पर कहते थे कि रात में कुलदेवी उनके सपने में आती हैं और जवाब बताती हैं। ऐसा भी नहीं कि वे यह बात मजाक के तौर पर कहते थे। गणित सम्बन्धी अपने सपने को लेकर वह बेहद गम्भीर थे। एकबार उन्होंने इंटरव्यू में कहा था कि कम उम्र में सपने में प्रेरणा पाकर ही मैंने ना जाने कितनी ही जटिल प्रमेयों की रचना की। गणित के नए सूत्र दिए। मेरे साथ एक खास बात होती थी। कई बार गणित की किसी प्रमेय या सवाल पर मेरा दिमाग और मैं जब उलझ जाते थे। खाना-पीना तक भूल जाते। कई बार हल निकल आता था। कई बार नहीं, तब वो हल हमेशा नींद में सपने में मिलता था।" इसके

अलावा गणितज्ञ रामानुजन खुद लोगों से कहते थे कि सपने में देवी नामागिरी आकर उनसे सवान हल करा देती हैं। सपने केवल आने वाले कल की भविष्यवाणी नहीं होते। उनमें हमारे उन कामकाज और कार्यकलाप की समस्याएं भी निहित रहती हैं जो हम दिन की रोशनी में करते हैं। संसार की कई वैज्ञानिक उपलब्धियाँ तो सपनों की ही उपज रही हैं। मिसाइल मैन कलाम भी यही कहते थे कि मेरा एक सपना था। अपने गाँव से निकल कर कुछ कर दिखाना और आगे चलकर वह सपना सच हुआ। सपनों को याद करना और उनका विश्लेषण करना हमें अपने बारे में बताता है, उन चीजों के बारे में जो कहीं दबा-छिपा है। ऐसे में जब हम अपने अवचेतन के बारे में बहुत सचेत नहीं रहते, सपनों का विश्लेषण हमें उसके बारे में बहुत कुछ बता सकता है। अगर हम यह समझ लें कि सपने बनते कैसे हैं ? तो हम अपने मन के उन कोनों के बारे में भी बखूबी जान सकते हैं जिन्हें हम अब तक ठीक से नहीं जानते थे। सपने कभी बेमतलब नहीं होते। उनका एक अर्थ होता है। हममें से हर कोई अपने प्रतीक चुनता है और उन्हें छिपाकर सपनों में उसके अर्थ खोजता है। जैसे छात्रा के सपने में एकबार एक छतरी बार-बार आई और जो उसके परिवार की सुरक्षा की प्रतीक थी। कुछ दिन बाद उसका परिवार एक भयंकर वाहन से दुर्घटनाग्रस्त होते-होते बच गया। जरूरी नहीं कि सबके लिए उसका वही मतलब हो। हरेक के सपने का अपना एक खास प्रतीक होता है। सपनों के अर्थ छिपे होते हैं क्योंकि सपनों का सच बहुत बार बहुत आश्चर्यजनक और अप्रत्याशित होता है। एक सपना राजा जनक ने भी देखा था। एक बार राजा जनक राजमहल में सो रहे थे। उन्होंने स्वप्न देखा कि राज्य में भारी अकाल पड़ा है। भूख और अभाव से जनता परेशान है। शासन-व्यवस्था भी चरमरा गई है। प्रजा ने राजा को देश से निकाल दिया है। वह भूखे-प्यासे दर-दर भटक रहे हैं। भूख और प्यास से व्याकुल होकर वह एक श्रेष्ठि के द्वार पर पहुँचे। वहाँ सदाव्रत चल रहा था। श्रेष्ठि ने मिट्टी के बर्तन में जनक को खिचड़ी परोसी। जैसे ही वह खाने बैठे दो सांड लड़ते हुए वहां आए, अफरा-तफरी मची और जनक को परोसी खिचड़ी का बर्तन टूट गया। खिचड़ी धूल में मिल गई। इसी समय जनक की नींद खुली। वह व्याकुल हो गए। उनकी आंखों से आँसू की धारा फूट पड़ी। क्या सारा राज्य नष्ट हो गया, क्या मैं दर-दर का भिखारी बन गया हूँ ? राजा को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। उसी समय प्रात: कालीन शहनाई बजी और संगीत की स्वर लहरियाँ झनझनाने लगीं। अब भाटगण महाराजा के जयकारे लगा रहे थे। वह सोचने लगे, खिचड़ी की बात सत्य है या यह जय-जयकार सत्य है ? राजा जनक राज्यसभा में पहुँचे। उन्होंने सभासदों से पूछा- यह सत्य है या वह सत्य है ? राजा के प्रश्न का उत्तर कोई भी न दे सका। अंत में उन्होंने अष्टावक्र ऋषि के सामने यह प्रश्न रखा। अष्टावक्र ने कहा, 'राजन ! तुमने जो स्वप्न में देखा है वह भी मिथ्या है और जो तुम जागृत अवस्था में देख रहे हो, वह भी मिथ्या है। न यह सत्य है, न वह सत्य है। जैसे स्वप्न भ्रमजाल है वैसे संसार भी भ्रमजाल है। जिस संसार-वैभव को मोहमाया में उलझा व्यक्ति शाश्वत समझता है, वह शाश्वत नहीं है। अशाश्वत की भूल-भुलैया में न फँसो। पर जो शाश्वत आत्मा है, उस पर ध्यान केंद्रित करो। आज भी हमको अपने आस-पास ऐसे बहुत से लोग मिल जायेंगे जो यह कहते हैं कि उनके द्वारा उनकी जिदगी में जो सपने देखे गये, वह पूरे तो हुए ही साथ ही जीवन भी पूरी खूबसूरती से आगे बढ़ता रहा। कुछ लोगों ने सपने देखे और अपनी कला को अपने हुनर को पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया। मगर, बुरे सपने याद न रहें, ठीक है। मगर बुरे सपने भी सकारात्मक होते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में तो मान्यता है कि अगर स्वप्न में किसी को मृत देखते हैं तो वह भी अच्छा संकेत है। कहते हैं कि इससे उस व्यक्ति की आयु और बढ़ जाती है। सुनने में यह अजीब बात लगती है। मगर यूनान, मिस्र आदि में भी यही विश्वास है कि जो सपने में मृत होता है वह अपने वास्तविक जीवन में उतना ही अधिक सेहतमंद रहता है। हम जो सपने खुली आँखों से देखते हैं, उन सपनों को पूरा करने की कोशिश में हम अपना पूरा जीवन लगाते हैं। उन सपनों को साकार करने के लिए हम क्या कुछ नहीं करते। चाहे वह हमारी हद में हो या उससे बाहर, उसे पूरा करने की कोशिश जरूर करते हैं। वह कोशिश करना हमारा अपना अधिकार और कर्तव्य, दोनों ही हैं। खुली आँखों से देखे सपने या नींद में आने वाले सपने सब एक-दूजे का साकार स्वरूप हैं क्योंकि उसमें हमारी योजना जुड़ती है, पूरा करने की चाह जुड़ती है। बड़ी तसल्ली और योजनाबद्ध तरीके से हम सपने के पीछे लगे होते हैं। उस एक सपने को पूरा होता देख, एक और सपने की भूमिका तैयार होने लगती है। उससे और आगे का सफर शुरू हो जाता है। सपनों का यह चक्र जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। सच कहा जाए तो सपने के रूप में एक ध्येय हमारे सामने होता है। उसके लिए संघर्ष चलता रहता है। यदि सपने पूरे हो गए और उसके बाद कोई सपना ही न बचा, तो जीवन में विराम चिह्न लग जाएगा। सही है कि कुछ सपने कभी पूरे नहीं होते लेकिन यदि वे सब पूरे हो भी जाते तो जीवन में आगे बढ़कर कहीं पहुँचने का जद्दोजहद ही खत्म हो जाता, फिर जीवन का कोई लक्ष्य, कोई मतलब ही नहीं रह जाएगा ? इसलिए शायद कोई-कोई सपना भी बहुत बार अधूरा-सा ही रह जाता है। जैसे कोई प्रश्न-पत्र हल करने का सपना, सीढ़ी चढ़कर ऊपर जाने का सपना। शायद यही बताने के लिए कि जीवन विविधतापूर्ण है। यह हौले -हौले आगे बढ़ता है। पर एक बात तो हमको याद रखनी चाहिए कि हमें सपने में भी कभी किसी का कुछ बिगाड़ने की, किसी का भी अहित करने की बात बिल्कुल भी नहीं सोचनी चाहिए। सपने में भी सभी का कल्याण हो, सबका भला हो ऐसी ही कामना करनी चाहिए।

*Ignou Road, Sainik Farm, Saket, New Delhi

आत्म ग्लानि

डॉ.प्रियंका पाठक*

प्रमोद शंकर सरकारी अस्पताल में बहुत बड़े हृदय रोग विशेषज्ञ थे। उनकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली हुई थी। वह बहुत ही मिलनसार और ईमानदार व्यक्ति थे। उनको तीन बेटे थे। जबकि उन्हें बेटियों का बड़ा शौक था। इसलिए नवरात्रि में कुंवारी कन्याओं का बहुत ही भव्यता और आदर सत्कार से पूजन करते, उनके मनपसंद भोजन बनवाते और उन्हें तरह-तरह के उपहार देते। पिछली दुर्गा पूजा में उन्होंने बच्चियों को चांदी की पायल दी थी। इस बार उन्होंने सोने की कान की बाली देने का मन बनाया था। पूजन के लिए जब बच्चियां उनके घर पहुंचती तो अपने हाथों से बच्चियों का पैर पखारते थे। तब उनकी श्रीमती जी उन बच्चियों के पैरों को साफ तौलिए से पोंछ कर उनमें डिजाइन वाला आलता लगाती। फिर

उनके बालों को संवारती, उनमें रंग-बिरंगे क्लिप लगाती। जब रितिका छोटी थी तो वो भी कन्या-पूजन में शामिल होती और उसका भी पूजन होता लेकिन जब बड़ी हो गई तो इस काम में वह भी हाथ बंटाने लगी। पिछली बार उसने सभी बच्चियों को उनका मनपसंद टेडीबियर दिया था। इस बार बच्चों ने अपने लिए घड़ी की फरमाइश की थी। रितिका भी उन दोनों के साथ कुंवारी कन्याओं का आशीर्वाद लेती। उनके प्रिय मित्र डॉ.राजेश की पुत्री रितिका उन्हें प्राणों से अधिक प्यारी थी। उन्होंने अपने बच्चों और रितिका का नामांकन मसूरी के प्रसिद्ध बोर्डिंग स्कूल में करवाया। गर्मी की छुट्टियों में घर बुलाने के बदले दोनों परिवार बच्चों से मिलने मसूरी ही चले जाते। बच्चों से मिलते-जुलते, घूमते-फिरते और लौट आते। प्रमोद शंकर का बड़ा बेटा अजय अपने पिता की तरह हृदय रोग विशेषज्ञ बनना चाहता था जबकि रितिका एक शिशु रोग विशेषज्ञ बनना चाहती थी। वे दोनों सफल डॉक्टर बन भी गए। अजय आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका चला गया और वही बड़े अस्पताल में नौकरी भी करने लगा था। प्रमोद बहुत खुश हुए। दोस्तों के आगे सीना चौड़ा कर कहते "बेटों ने मन की मुराद पूरी कर दी।' अजय अमेरिका में इन दिनों प्रैक्टिस कर रहा है। दूसरा बेटा प्रेम कनाडा में इंजीनियर है और तीसरा बेटा जय भी आई.आई.टी., रुड़की से इंजीनियरिंग करने के बाद कहीं-ना-कहीं सेटल हो ही जाएगा। प्रमोद शंकर अपने बेटों की प्रशंसा करने का कोई भी मौका हाथ से जाने नहीं देते थे। यहां तक कि अपने पेशेंट से भी अपने बच्चों की प्रशंसा करना नहीं भूलते। अपने बच्चों का बखान करना उन्हें बहुत अच्छा लगता था। उनके बच्चों की सफलता देखकर आस-पड़ोस के लोग भी अपने बच्चों को अजय, प्रेम और जय का उदाहरण देते। कहते "देखो ! कितने काबिल हैं उनके बच्चे। अपनी मेहनत और लगन से कितने बड़े -बड़े ओहदों पर पहुंच गए हैं और एक तुम लोग हो मन लगाकर पढ़ाई नहीं करते बल्कि खेलकूद में नाहक ही समय जाया करते रहते हो।" प्रमोद शंकर ने अपने तीनों बेटों के लिए बहुत ही आलीशान मकान बनवाया था। अपनी सारी कमाई और जमा-पूंजी मकान बनवाने में ही खर्च कर डाला। पत्नी प्रमिला ने कितना समझाया था कि "अपने भविष्य के लिए भी कुछ पैसे बचा कर रखें।" तो उनको हर बार समझा देते कि "जिनके तीन इतने होनहार बेटे हैं, उसको कभी पैसे की क्या जरूरत पड़ सकती है और यदि पड़ भी गई तो बेटे सारा संभाल लेंगे।" बड़े और मंझले बेटे तो बाहर चले गए थे। इसलिए उन्होंने छोटे बेटे को अपने पास रहने के लिए बुलाया। उसने बताया कि -"वह भी सिंगापुर जाने वाला है क्योंकि वहां की कम्पनी से उसे बुलावा आया है।" उन्होंने सोचा अब रिटायरमेंट में तो कुछ ही साल बचे हैं तो बड़े और मझंले बेटे का विवाह कर अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त हो जाऊं। इसलिए उन्होंने अपने बड़े सुपुत्र अजय को फोन लगाया और कहा कि "बेटे आज तक तो तुम अपनी शादी की बात टालते रहे हो लेकिन अब मैं तुम्हारी एक नहीं सुनूंगा। तुम्हारी मां ने तुम्हारी शादी का डेट निकाल दिया है। रितिका और उसके पापा भी इसके लिए तैयार हो गए हैं। इसलिए तुम जल्दी से भारत आ जाओ। राजेश जी भी बेसब्री से तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने तुम्हारे और रितिका के लिए बहुत ही शानदार अस्पताल खोला है। तुमने भी तो वादा किया था कि अमेरिका से लौटते ही तुम डॉक्टर राजेश की बेटी और अपनी बचपन की दोस्त रितिका से शादी कर लोगे। इसलिए तो हम लोगों ने तुम्हारा इंगेजमेंट करके ही वहां भेजा था। तुम भी तो यही चाहते थे कि अमेरिका से लौटकर अपने गृह नगर में ही तुम हम लोगों के साथ रहोगे।" "लेकिन पापा अब मैं भारत नहीं आना चाहता। मेरा अमेरिका में ही मन लग गया है। जहां तक शादी की बात है तो मैंने यहां शादी कर ली है, ग्रीन कार्ड के लिए मुझे मारिया से शादी करनी पड़ी। जहां तक रितिका की बात है तो वह एक प्रसिद्ध डॉक्टर है उसे कोई भी बढ़िया लड़का आसानी से मिल जाएगा। मेरी और रितिका की इंगेजमेंट की बात है तो आजकल इंगेजमेंट टूटना बहुत बड़ी बात नहीं रह गई है।" प्रमोद शंकर की तो ऐसी स्थिति हो गई थी कि उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहें। जिस लड़के पर उन्हें सबसे ज्यादा भरोसा था उसने उनके साथ ऐसा विश्वासघात किया कि उनकी बोलती बंद हो गई और उन्हें काठ मार गया। उनकी स्थिति बहुत ही दयनीय हो गई थी लेकिन उन्होंने जैसे-तैसे अपने आप को संभाला ताकि उनकी धर्म पत्नी को यह बातें पता न चले। वह तो भगवान का शुक्र था कि उनकी श्रीमती जी घर पर नहीं थी बल्कि श्रीवास्तव जी के यहां सत्यनारायण की पूजा में गई थी। वहां से लौटेंगी तो बड़े बेटे से क्या बात हुई कैसे बताएंगे ? इसी उधेड़बुन में उन्होंने मंझले बेटे प्रेम को फोन किया और उससे अजय की शिकायत करने लगे कि "कितना बदतमीज हो गया है। उसने इंगेजमेंट रितिका से किया और शादी मारिया से कर लिया। अपने इस कुकृत्य पर जरा भी शर्मिंदा नहीं है। अपने स्वार्थ के लिए उसने पल भर में रितिका से अपना नाता तोड़ लिया। अब मैं डॉक्टर राजेश को क्या मुँह दिखाऊंगा और तुम्हारी माँ को कैसे बताऊंगा यह सब बातें।" प्रेम ने बताया कि,"मैं तो पहले से ही जानता था कि भैया ने शादी कर ली है क्योंकि मैंने भी उन्हें अपनी शादी की बात सबसे पहले बताई। हम दोनों एक-दूसरे की शादी के बारे में जानते हैं।"प्रमोद शंकर बोले "मतलब ?" प्रेम बोला "हाँ ! पापा भैया ने अपनी शादी के बारे में मुझे बताया तो मैंने भी जब शादी की तो उन्हें बता दिया। रही बात भारत आने की तो वहां कौन रह पाएगा पापा। विदेशी बहुएं वहां कैसे एडजस्ट कर पाएंगी।" प्रमोद शंकर यह सब सुनकर अवाक रह गए। उनकी आंखों से अविरल बरसात होने लगी। पत्नी जब पूजा से लौटी तो पति की ऐसी हालत देखकर घबरा गई। जल्दी से उन्होंने उनके मित्र डॉ. राजेश को फोन किया कि "भाई साहब जल्दी आ जाइए पता नहीं डॉक्टर साहब को क्या हो गया' ? ना कुछ बोल रहे हैं और ना ही मेरी तरफ देख रहे हैं ? बस रोये जा रहे हैं।" डॉक्टर राजेश ने कहा कि "भाभी आप चिंता न करें मैं जल्दी ही आता हूँ।" थोड़ी देर में डॉक्टर राजेश अपनी पुत्री रितिका के साथ पहुँच गए। उन्होंने प्रमोद शंकर से पूछा कि "क्या बात हो गई भाई कि तुम इतने गहरे सदमे में हो ? सभी बच्चे तो ठीक है न वहां ! बोलो ना मित्र ! मुझसे अपने दिल की बात बताओ।" डॉक्टर राजेश ने कई बार पूछा लेकिन प्रमोद शंकर ने कोई जवाब नहीं दिया। वह अपलक रितिका को निहारते रहे। रितिका के बार-बार आग्रह करने पर उन्होंने कहा कि "बेटा मैं तुम्हारा गुनाहगार हूँ। मुझे माफ कर दो। मैं तुम्हें अपने घर की बहू नहीं बना सका। अमेरिका में अजय ने मारिया नामक विदेशी लड़की से शादी कर ली है और तो और उसकी देखा-देखी प्रेम ने भी कनाडा में शादी कर ली है। दोनों इतने बेशर्म निकलेंगे मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। दोनों ढीठता से अपनी-अपनी शादी की बातें बता रहे थे जैसे उनकी जिंदगी में हमारा कोई औचित्य ही नहीं।" इतना सुनते ही मिसेज प्रमोद शंकर बेहोश होकर गिर पड़ीं। जल्दी-जल्दी उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। उन्हें भी गहरा सदमा लगा था। इस दु:ख की घड़ी में डाक्टर राजेश और रितिका ने इन

दोनों का बहुत ख्याल रखा लेकिन मिसेज प्रमोद शंकर की तबियत सुधरने की बजाय और बिगड़ती ही जा रही थी। जबकि उनका इलाज स्वयं डॉ. राजेश कर रहे थे जो कि देश के जाने-माने हृदय रोग विशेषज्ञ थे। अचानक एक दिन मिसेज प्रमोद शंकर यानी प्रमिला जी को दिल का दौरा पड़ा। तब प्रमोद जी को अपने छोटे बेटे जय की याद आई। तत्काल फोन पर उसे बताया कि,"माँ की तबियत बहुत ज्यादा खराब है। जल्दी चले आओ बेटा।" जय ने जवाब दिया -"अभी- अभी नौकरी लगी है, आना मुश्किल है पापा। माँ का बेहतर-से-बेहतर इलाज करवाइए। रुपयों की चिंता मत कीजिए। मैं रुपया भेज दूंगा। माँ का रहना आपके लिए बहुत जरूरी है। बुढ़ापे में वही आपका सहारा हैं।" प्रमोद शंकर कुछ कह नहीं पाए। कहते भी क्या जिन बच्चों को इतने लाड़-प्यार से पाला, जिनकी हर ख्वाहिश पूरी की आज वही बच्चे इतना कैसे बदल गये कि उनके पास अपने माँ-बाप के लिए न समय है और न ही उनकी परवाह है। जिन बच्चों का बखान करते उनकी जिह्वा नहीं थकती थी, उन बच्चों का नाम लेना भी उस जीह्वा ने छोड़ दिया था। कुछ दिनों बाद प्रमिला जी का देहांत हो गया। प्रमोद शंकर ने तीनों बेटों को फोन कर माँ की मौत की खबर दी, मगर कोई अपनी माँ की अर्थी को कंधा देने नहीं आया। अपने मित्र डॉ.राजेश और अन्य मोहल्ले वासियों के सहयोग से उन्होंने अपनी पत्नी प्रमिला का अंतिम संस्कार किया। प्रमोद शंकर ने अब अस्पताल जाना भी छोड़ दिया था। इतने बड़े मकान में केवल वह और उनका नौकर मोहन रह गए थे। प्रमिला जिंदा थी तो मोहल्ले की औरतों से उनका घर गुलजार रहता था। अब तो खाली घर उन्हें काटने को दौड़ता। धीरे-धीरे उनकी सेहत भी खराब रहने लगी। कभी-कभी बेटे फोन पर उनका हाल-चाल ले लेते। उन्होंने कुछ पड़ोसी और अपने परम मित्रों को अपने बेटों का नम्बर दे रखा था। उनको इस बात का गहरा सदमा लगा था कि डॉक्टर राजेश की बेटी रितिका उनकी बहू नहीं बन पाई और इसी दु:ख में प्रमिला जी भी स्वर्ग सिधार गईं। प्रमिला जी का रितिका की माँ से किया वादा भी पूरा नहीं हो सका। रितिका की माँ की मौत के बाद उन्होंने बड़े लाड़-प्यार से उसे पाला था क्योंकि रितिका की माँ डॉ.अनुराधा उनकी बचपन की सहेली थी। दोनों सहेलियों ने तय किया था कि अपनी दोस्ती को रिश्तेदारी में बदलेंगी। इसीलिए बचपन में ही अजय और रितिका की शादी तय कर दी थी। अजय और रितिका एक-दूसरे को पसंद भी करते थे और उनकी रजामंदी से ही सगाई हुई थी। तय हुआ था कि अमेरिका से अजय के लौटते ही उन दोनों का विवाह कर दिया जाएगा लेकिन अजय ने उनके और रितिका के अरमानों का गला घोंट दिया। अब वह किस मुंह से डॉक्टर राजेश से बात करेंगे ? दिन-रात इसी उधेड़बुन में लगे रहते थे। उनका अकेलापन दूर करने के लिए उनके सभी मित्र उनके घर एक साथ ही शाम की चाय पीते। एक दिन शाम को ही ड्राइंग रूम में अपने दोस्तों के साथ चाय-नाश्ता कर रहे थे की उनके नौकर ने अचानक आकर कहा कि- "मालिक माँ की तबियत बहुत खराब है, मुझे आज ही गाँव जाना होगा।" उनकी आँखें मोहन पर गई और आँखों से आँसू झरने लगा लेकिन तुरंत ही उन्होंने अपने- आप को संभाल लिया। कमरे में गये और अपने अलमारी से ₹ 50,000.00 निकालकर उसे देते हुए बोले –"यह कुछ रुपए रख लो, माँ का इलाज अच्छे से कराना। पैसे कम लगे तो फोन करना मैं और भेज दूँगा। संकोच मत करना।" मोहन रोते हुए बोला कि "मालिक मैं आपको छोड़कर जाना नहीं चाहता हूँ लेकिन क्या करूं मेरी भी मजबूरी है। अब तो मालकिन भी नहीं हैं जो आपका ख्याल रखेंगी। मैंने रितिका दीदी को फोन कर दिया है वह बस आती ही होंगी। तब मैं निश्चिंत होकर अपने घर जाऊंगा।" "अरे ! नहीं मोहन तुम जाओ अब तनिक भी देरी न करो। तुम्हारी माँ को तुम्हारी ज्यादा जरूरत है। मैं अब ठीक हूँ। मैंने ड्राइवर को कह दिया है वह तुम्हें गाँव पहुंचा देगा।" "मालिक इसकी क्या जरूरत थी, मैं बस से ही चला जाता" – मोहन ने कहा। "नहीं ! नहीं ! तुम बस से क्यों जाओगे ? तुमने इतने सालों हमारी सेवा की है इसके सामने तो यह कुछ भी नहीं है। आखिर मेरा भी तो कुछ फर्ज है तुम्हारे लिए।"

मोहन बुझे मन से प्रमोद शंकर को प्रणाम कर घर की ओर चल पड़ा। उसके जाते ही डॉक्टर प्रमोद कुर्सी से लुढ़क गए। आनन-फानन में उनको अस्पताल में भर्ती किया गया। उनकी स्थिति काफी क्रिटिकल बनी हुई थी। तबियत संभलने का नाम नहीं ले रही थी। अचानक एक दिन उन्हें होश आया तो उन्होंने डॉक्टर रितिका को अपने पास बुलाया और कहा कि "बेटा ! यदि मैं मर जाऊं तो मुझे मुखाग्नि तुम ही देना क्योंकि मुझे पता है, मेरे बेटे नहीं आएंगे। हो सके तो मुझे माफ कर देना। मैं हाथ जोड़कर तुमसे माफी मांगता हूं क्योंकि यह आत्म ग्लानि मुझे जीने नहीं देगी।" रितिका ने उनके हाथों को अपने हाथों में लेते हुए बोला "पापा ! मैं आपसे कभी नाराज हो सकती हूं क्या ?' प्लीज अपने आपको कोसना बंद करें और ऐसी बातें ना करें। आपको कुछ नहीं होगा। अपने मन से ये फिजूल की सारी बातें निकाल दें, मैं आपको खोना नहीं चाहती। मेरी माँ के गुजरने के बाद आपने और प्रमिला माँ ने मेरा कितना ख्याल रखा। मुझे कभी भी उनकी कमी महसूस नहीं होने दी। जहां तक अजय की बात है तो क्या हुआ उसने मुझसे शादी नहीं की। इससे आपके और मेरे रिश्ते में कोई दूरी नहीं आएगी। आप भी इस आत्म ग्लानि को अपने मन से निकाल दीजिए।" संयोग से उसी समय मोहन भी यह सुखद समाचार लेकर आया कि उसकी माँ अब बिल्कुल ठीक हो गई है। इस पर प्रमोद शंकर ने कहा कि "चलो भगवान का शुक्र है कि तुम्हारी माँ ठीक है लेकिन तुम्हें उनको छोड़कर अभी नहीं आना चाहिए था।" "लेकिन मालिक मैं आपको छोड़कर ज्यादा दिन कैसे रह सकता था। माँ का ही आदेश था कि मालिक इस समय अकेले होंगे। मुझसे ज्यादा उनको तुम्हारी जरूरत है इसलिए तुम निश्चिंत होकर जाओ। अब मैं बिल्कुल ठीक हूं। फिर मेरा ख्याल रखने के लिए तुम्हारा छोटा भाई भी तो है इसीलिए मैं चला आया। मैं आपकी इतनी सेवा करूंगा कि आप बहुत जल्दी स्वस्थ हो जाएंगे।" "हम पापा को कल घर लेकर जा सकते हैं मोहन काका। आप उनकी खूब देखभाल करेंगे तो हम लोगों के साथ जल्द ही जौगिंग पर भी जा सकते हैं" रितिका ने माहौल को खुशनुमा करने के लिए हंसते हुए कहा। इस पर प्रमोद शंकर ने मुस्कुराते हुए कहा कि -"मेरे सगे बेटे साथ छोड़ गए तो क्या हुआ मुझे बेटा-बेटी दोनों एक साथ मिल गए।" उन्होंने रितिका और मोहन को गले से लगा लिया।

*असिस्टेंट प्रोफेसर,डी.बी.एस.डी., डिग्री कॉलेज, गरखा, सारण, बिहार।

भुवरी

रेखा शाह आरबी *

"भुवरी ओ भुवरी.. आकर खाना खा ले ! "नंदपुर गांव के दक्षिण टोला में गरीब लोगों की बस्ती थी, सारे घर करकट या टीन शेड के बने हुए थे, जगह-जगह कूड़े के ढेर थे और वही पर बच्चे खेल रहे थे,उनके आस-पास कुकुर, मुर्गियाँ, बकरियाँ इधर-उधर विचर रहे थे और इंसान सब अपने-अपने दिनचर्या में व्यस्त थे। सवेरे-सवेरे का बेरा था, भुवरी की माई उसको खाने के लिए आवाज लगा रही थी। पाँच बच्चों में सबसे छोटी बारह साल की भुवरी एकदम अपने नाम के जैसे उसकी आँखें भूरी-भूरी, हमेशा उलझे हुए घुँघराले बाल थे और उसके भूरेपन के कारण उसका नाम भी भुवरी पड़ गया। माई खाने के लिए आवाज लगा गई लेकिन भुवरी तो अपनी बकरी कजरी के साथ खेलने में मस्त थी। कभी गोद में लोट लगाती तो कभी पीछे से अपना सर भुवरी के पीठ पर रगड़ती, कजरी उसकी दोस्त, सखी-सहेली और खेलने का खिलौना थी। दिन भर उसका काम ही था सुबह-सवेरे खा-पीकर बकरियों को लेकर चराने के लिए खेतों की ओर निकल जाना। खेत-खेत, डरेर-डरेर अपनी बकरियों को हाँकती घूमती रहती थी। बकरियों में भुवरी को कजरी बहुत प्रिय थी, कभी परेशान नहीं करती थी और ना इधर-उधर भाग कर जाती थी। उसकी चमकीली आँखें और एकदम सफेद रंग कजरी को सुंदर बना देती थी। भरपेट चरने के बाद वह अक्सर वही चुपचाप बैठ जाती जहाँ भुवरी छाया में बैठी रहती। जानवर भी इंसान के आँखों की मूक प्रेम की भाषा समझ जाते हैं, सारी बकरियाँ उससे घुली-मिली थी लेकिन कजरी की बात और थी। वह तो भुवरी को देखते ही उसके आगे-पीछे चक्कर काटने लगती थी, जब तक भुवरी कजरी को अपनी गोद में बैठा कर सहला न दे, तब तक कजरी को चैन नहीं पड़ता था। कही अकेले जाते हुए देख लेती तो मिमिआने लगती फिर भुवरी उसको थोड़ा दुलारती उसके बाद ही कही जाती, फिर शान्त होकर चुपचाप निहारती जब तक की भुवरी आँखों से ओझल नहीं हो जाती। वापस आने पर खुशी के मारे खूब फुदकती-उछलती थी। भुवरी ने उसके गले के लिए चमकीले गोटो से उसके गले की रस्सी बनाई थी और उसके गले में घंटी भी बाँधी थी। जैसे-जैसे कजरी उछलती-कूदती वैसे-वैसे घंटी भी बजती थी और कजरी की खुशी भुवरी के मन को भी प्रसन्न कर जाता था। भुवरी की माँ ने फिर से आवाज लगायी तो कजरी का साथ छोड़कर उसे भात खाने के लिए जाना ही पड़ा। भुवरी ने देखा कि आज थाली में माँड़-भात की जगह सब्जी-भात बना था। रोज से कुछ अच्छा देखकर उसकी आँखों में चमक आ गई, भूख तेज हो गई।

फिर उसे याद आया कि ऐसा तो तभी बनता है जब कोई आया होता है। वह अपनी माँ से पूछी-"माई कोई आया है क्या ?" "हाँ तुम्हारे मामा आए हैं.. तुमको नानी के गाँव ले जाने के लिए तुम्हारी मामी की तबियत खराब है। अब उनके तो कोई बाल-बच्चे हैं नहीं तो हम ही लोगों को तो संभालना पड़ेगा"। भुवरी समझ गई मामी बीमार हैं तो रसोई के खातिर भी तो कोई चाहिए इसीलिए उसे जाकर 10- 15 दिन वहाँ पर रसोई संभालनी है और जब तक उनकी तबियत ठीक नहीं होगी, वही रहना पड़ेगा। जाने के नाम से और नानी से मिलने की उसे खुशी थी पर अपना घर और कजरी को छोड़ने का दुख था। 10 दिन तक पता नहीं कजरी को कौन चराने ले जाएगा और कौन नहीं चराएगा, इस चिन्ता ने उसे घेर लिया। भुवरी का बाल मन दुख और सुख के झूले पर झूलने लगा। दोनों अनुभूतियाँ उसके बाल मन को एक साथ हो रही थी। कच्चे मन और कच्चे घड़े में यही तो समानता है। थोड़ी सी नेह का स्पर्श पाते ही उससे पूरी तरह जुड़ जाते हैं और उसी में अपना सारा संसार देखने लगते हैं। हम सबसे ज्यादा अकेले तब होते हैं जब बहुत सारी भीड़ में होते हैं, भुवरी के पाँचों भाई-बहन और माता-पिता तो थे लेकिन कजरी से जो भुवरी को अतिरिक्त स्नेह मिलता था। वह उन दोनों का रिश्ता एक-दूसरे से बेहद प्रगाढ़ कर दिया था। यह अबोला रिश्ता था जिसमें न शब्द थे, न अर्थ थे, सिर्फ भावनाएँ थी और एक-दूसरे से लगाव था। इधर भुवरी की माँ ने उसके पहनने के लिए लोहे वाले बक्से में से भुवरी का फ्रॉक भी निकाल दिया। वैसे तो यह भी नया नहीं था, दो बरस पुराना ही था लेकिन कुछ ठीक-ठाक हालत में था। यह किसी तीज-त्योहार या कहीं शादी-विवाह पड़ने पर ही निकलता था। भुवरी जब तक बाल बनाकर और फ्रॉक पहनकर तैयार हुई तब तक भुवरी के मामा ने खाना खाकर अपने गाँव जाने के लिए साइकिल भी निकाल ली। साइकिल के स्टैंड पर पीछे भुवरी को बैठा दिया। भुवरी के माई ने नानी को देने के लिए संजोग से कल ही भूंजा भुंजवाई थी उसमें से आधा भूंजा एक झोले में करके भुवरी के हाथों में थमा दिया कि नानी को दे देना। साइकिल दालान में खड़ी थी और वही दालान में खम्भे से कजरी बँधी हुई थी। जाने कैसे कजरी को यह आभास हो गया कि भुवरी उसे छोड़कर कहीं जा रही है, वह कातर स्वर में मिमिआने लगी। चुप ही नहीं हो रही थी। उसकी पुकार से भुवरी का मन भारी होने लगा। वह चाह कर भी रुक नहीं सकती थी। मामा ने साइकिल के पैडल को मारकर जैसे-जैसे साइकिल को आगे बढ़ाया कजरी वैसे- ही-वैसे तेज आवाज में बोलती रही। कजरी का कातर स्वर में मिमिआना उसके कानों में गूँज रहा था, जैसे-जैसे भुवरी दूर जा रही थी। कजरी और तेज आवाज में बोलते जा रही थी, साइकिल आगे की तरफ जा रही थी और भुवरी का मन और आँख पीछे की तरफ कजरी के तरफ ही देख रहा था जब तक कि वह आँखों से ओझल नहीं हो गई। जैसे-जैसे साइकिल आगे बढ़ रही थी वैसे-वैसे उसकी चिंताएं भी उसके मन पर सवार हो रही थी। भुवरी के आँखों में आँसू झिलमिलाने लगे। रास्ते में पड़ने वाले ऊख के खेत भी उसे अच्छे नहीं लग रहे थे, वरना अन्य दिन होता तो ऊख के खेत देखते ही भुवरी एकदम प्रसन्न हो जाती थी और मजे से तोड़कर स्वाद लेती। पर आज स्वाद पर भारी उसके मन का दुःख पड़ रहा था। नानी के घर पहुँचने पर आँखों से लाचार नानी ने पैर छूने पर खूब आशीर्वाद दिए और बीमार मामी बहुत ही खुश हो गई कि कम-से-कम अब समय से रोटी पानी मिल जाएगा। भुवरी का उतरा हुआ चेहरा देखकर आखिरकार मामी ने पूछ लिया- "बिटिया तुम्हारा चेहरा काहे उतरा हुआ है .. का तुम यहाँ आने से खुश नहीं हो ?" "नहीं मामी ऐसी बात नहीं है" और घर-परिवार के बारे में हाल-चाल पूछने लगी। मामी का व्यवहार अच्छा होने की वजह से भुवरी को यहाँ पर भी बहुत ज्यादा पराया पन नहीं लगता था। बस कजरी और माई दोनों बहुत याद आते थे। भुवरी ने मामी की बहुत सेवा की। दोनों टाइम खाना गरम-गरम बना कर देना और पीयरी से पीड़ित मामी की देह को आराम और बढ़िया खाना मिला तो तुरंत ही उसकी तबियत बेहतर होने लगी। पीले पड़े चेहरे की ललाई लौटने लगी। मामी तो दुलार करती ही है। मामी के साथ नानी भी बहुत ही ज्यादा प्यार करती और अक्सर अपने पास बैठाकर उसके बालों को अपने अंदाजे के अनुसार सुलझाती रहती। पता नहीं क्यों भुवरी को नानी और कजरी का प्यार एक समान ही लगता था। दोनों में शब्द बहुत कम थे, कजरी की भाषा भी समझ नहीं पाती थी और

नानी की भी बहुत सारी बातें उसके समझ में नहीं आती थी लेकिन उसे बहुत अच्छा लगता था। नानी भले ही देख नहीं पाती थी लेकिन धीरे-धीरे उसके बालों को सहलाती थी। धीरे-धीरे घर को संभालते, मामी की सेवा करते-करते तकरीबन 10 दिन के जगह 20 दिन बीत गए तब जाकर मामी पूरी तरह ठीक हुई। नानी आँखों से लाचार थी लेकिन शब्द पूरी तरह समझती थी। भुवरी की बातचीत से नानी को पूरी तरह अंदाजा था कि भुवरी अपने घर जाने को बहुत लालायित है इसीलिए मामी के ठीक होते ही पहला काम नानी ने भुवरी को उसके घर पहुँचाने के लिए कहा तो भुवरी एकदम से खुश हो गई और आज जाना तय हुआ था इसलिए सब काम जल्दी-जल्दी खत्म कर दी। पूरे रास्ते उसका मन एकदम खुशी के मारे डूबा रहा कि अब जाकर उसे अपनी कजरी से मिलने का मौका मिलेगा। उसे हरी घास खिलाने के लिए दूर खेतों के तरफ ले जाऊंगी। पता नहीं किसी ने इतने दिनों में उसे खिलाया होगा या रुखा-सुखा ही खिलाया होगा। नंदपुर गाँव में अपने घर पहुँचते ही उसकी नजर कोने में बने बकरियों के बाड़े की ओर गई, वहां पर कजरी नहीं थी। उसे लगा उसकी बड़ी बहन उसे चराने ले गई होगी। उसकी खुशी का ठिकाना नही रहा। खुशी उसके अंग-अंग से झलक रही थी। साइकिल के रुकते ही उस पर से कूद कर उतर पड़ी और भागकर आँगन में पहुँची। घर के अंदर से आती पूड़ी की खुशबू ने उसे हैरान कर दिया। उसकी जीभ की स्वाद ग्रंथियों ने उसके भूख को जागृत कर दिया था। आखिर पूड़ी उसको रोज-रोज कौन-सी मिलने वाली चीज थी। साल में एकाध बार ही तो किसी के ब्याह-शादी या मुंडन इत्यादि में मिल जाता था या फिर ...उसे याद आया की पूड़ी तो तभी इस घर में बनती है जब माई किसी बकरी को बेचकर पैसा पाई रहती है। अचानक से भुवरी का दिल जोरो से धड़कने लगा, काटो तो खून नहीं वाली उसकी हालत हो गई। भागकर जल्दी से एकबार फिर से वह बकरी के बाड़े की तरफ गई। सारी बकरियाँ वहाँ पर थी बस एक कजरी दिखाई नहीं दी। उस नन्ही सी जान भुवरी का दिल किसी एक्सप्रेस ट्रेन के जैसे धड़-धड़ कर रहा था। दालान में खूँटी पर कजरी के गले की रस्सी देखकर भुवरी का दिल बैठ गया और उसके आँखों से आँसू गिरने लगा, ऐसा लगा फिर से कजरी कहीं पर मे-मे करके बुला रही है। कजरी वहाँ न होकर भी वहीं पर थी, बस उसका शरीर जरूरतो की भेंट चढ़ चुका था, साथ ही भुवरी के स्नेह भी ..... भुवरी के आँखों से आँसुओं का झरना फूट पड़ा। अच्छा हुआ दु:ख पड़ने पर भगवान ने रोने का प्रावधान कर रखा है, नहीं तो अनंत पीड़ाएं मनुष्य का जीवन दुर्भर कर देती।

*गिरिजा इलेक्ट्रॉनिक्स, काशीपुर, बलिया बैरिया राजमार्ग, जिला +पोस्ट –बलिया।

व्यंग

कविता की उपलब्धि का कल्पनावादी सुख

सुरेन्द्र अग्निहोत्री*

क से कला, व से विचार के ता से तालमेल वाले कार्य से कविता का सृजन होता है। पहली कविता वाल्मीकि के मुंह से तब निकली थी जब वाल्मीकि जी तमसा नदी से नहाकर निकले ही थे कि तभी उनके सामने ही एक शिकारी ने क्रौंच के जोड़े पर तीर चला कर एक को मार डाला। वाल्मीकि से रहा नहीं गया और उनके मुंह से निकला शब्द 'मा निषाद प्रतिष्ठाम्'। श्लोक संस्कृत की कविता के बाद कविता के क्षेत्र में अगर कोई क्रांति हुई तो अब ही हो रही है। सूर, कबीर, तुलसी, प्रसाद, निराला, मैथलीशरण, दिनकर, सुमन, अज्ञेय तो रचने में लगे रहे। यानि आजकल जो रचा जा रहा है वह अनूठा है। जिसे हम कलयुग कहते हैं यानि कलपुर्जे का युग जिसमें सब कुछ यंत्रवत् है। कोई संवेदना नहीं रही सृजन में, ऊल-जलूल लिखकर अपनी सुन्दर फोटो के साथ फेसबुक पर चेपकर महाकवि मार्तण्ड लिखने से कौन रोक सकता है! सैकड़ा दो सैकड़ा सम्मान पत्रों को अपने ड्राइंग रूम में सजाने वाले को पड़ोसी तक नहीं पहचानते हैं! एक जमाना था शहर कवियों के नाम पर जाने जाते थे। अब तो गलियों को तो छोड़ दें घर के बच्चों को तक पता नहीं होता है कि हमारे माता-पिता इतने महान साहित्यकार हैं! कविता साहित्य की एक अनुपम विधा है। माता-पिता कविता गढ़ने के लिए "कॉपी-पेस्ट" करने की हुनर और उसके शब्द बदलकर वाह-वाही लूट लेने की जुगत से वेचारे परचित होने के कारण फेसबुकिया ठकुरसुहाती, स्वीकार करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते हैं। "कॉपी-पेस्ट" करने की हुनर के कारण प्रतिष्ठित पत्रिका में तो उनकी रचना छाप नहीं सकती है। यह बात जानते हैं। इसका तोड़ भी उन्होंने निकाल लिया है। जो अपने पत्र-पत्रिका का शुद्ध नाम तक रख नहीं पाता है और जो पत्रिका बाजार में नहीं फेसबुक पर ही दिखती है उसके सम्पादक से आरजू-मिन्नत कर रचना छपाकर अपनी फेसबुक पर लगाकर अपने मुँह मियाँ मिठ्ठू बन जाते हैं। सोशल मीडिया के दौर में जो कविताएं गढ़ रहे हैं उससे हिन्दी कविता को भारी नुकसान होता रहे, इन्हें कोई राई रत्ती फर्क नहीं पड़ता है। साहित्य सृजन में खुद को खपाना और तपाना पसंद नहीं है। कविता रोचक नहीं की त्वरित आलोचना भी सह नहीं पाते हैं तुरंत आलोचक को बैन करने में देर नहीं लगाते हैं। ठीक है मेरी महान कविता नहीं है। मामूली हैं, लेकिन "भावपूर्ण" तो है जिसे आप सर्वोत्तम न माने पर पाठक के लिए केवल शब्दों की एक गाँठ के बजाय आगे बढ़ने की भावना देती है। अनुभव जन्य अनुभूति को केवल कविता के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है। जिसको मैंने व्यक्त किया तो इतनी आलोचना आपके पूर्वाग्रह का परिणाम बताकर अपने को समर्थ सिद्ध करने की पारंगता होती है। जैसा कि पीटर लैमार्क कहते हैं, "कविता के रूप में कविता में रुचि के सापेक्ष, अनिवार्य रूप से केवल एक ही तरीका हो सकता है जिसमें किसी कार्य की सामग्री को व्यक्त किया जा सकता है, सामग्री-पहचान किसी भी अलग रूप में खो जाती है" (2009, 410-11)। जो लोग इस प्रकार के विचार रखते हैं वे यह नहीं सोच सकते कि एक कविता के सभी अर्थ व्याख्या का विरोध करते हैं। फेसबुकिया कवि जानबूझकर ध्वनि, लय, छंद" को नजरअंदाज कर अपने निहितार्थ शब्दों को तोड़ते-मरोड़ते हैं। फेसबुकिया जगत में वही महान रचनाकार अपने हाथों बन जाता है। पाठकों के लिए नहीं अपने लिए लिखने का सही फायदा मिलता है। बहुत सी कविता की बातों पर बहस से बचकर तीरंदाज की उपलब्धि की तरह सराहना का आनंद ले कविता की उपलब्धि का कल्पनावादी सुख प्राप्त करते हैं।

*ए-305, ओ.सी.आर., विधान सभा मार्ग, लखनऊ।

कविता

"खेती की जमीन को बचाइए"

डॉ.विनोद सिंह*

भवन बनाइए, शॉपिंग मॉल बनाइए, चौड़ी सड़कें बनाइए
मेट्रो बनाइये, नए शहर वसाइए, नई राजधानी वसाइए
पर खेती की जमीन को बचाइए।
जमीन से कोयला निकालिए, लोहा निकालिये
सोना, चाँदी, हीरा निकालिये
पर खेती की जमीन को बचाइए।
कल सब कुछ होगा हमारे पास
बड़ा घर, बड़ी गाड़ी, चौड़े हाइवे, बड़े उद्योग,
सबका विकल्प होगा हमारे पास
पर नही होगा अन्न का विकल्प।
अब तो वैज्ञानिकों ने भी कह दिया है
दुनिया का तापमान कुछ बढ़ गया है
मौसम पूरी तरह से बदल गया है
खेती करना मुश्किल हो गया है।
सबको पता है खेती का जीवन के लिए महत्व
खेती से अन्न है, अन्न से जीवन है,
और अन्न नहीं तो कुछ नहीं
इसीलिए कहता हूँ खेती की जमीन को बचाइए।
हम बहुमंजिला इमारतें तो बना लेंगे
पर नहीं बना पाएंगे बहुमंजिला खेत
क्या हम कर पाएंगे आने वाली पीढ़ी की माँगों को पूरा
या कर देंगे उनके जीवन में अंधेरा।
अभी भी वक्त है, जागिए कहीं ऐसा न हो कि
विकास की इस दौड़ में हम वहाँ पहुँच जाएं
जहाँ से विनाश की शुरुआत हो जाए,
इसीलिए कहता हूँ खेती की जमीन को बचाइए।

*वैज्ञानिक-डी, बु.बी.प्र. व प्र.के., पाली।

नदी मेरी माँ है

नीलोत्पल रमेश*

नदी मेरी माँ है
माँ के जितने गुण हैं
उससे अधिक
इसमें भरे पड़े हैं
माँ जन्मदायिनी है
तो नदी जीवनदायिनी है
दोनों में अनेक समानताएं हैं
माँ बचपन से ही
हमारा ख्याल रखती हैं
तो नदी हमारे सुख-दुख
जन्म-मरण में
हमेशा साथ रहती है
माँ तो सिर्फ
अपनी संतान का ही
पालन-पोषण करती हैं
पर नदी
सम्पूर्ण जगत का
भरण-पोषण करती है
और अहर्निश
लगी रहती है भलाई में
नदी मेरी माँ है

उसमें जीवन है
धड़कन है
और है सबको
संभाले रहने की शक्ति
नदी और माँ
मानव जीवन में
एक-दूसरे के
पूरक का काम करती हैं

यही कारण है
कि जब तक दोनों हैं
जीवन में खुशियाँ हैं
किसी एक के बिना
यह जीवन अधूरा है
इसीलिए नदी
मेरी माँ है।

*बुध बाजार, हजारीबाग, झारखण्ड

राष्ट्रभाषा

बेद नारायण सिंह*

मुझे गर्व है राष्ट्र की भाषा पर जो मुझसे बोली जाती है।
ज्ञानी, अनपढ़ और जीव-जंतु सबके मुख से बोली जाती है॥

हर बात अलग इसके अंदर, रिश्ता–नाता बिलगाती है।
हर श्वास गति की तरंग लिये, भाषा जो बोली जाती है॥
हर क्षेत्र की मातृभाषा है, पर हिन्दी राष्ट्र की भाषा है।
अपने संतती से सुन उच्चारण, बहुरानी बना ये रखती है॥
नहीं बैर इसके अंदर, सबको ओढ़ाते आँचल देखा।
अकांता, लुटेरा, व्यापारी को इस दो का बासी बनते देखा॥
मंदिर बनते, मस्जिद बनते, गिरजा घर भी बनते देखा।
ग्राम खेत-खलिहार में मैंने बन देवों की पूजा देखा॥

*सहायक अधीक्षक (प्रशा.), क.मा.बैंक, चाईबासा।

बेहाल परिंदे

डॉ.राजीव गुप्ता*

सूखी नदियाँ ताल परिंदे,
गरमी से बेहाल परिंदे।
कटे जहाँ पर जंगल कोई,
वहीं हुए कंगाल परिंदे।
लालच में तुम फँस मत जाना,
बिछे हुए हैं जाल परिंदे।

मैं हूँ नदिया होकर प्यासी,
तेरे क्या हैं हाल परिंदे।
नाजुक से हैं भोले-भाले,
दिल से मालामाल परिंदे।
कहाँ बनाएँ एक घरौंदा,
रोज रहे हैं टाल परिंदे।
सुधरेगी इंसा की फितरत,
तेरा क्या है ख्याल परिंदे।
मत इंसा की बातों में आना,
चलता है हर चाल परिंदे।
खबरदार नीचे मत उतरो,
काला है कुछ डाल परिंदे।

*बाग कूँचा, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश।

तुमसे मिलकर

साक्षी मिश्रा*

तुमसे मिलकर अक्सर ऐसा लगा है जैसे,
बिना दीवारों के भी
बसाए जा सकते हैं घर,
जैसे बंजर जमीं पर भी
बोये जा सकते हैं फसल,
जैसे चट्टानों पर भी
छा सकती है हरियाली,
तुमसे मिलकर अक्सर ऐसा ही लगा है जैसे,
एक हारा हुआ आदमी भी
जीत सकता है पूरी दुनियां,
तुमसे मिलकर अक्सर ऐसा ही लगा है जैसे,
मैं हारी नहीं हूँ अभी।

*पत्नी श्री आशु कुमार, वैज्ञानिक-बी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची

जीवन रक्षक ओजोन परत

हरेन्द्र श्रीवास्तव*

वायुमंडल में मौजूद ओजोन परत
प्रकृति में अहम भूमिका निभाती
युगों-युगों से बन जीवों की रक्षक
धरती का सुरक्षा कवच कहलाती।
धरती पर ना आयें घातक किरणें
ओजोन परत लेती है उनको रोक
सूरज की पराबैंगनी किरणों को
ओजोन परत सदा लेती है सोख।
एसी फ्रीजर की हानिकारक गैसें
ओजोन परत को पहुंचाती हैं कष्ट
क्लोरीन ब्रोमीन के परमाणुओं से
ओजोन परत तेजी से हो रही नष्ट।
मानव जनित कृत्रिम उपकरणों से
ओजोन परत का हो रहा है क्षरण
नित बढ़ते ओजोन परत के छिद्र से
धरा पर आ रही पराबैंगनी किरण।
खतरनाक पराबैंगनी किरणों का
दंश झेल रहे हैं मानव और प्राणी
पराबैंगनी किरणों से पैदा हो रही
कैंसर और मोतियाबिन्द बीमारी।
यदि छाया रहा ओजोन पर संकट
फैलेंगे रोग बढ़ेगा धरती का ताप
पराबैंगनी विकिरण के प्रकोप से
जीव-जगत का हो जायेगा नाश
ओजोन परत का ना हो विघटन
हम सब मिलकर लें दृढ़ संकल्प
ओजोन परत से ही जग में जीवन
ओजोन परत का करें हम संरक्षण।

*तहसील-कोरांव, जिला-प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

संस्कार

गौरी शंकर वैश्य विनम्र*

अब आज की पीढ़ी के संस्कार देख लो
ऊँचे भवन का, खोखला आधार देख लो।
कहते हैं हैलो-हाय, बाय-बाय सभी से
भूले चरण- स्पर्श, नमस्कार देख लो

दुष्कर्म, ठगी, लूट, मारकाट नित्य प्रति
विज्ञापनों से हैं पटे अखबार देख लो।
खाद्यान्न, दूध, फल, दवा में घोर मिलावट
चलता हुआ अनीति का व्यापार देख लो।
संयुक्त थे कुटुंब, तब परस्पर जुड़ाव था
इकाइयों में टूटते, परिवार देख लो।
छल, स्वार्थ, कपट, देशद्रोह, भ्रष्ट आचरण
बहुरूपिणी सत्ता का चमत्कार देख लो।
जनता ही पिसी जा रही, राजकाज में
राजाओं के सजे हुए दरबार देख लो।

*17 आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ-226022

मुसाफ़िर

नेतलाल यादव*

मैं खड़ा हूँ, जी हाँ !
मुसाफ़िर के इंतजार में
जाना है मुझे सफ़र में
कुछ ही दूर सही
इनके साथ, इनकी गाड़ी में
जैसे अर्जुन के साथ चढ़ते थे
कुरुक्षेत्र में स्वयं केशव
बनाते थे, रण की नीतियाँ
मानो कुछ ऐसा ही
चिरपरिचित मुसाफ़िर के साथ
बनाता हूँ कल की सारी
योजनाएँ, जिसको अम्ल कर
अपने जीवन के कुछ पल को
यादगार बनाता हूँ
वह मुसाफ़िर !
कोई सगा-सा होता है
जिनका होना, जीवन में
इतना अनिवार्य है कि
इसके वगैर भूल सकते हो
आप खिल-खिलाकर हँसना
हँसकर अल्हड़ मस्ती में खोना
तनाव के सलवटों को दूर करना
खुशियों-सी खुशबू को महकाना
तब फिर क्या जरूरी नहीं ?
जीवन के पथ पर
कदम-से-कदम मिलाकर
साथ चलने के लिये
एक सच्चा मुसाफ़िर का बनाना।

*कुसुम विहार दामोदरपुर रोड, धनबाद, झारखंड।

लघु कथा

बुद्धिमान राजा

डॉ. दिनेश दत्त शर्मा*

हमारे देश में बच्चों को सुलाने के लिए माँएं रात में कहानी सुनाती हैं। बचपन में हमें सुलाने के लिए भी हमारी माताश्री अक्सर राजा-रानी की कहानियाँ सुनाया करती थी जिससे हमें गहरी नींद आ जाए। हम भी उन कहानियों को बड़े आनंद से सुना करते थे। इसी कड़ी में मेरे को एक कहानी याद आ रही है। एक राजा था उसका नाम था खेंचूमल - बटोर चंद। वह अपने नाम से पूरे राज्य में विख्यात था तथा अमीर प्रजा से लगान बटोर कर राजस्व में डालता था। उस धन से वह गरीब व असहाय लोगों की सहायता करता था। सेठ-साहूकार, ज़मींदार, सेना और प्रजा बहुत सुखी और खुश रहती थीं। खेंचूमल - बटोर चंद राजा विक्रमादित्य की तरह बहुत ही बुद्धिमान तथा पृथ्वीराज चौहान की तरह बहादुर वीर योद्धा था जिससे आस-पास के राज्यों के राजाओं को आक्रमण करने की हिम्मत नहीं होती थी। उनका खजाना हमेशा सोने, चाँदी, हीरा-ज़ेवरात व सिक्कों से भरा रहता था। राजा की तीन रानियाँ थीं। राजा अपनी तीनों रानियों में से सबसे ज्यादा प्यार अपनी पहली रानी से करते थे क्योंकि वो बेहद खूबसूरत थी। पहली रानी के सुंदर होने की वजह से राजा अपनी दूसरी और तीसरी रानी की तरफ कम ध्यान देते थे। वहीं दूसरी रानी को राजा अपना अच्छा मित्र मानते थे तो थोड़ी-बहुत उस पर ध्यान देते थे। अब बच गई तीसरी रानी जो देखने में बहुत सुंदर नहीं थी परंतु वह गुणवती के साथ-साथ निपुण योद्धा व विद्वान थी इसलिए राजा तीसरी रानी को एक योद्धा के रूप में देखते थे। राजा की तीनों रानियों से एक-एक पुत्र था। उसकी सबसे बड़ी समस्या यह थी कि वह तीनों पुत्रों में से किसको अपना उत्तराधिकारी बनाए। किसे युवराज घोषित किया जाए। इसके लिए राजा ने एक तरकीब निकाली और तीनो पुत्रों को बुलाकर कहा– अगर तुम्हारे सामने कोई अपराधी खड़ा हो तो तुम उसे क्या सजा दोगे ? पहले राजकुमार ने कहा कि अपराधी को मौत की सजा दी जाए तो दूसरे ने कहा कि अपराधी को काल कोठरी में बंद कर दिया जाये। अब तीसरे राजकुमार की बारी थी। उसने कहा कि पिताजी सबसे पहले यह देख लिया जाये कि उसने गलती की भी है या नहीं। यदि अपराध हुआ भी है तो कितना। अपराध की गम्भीरता भी तो न्याय करते समय ध्यान में रखनी होगी। उदाहरण के लिए उस तीसरे राजकुमार ने एक कहानी सुनाई – शिवनगर राज्य में एक राजा के पास एक सुन्दर सा तोता था। वह तोता बड़ा बुद्धिमान था। उसकी मीठी वाणी और बुद्धिमत्ता की वजह से राजा उससे बहुत खुश रहता था। एक दिन की बात है कि तोते ने राजा से कहा कि मैं अपने माता-पिता के पास जाना चाहता हूँ। वह जाने के लिए राजा से विनती करने लगा। तब राजा ने उससे कहा कि ठीक है पर तुम्हें पाँच दिनों में वापस आना होगा। वह तोता जंगल की ओर उड़ चला। वह अपने माता-पिता से जंगल में मिला और बहुत खुश हुआ। ठीक पाँचवें दिन जब वह वापस राजा के पास जा रहा था तब उसने एक सुन्दर सा उपहार राजा के लिए ले जाने के लिए सोचा। वह राजा के लिए अमृत फल ले जाना चाहता था। जब वह अमृत फल के लिए पर्वत पर पहुँचा, तब तक रात हो चुकी थी। उसने फल को तोड़ा और रात वहीं गुजारने की सोची। जब वह सो रहा था कि तभी एक साँप आया और उस फल को खाना शुरू कर दिया। साँप के जहर से वह फल विषाक्त हो गया। जब सुबह हुई तब तोता उड़कर राजा के पास पहुँच गया और बोला - राजन मैं आपके लिए अमृत फल लेकर आया हूँ। इसे खाने के बाद आप हमेशा जवान और अमर रहेंगे। तभी महामंत्री ने कहा कि महाराज पहले देख लिया जाए कि फल सही भी है या नहीं ? राजा ने बात मान ली और फल में से एक टुकड़ा जो कुतरा हुआ था, कुत्ते को खिलवाया। फल खाते ही कुत्ता वहीं तड़प-तड़प कर मर गया। राजा बहुत क्रोधित हुआ और अपनी तलवार से तोते का सिर धड़ से अलग कर दिया। राजा ने वह फल बाहर फेंकवा दिया। कुछ समय बाद उसी जगह पर एक पेड़ उगा। राजा ने सख्त हिदायत दी कि कोई भी इस पेड़ का फल ना खाए। राजा को लगता था कि यह अमृत फल विषाक्त होगा जिसे खिलाकर तोते ने मुझे मारने की कोशिश की थी। उसके राज्य में एक बूढ़े आदमी को कोढ़ की बीमारी हो गई। उसके घरवाले ने उसे गाँव से बाहर उसी पेड़ के नीचे छोड़ आए जिससे दूसरे लोगों को यह बीमारी न हो। उपचार और दवा के बिना रोग बढ़ने लगा। वह आदमी दर्द, भूख, प्यास से बहुत परेशान हो चुका था। उसने प्रण किया कि वह इस विषाक्त फल को खाएगा और अपनी जीवन लीला समाप्त कर देगा। थोड़ी देर बाद एक अधेड़ उम्र का आदमी आया और उस पेड़ के नीचे विश्राम करने लगा। उसकी नज़र उस विषाक्त फल तथा बूढ़े कोढ़ी पर पड़ी। उसने कोढ़ से ग्रस्त आदमी से पूछा - बाबा भूख लगी है क्या, इस फल को खाओगे। बाबा को उस फल की कहानी मालूम थी उसने अपना सर हाँ में हिलाया और मन-ही-मन बुदबुदाया कि मुझे तो मरना ही है परंतु मेरे साथ-साथ इस फल को खाकर यह भी "नर्कवासी" हो जाएगा। उस के पश्चात् दोनों ने वह फल खाये और दोनों हष्ट-पुष्ट, स्वस्थ, सुंदर और जवान हो गए क्योंकि उस वृक्ष पर उगे हुए फल विषाक्त नहीं थे। जब इस बात का पता राजा को चला तो उसे बहुत ही पछतावा हुआ और उसे अपनी करनी पर लज्जित होना पड़ा। राजा खेंचूमल - बटोर चंद के दरबार में अकबर की भाँति नौ रत्न भी थे जिनसे राजा राज-काज में उनसे सलाह-मशवरा करते थे। उसमें से एक मंत्री से रहा नहीं गया और राजकुमार से प्रश्न कर डाला कि उस फ़ल को खाकर कुत्ते की मृत्यु कैसे हो गई। इस पर राजकुमार ने कहा कि मंत्री जी आप तो खुद ही विद्वान हैं परंतु वह मंत्री कहने लगा कि राजकुमार हम आपके मुख से सुनना चाहते हैं। राजकुमार ने उत्तर दिया कि सर्प के खाने से केवल फल ही विषाक्त हुआ था, उसका गुण नहीं। इस उत्तर को सुनकर मंत्री जी बहुत प्रसन्न और संतुष्ट हुए। उसके पश्चात् उस पेड़ के नीचे उस गाँव तथा उसके आस-पास के इलाक़े के लोग एकत्र होने लगे। वहाँ ख़ूब चहल-पहल होने लगी जिनमें महिलाओं की संख्या अत्यधिक थी। जो जवान व स्वस्थ होने के लिए इस वृक्ष के फल खाने के लिए उत्सुक थे। जब राजा को इन सभी बातों का पता चला तो उसे बहुत दुख हुआ और राजा ने उस तोते की विशालकाय स्वर्ण मूर्ति उसी वृक्ष के नीच चबूतरे पर स्थापित करवा दी। अब यह स्थान सभी को आकर्षित करता था। तीसरे राजकुमार के मुख से यह कहानी सुनकर राजा खेंचूमल - बटोर चंद तथा महामंत्री सहित नव रत्न बहुत ही खुश हुए और तीसरे राजकुमार को सही उत्तराधिकारी समझते हुए उसे ही अपने राज्य का युवराज घोषित कर

दिया। ये तीसरा राजकुमार कोई और नहीं बल्कि उनकी तीसरी रानी का बेटा था। इससे यह निष्कर्ष निकालता है कि किसी भी अपराधी को सजा देने से पहले यह देख लेना चाहिए कि उसकी गलती है भी या नहीं। कहीं भूलवश आप किसी निर्दोष को तो सजा देने नहीं जा रहे हैं। निरपराध को कतई सजा नहीं मिलनी चाहिए।

*सेवानिवृत्त वैज्ञानिक, के.रे.उ.अ.व प्र.सं., मैसूर।

इन्हें कुछ मत कहो, आने वाले वक्त के लोग हैं

कामेशवर पाण्डेय*

कुछ सामूहिक परिचर्चा का साहित्यिक आयोजन था। मैं भी श्रोता समूह में आमंत्रित था। अच्छे-अच्छे विचारक एवं प्रबुद्ध विद्वान अपना-अपना विचार रख रहे थे। प्रसंगवश एक विचारक आज के परिवारों का परिदृश्य रख रहे थे और लोगों को कल्पना लोक से हकीकत की दुनिया में उतार रहे थे कि कैसे संयुक्त परिवार का अवसान हो रहा है। पुरानी आदतों को चुनौती दी जा रही है और फलस्वरूप बाप-बेटा में अलगाव हो रहा है। पुत्र तभी तक माँ-बाप के साथ रह रहा है जब तक उसका मतलब चल रहा है। मतलब निकलते ही उसे अलग हो जाने में और दो टूक जवाब देने में देर नहीं लग रही है। कुछ ऐसे ही भविष्य की सोच रख रहे थे संत शिरोमणि तुलसीदास जी, तभी तो उन्होंने रामचरितमानस के उत्तरकांड के कलयुग महिमा संदर्भ में लिख डाला है :-

सुत मानहिं मातु-पिता तब लौं,
अबला मन दिख नहीं जब लौं।
ससुरारि की नारी प्यारी लगे,
रिपु रूप कुटुम्ब भये तब ते।

मुझे आश्चर्य इस बात का हो रहा है कि चार सौ वर्ष पहले तुलसीदास ने कैसे कल्पना कर ली होगी कि कलयुग में उत्तरार्ध में ऐसा समय आएगा। उनकी कल्पना आज तक साकार हो रही है और वर्तमान समाज उस कल्पना को मूर्त रूप दे रहा है। लोक, लाज, सामाजिक भय और आदर्श स्वार्थ की बलि वेदी पर चढ़ रहा है। मनुष्यता लजाकर भाग गई है तभी तो ऐसा दृश्य हमारे समक्ष उपस्थित हो रहा है। एक समय था जब माँ-बाप के चरणों में लोग भगवान का दर्शन कर रहे थे और आज लोग कहीं से आकर चरण स्पर्श करना भी भूल जाते हैं। मैं अपने मित्र के यहाँ एक दिन बैठा बातचीत कर रहा था कि अचानक उनका पोता आकर कहने लगा- दादा जी मैं मुम्बई जा रहा हूँ। दादाजी की उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही वह इस प्रकार तेजी से निकल गया जैसे उसे साँव सूंघ गया हो। वह यह भी पूछना लाजिम नहीं समझा कि मैं यानी मैं कौन हूँ। मैं अपने मित्र का चेहरा पढ़ने लगा। अचानक उन्होंने ही कह डाला इन्हें कुछ मत कहो यह आने वाले वक्त के लोग हैं। मैं भी निरुतर हो गया। मैं मानता हूँ कि आज जिंदगी की रफ्तार तेज हो गई। प्रतिस्पर्धा का युग आ गया है। हर क्षेत्र में अपने को टिकाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। विज्ञान की उपलब्धियों और संसाधनों ने हमारा जीवन सुलभ, आरामदायक और सहज बना दिया है लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि हम मौलिकता ही भूल जाएँ। बड़े-बड़े पदों पर काम करने वाले लोग अपने बूढ़े माँ-बाप को अपने चमचमाते बंगले में क्यों नहीं रखना चाहते हैं ? क्या उनके बाप के रहने से उनके शान एवं ऐश्वर्य में कमी आ जाएगी ? कोशिश तो लोग यही करते हैं कि माता-पिता बुढ़ापा गाँव पर ही काटे या किसी वृद्ध आश्रम में बिताएँ, हाँ एक बात जरूर है कि उसका खर्च वही वहन करेंगे लेकिन ऐसा क्यों ? आज के युग में यह एक मसला है, एक समस्या है। मैं मुट्ठी भर आदर्शवादी लोगों से क्षमा याचना करता हूँ जो आज भी उस आदर्श और सच्ची परम्परा को कायम रखे हुए हैं। मैं उनको इसमें शामिल नहीं कर रहा हूँ वरण मैं उनको नमन करता हूँ जो आज भी समाज में अपने आदर्श की ज्योति जलाए रखे हैं, जो समाज के लोगों के लिए अनुकरणीय है। लेकिन बहुतायत संख्या ऐसे ही लोगों की है। इससे समाज में गलत संदेश जा रहा है। ऐसे उदाहरणों से पिता या अभिभावक सतर्क हो जा रहे हैं और अपने भविष्य के लिए धन रखकर ही बच्चों पर खर्च कर रहे हैं ताकि बुढ़ापे में उन्हें जिल्लत की जिंदगी ना जीना पड़े। हाँ ! एक बात जरूर है कि बेटियाँ माँ-बाप को अवश्य देखती हैं, उन पर प्रायः यह लागू नहीं होता है। आने वाले वक्त के लोगों को तो यह मानकर ही चलना होगा कि माँ-बाप बूढ़े होंगे, रोगी होंगे या ऐसी बीमारियों से ग्रस्त होंगे जिन्हें भरपूर सेवा की आवश्यकता पड़ेगी। ऐसी परिस्थिति के लिए उन्हें तैयार रहना होगा क्योंकि वह भी तो एक दिन बूढ़े होंगे, उन्हें भी तो ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। मैं आने वाले वक्त के ऐसे लोगों से यह अपील करना चाहता हूँ कि वे इस मसले पर विचार करें ताकि समाज में सकारात्मक संदेश जाए। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस मसले पर शोध कार्य हो रहे हैं। सिनेमा जगत भी सचेष्ट है, तभी तो बागवान, 'अमृत और 'अवतार' जैसे सिनेमा बनाए जा रहे हैं लेकिन समाज पर या आने वाले वक्त के लोगों पर इसका रंच मात्र भी असर नहीं पड़ता है। इन चलचित्रों को दर्शक, विशेषकर आने वाले वक्त के लोग केवल मनोरंजन का साधन मानते हैं। उससे जो सीख मिलती है उसकी परवाह ये लोग बिल्कुल नहीं करते। आखिर क्यों ऐसी बात है कि ऐसे लोगों के मनों-मस्तिष्क में ऐसी नकारात्मक विचारधारा पनप रही है। संयुक्त रूप से रहने में उनका क्या बिगड़ जाएगा ? उनकी कौन सी स्वतंत्रता छिन जाएगी ? एक बात और है कि माता-पिता के पास धन और बल तो नहीं रह पाता है लेकिन अनुभव और आशीर्वाद नए वक्त के लोगों को हमेशा मिलता रहेगा। कहावत में भी कहा गया है कि 'बूढ़े की बात और आँवले के स्वाद का आनंद और लाभ बाद में प्राप्त होता है। पहले तो बूढ़ों की बात अटपटी लगती है, आँवला का स्वाद कसैला लगता है लेकिन पानी पीने के बाद मीठा लगता है। पुरानी कहावतें बड़ी गुणकारी होती हैं। उन पर अमल करने से फायदा ही होता है। आने वाले वक्त के लोग झूठे अहंकार और धन के अभिमान में इन तथ्यों को नजरअंदाज तो अवश्य करते हैं लेकिन परिणाम प्रतिकूल ही होता है जिसके चलते उन्हें पछतावा अवश्य होगा। सुझाव मेरा और फैसला आपका बस।

* पूर्व राजभाषा अधिकारी, पूर्व रेलवे, हावड़ा,कोलकाता

पैसे के अलग-अलग नाम

डॉ. चीनीपल्ली रवि शंकर*

मैंने कभी नहीं सोचा था कि मनी/पैसा के अलग-अलग नाम हैं। कितनी दिलचस्प बात है ! आइए एक के बाद एक पता करें। मंदिर या चर्च में मनी को "दान" कहा जाता है। स्कूल में इसे शुल्क कहा जाता है। विवाह में इसे "दहेज" कहा जाता है। तलाक में यह "गुजारा भत्ता" बन जाता है। जब आप पर किसी का पैसा बकाया होता है तो यह "कर्ज" बन जाता है। जब आप सरकार को पैसा देते हैं तो इसे "कर" कहा जाता है। अदालत में इसे "जुर्माने" के रूप में भुगतान किया जाता है। सेवानिवृत्त सिविल सेवकों के लिए इसका भुगतान "पेंशन" के रूप में किया जाता है लेकिन कर्मचारियों और श्रमिकों के लिए इसका भुगतान "वेतन" के रूप में किया जाता है। जब स्वामी अपने अधीनस्थों को भुगतान करते हैं तो यह "मजदूरी" बन जाती है। जब आप बैंक से पैसे उधार लेते हैं तो इसे "ऋण" कहा जाता है। जब आप एक अच्छी सेवा के बाद पेशकश करते हैं तो यह किसी के लिए "टिप" बन जाता है लेकिन जब इसका भुगतान अपहरणकर्ताओं को किया जाता है तो इसे "फिरौती" कहा जाता है। जब सेवा के नाम पर अवैध रूप से पैसा प्राप्त होता है तो यह "रिश्वत" बन जाता है। अगला महत्वपूर्ण सवाल यह है कि जब एक पति अपनी पत्नी को देता है तो हम इसे क्या कहते हैं ? सरल उत्तर "कर्तव्य (DUTY)" है। हर आदमी को अपना कर्तव्य निभाना पड़ता है क्योंकि पत्नी कर्तव्यमुक्त नहीं होतीं।

*वैज्ञानिक-डी (सेवानिवृत्त), नांदयाल, कुरनूल जिला, आंध्र प्रदेश।

सपनों की दौड़

पूजा भारद्वाज*

सुबह आठ बजे एंट्री टाइम था। नौ बजे एग्जाम शुरू होगा। वह आठ बजकर पाँच मिनट पर एग्जाम सेंटर पहुँची तब तक परीक्षा केन्द्र का गेट बंद हो गया। परीक्षार्थियों को एक लम्बी कतार में खड़ा कर तलाशी का कार्य प्रारम्भ किया जा रहा था। वह बहुत दूर से आई थी। साथ में एक साल का छोटा बच्चा और पति थे। रोते बच्चे को पति की गोद में थमा वह स्कूल गेट की ओर बेतहाशा दौड़ी। हाँफते स्वर में उसने चौकीदार अंकल से गेट खोलने की रिक्वेस्ट की किन्तु उन्होंने अपनी असमर्थता जाहिर कर दी। इस मनाही पर एक साथ कई नकारात्मक भाव उसके चेहरे पर उभर आए। उसने जालीनुमा गेट से अंदर की ओर पास ही खड़े परीक्षा में तैनात दो-तीन अध्यापकों की ओर याचना दृष्टि से देखकर कहा, सर प्लीज गेट खोल दीजिए। समय हो चुका है मैडम। अब नहीं खुल सकता दरवाजा। प्लीज सर, बहुत दूर से आई हूँ। क्या आपने एग्जाम साइट पर सभी महत्वपूर्ण सूचनाएं नहीं पढ़ी थी ? प्रवेश-पत्र पर भी स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि परीक्षा केन्द्र पर प्रवेश की अनुमति आठ बजे के बाद नहीं दी जाएगी। पढ़ा नहीं आपने ? उसके चेहरे पर मायूसी उतर आई। क्या कहे ? कितनी जिम्मेदारियों, परेशानियों के बीच यहाँ तक पहुँची है। छोटा बच्चा, बीमार सास, घर की सारी जिम्मेदारियां, फिर पढ़ाई। अपने पैरों पर खड़ा होने के एक छोटे से ख्वाब में रंग भरने के लिए ये सैकड़ों किलोमीटर की दौड़ किस तरह लगाई है उसने ? कैसे कहे ? वो रुआंसी हो खामोश खड़ी रही। देखिए दरवाजा तय समय के बाद नहीं खोलने के सख्त आदेश हैं। हम कुछ नहीं कर सकते। जाइए आप। प्लीज सर, एक बार खोल दीजिए। पाँच मिनट ही तो ऊपर हुए हैं, भर्राए स्वर के साथ आँखों से मोटे-मोटे आँसू बिखर पड़े। ये रोना-धोना यहाँ मत करो। जब पता है दूर जाना है और एंट्री टाइम सुबह आठ बजे है तो और थोड़ा जल्दी चल देती आप घर से। सर साथ में छोटा बच्चा भी है, घर से तो रात के दस बजे ही निकल पड़े थे। तो और एक दिन पहले आ जाते, किसी रिश्तेदार के घर रुक जाते। दिल्ली में तो हर किसी का कोई-न-कोई रहता ही है, परीक्षा में ड्यूटी पर तैनात एक अध्यापक ने बिन जरूरत अपनी सलाह दी। मेरी मजबूरी थी सर। हमें कुछ नहीं पता। हम भी मजबूर हैं। इस बार रुलाई जोर से फूट पड़ी। प्लीज सर, सारी मेहनत बेकार चली जाएगी। बहुत मुश्किल से पहुँची हूँ यहाँ तक। एकबार खोल दीजिए गेट। देखिए मैडम, हम आदेशों की अवमानना नहीं कर सकते, कहकर अध्यापक तलाशी के अपने काम में मुस्तैद हो गए। वह घबराहट के कारण रोते हुए गिरने ही वाली थी कि एक मजबूत मुलायम हाथ ने उसे थाम लिया। चलो मेरे साथ। गेट खोलो, चौकीदार को आदेश दिया गया। उसने भरी आँखों से संभालने वाले हाथों की ओर देखा तो एक रौबीले व्यक्तित्व की लेडी इंस्पेक्टर थी जिसने उसे मजबूती से पकड़कर गिरने से बचा लिया था। ले..किन .... मैम टाइम तो हो चुका, बंद दरवाजे की जालियों के उधर से दो अध्यापकों ने विरोध दर्ज किया। तो क्या हुआ ? गेट बंद हुआ है एग्जाम तो शुरू नहीं हुआ है। अभी पचास मिनट बाकी हैं एग्जाम शुरू होने में। जाने दो बच्ची को अंदर। लेकिन .....लेकिन कुछ नहीं। बच्ची रो रही है बुरी तरह और आप लोग इतनी सख्ती किए जा रहे हैं ? मैम गलती इन्हीं की है समय से आना चाहिए। इसमें हम क्या कर सकते हैं ? ये पाँच मिनट लेट थीं। दस मिनट आपने बहसबाजी में खराब कर दिए इसके। मैडम जी, आप गलत का पक्ष ले रही हैं। नहीं मैं इस बच्ची के सपनों का पक्ष ले रही हूँ। स्त्री हूँ इसलिए समझ सकती हूँ यहाँ तक पहुँचने के लिए कैसा मुश्किल सफर तय किया होगा इसने। इन पाँच मिनट में कितना और क्या-क्या छूटा होगा इसका यह मैं महसूस कर पा रही हूँ, शायद आप नहीं। खुलवाइए दरवाजा। गेट खुल गया। लड़की ने कृतज्ञता व आँसुओं से भरी निगाह मैडम पर डाली। आभार जताने को दोनों हाथ परस्पर जुड़ गए। काँपते होंठ लड़खड़ाए , थैंक यू मैम, थैंक यू वेरी मच। आज आप ना होती तो मेरी सारी मेहनत पाँच मिनट में धुल जाती। कोई बात नहीं। जल्दी जाओ और देर न करो, लेडी इंस्पेक्टर ने मुस्कुरा कर कहा। वह तेजी से लगभग दौड़ते हुए परीक्षार्थियों की कतार में शामिल हो गई। पीछे से लेडी इंस्पेक्टर ने जब लड़की को जाते हुए देखा, हल्की नम आँखों के साथ एक सुकून भरी मुस्कुराहट उसके होठों पर फैल गई क्योंकि ऐसी ही एक दौड़ कभी उसने भी लगाई थी अपने सपनों के लिए।

*हाउस नंबर-187, ककराला, पोस्ट-ककराला , तहसील-कनीना, जिला-महेन्द्रगढ़, हरियाणा।

सुख की अनुभूति

प्रगति त्रिपाठी*

"ऐ बर्तन वाली रुक जरा" कमला देवी ने पुकारा। "आई मालकिन" उसने खुश होते हुए कहा। हाय राम .. ये गर्मी जान ही ले लेगी। बदन से पसीना पोछते हुए बोली। सर पर पगड़ी, ब्लाउज और घाघरा पहने और साथ में दो बच्चे को लिए हुए गर्मी से बेहाल हुए जा रही थी। एक पाँच साल का बच्चा और दूजा गोद में था। "अम्मा पानी" "रुक... अभी लाती हूँ।" कमला देवी ने बच्चे से कहा। ये लो पानी और साथ में एक प्लेट में चना और गुड़ रख दिया। बच्चा फटाफट चना-गुड़ खाने लगा और बर्तन वाली अपने छोटे बच्चे को पानी पीलाने लगी। "नई लगती हो ! पहले तुम्हें यहाँ नहीं देखा।" कमला देवी ने सवाल किया। "जी मालकिन, हम बंजारे हैं, अभी-अभी इस शहर में आए हैं। कुछ दिन यहाँ रहेंगे और फिर दूसरे शहर के लिए निकल जाएंगे।" वह पानी पीते हुए बोली। "इतनी धूप में बच्चों को लेकर क्यों घूम रही है ? बच्चे बीमार पड़ जाएंगे।" "पापी पेट की खातिर सब करना पड़ता है...अगर हम यह सब सोचे तो हमारा काम नहीं चलेगा।" वह बोली। "आप बर्तन देख लीजिए।" इतना कह वह बर्तन दिखाने लगी। "हाँ.. ये कटोरा और तसला दे दे।" इतना कहकर कमला जी ने उसे तीन साड़ी दे दिया। "अम्मा.. साड़ी के जगह अगर कुछ पैसे ही दे देती तो अच्छा होता ! "क्यों री ? मैं तो कपड़े से ही बर्तन लेती हूँ हमेशा।" "कपड़े से राशन-पानी नहीं मिलता मालकिन" कमला समझ गई कि गरीबों को साड़ी- कपड़े से ज्यादा खाने-पीने की चीजों की जरूरत होती है। कमला ने उसे साड़ी के साथ पैसे भी दे दिए। खुशी से उसका चेहरा खिल गया और वो मुस्कुराते हुए चली गई। कमला देवी दूर तक उसे जाते हुए देखती रही। इस तपीश भरे मौसम में उनको भी परम् सुख की अनुभूति हो रही थी।

*B222, GRC Subhiksha, MJ Nagar Road, Choodasandra, Bangalore- 560099

सिया और गिलहरी

संजय सिंह चौहान*

एक समय की बात है। एक छोटे से गाँव में सिया नाम की एक प्यारी और दयालु लड़की रहती थी। सिया को पेड़ों, फूलों और छोटे जानवरों से बहुत लगाव था। वह अक्सर अपने घर के पास के बगीचे में खेला करती थी, जहाँ तरह-तरह के पक्षी और छोटे जानवर रहते थे। एक दिन सिया को एक पेड़ के नीचे एक नन्ही गिलहरी मिली जो बहुत घबराई हुई और घायल लग रही थी। सिया को गिलहरी पर बहुत दया आई और उसने तुरंत उसे अपनी गोद में उठा लिया। गिलहरी के पैर में चोट लगी थी और वह बहुत डरी हुई थी। सिया ने गिलहरी को प्यार से सहलाया और कहा "डर मत, मैं तुम्हारी मदद करूँगी।" वह गिलहरी को घर ले आई और अपनी माँ से उसकी मदद करने को कहा। सिया की माँ ने गिलहरी के पैर पर हल्के से मरहम लगाया और उसे आराम करने के लिए एक छोटी-सी टोकरी में बिछावन बना दिया। सिया हर दिन गिलहरी की देखभाल करती, उसे प्यार से खाना खिलाती और उसकी चोट ठीक होने का इंतजार करती। धीरे-धीरे गिलहरी का पैर ठीक हो गया और वह फिर से फुर्तीली हो गई। गिलहरी अब सिया के साथ खेलने लगी और दोनों के बीच एक अनोखी दोस्ती हो गई। एक दिन जब गिलहरी पूरी तरह से स्वस्थ हो गई। उसने सिया को अपने पेड़ पर बुलाया। सिया उत्सुकता से उसके पीछे-पीछे पेड़ तक गई। गिलहरी उसे उस पेड़ के सबसे ऊँचे हिस्से में ले गई, जहाँ उसने अपने दोस्तों से सिया का परिचय करवाया। वहाँ कई और गिलहरियाँ थीं जो बहुत खुश दिख रही थीं। गिलहरी ने सिया से कहा, "तुमने मेरी मदद की इसलिए मैं तुम्हें हमारे गुप्त बगीचे में लाना चाहती थी। यह हमारी दुनिया है, जहाँ हम खुशी से रहते हैं। तुम्हारी दया ने मेरी जान बचाई और अब हम तुम्हारे सच्चे दोस्त हैं।" सिया ने गिलहरियों से बहुत कुछ सीखा - पेड़ों की महत्ता, प्रकृति का आदर और छोटे-छोटे जीवों के प्रति दयालुता। उसने समझा कि जानवर भी हमारी तरह ही महसूस करते हैं और उनकी भी देखभाल करना जरूरी है। गिलहरियाँ अब हर रोज़ सिया से मिलने आतीं और सिया भी उन्हें फल और मेवे खिलाती थी।

*D-5, मन्दाकिनी ब्लॉक, कैवेलरी लाइन्स प्रथम वाहिनी विसबल, पोलो ग्राउंड इंदौर, मध्य प्रदेश।

चम्पई रानी..

सपना चन्द्रा*

हमको तो हमरे उऽऽ..प्यार से कहते थे "चम्पई रानी !"... उ गुदगुदी होती रही मन में कि बता नहीं सकते। वैसे हमरा नाम चम्पा रहा चम्पा ! हमरी अम्मा कहती थी तू हँसती है तो फूल झरते हैं। धीरे-धीरे हम मुहल्ले की जान कहलाए !.. सब मोहल्ले के छोकरे हमको चम्पा की डाली कहते, हम भी ऐसन इठला कर चलते कि उन सब का कलेजा मुँह में आ जाता। हमरे घर से थोड़ा हटके उका घर था। खूब हमरे आगे-पीछे करता। जौन बात कह देते एकदम आदेश समझ के कर देता। एकदम भोला-भाला। पर हमको पसंद नहीं था उका नाम..सजनवा ! सजनवा भी कौनो नाम है..?" सजनवा अपनी अम्मा के संग रहता था ! मुआ नाम भी ऐसा रखा कि मन जल-भुन जाता। कैसे कोई नाम लेकर पुकारे ! ऐही से हम उसको मुनगा कहते। पगला ! एकदमे खुश होकर नाचने लगता। एकबार तो खुब लाड़ से हमको कहने लगा... "ऐ चम्पा !..कभी हमरे संग गोलगप्पे खाने चलोगी ? तोहरी कसम !..तू जेतना खाएगी उतना खिलाएँगे।" "हम्म ! हमरी कसम खाते हो ! तोहरी अम्मा नय

है का ! खा ओको कसम । तोहरी झूठी कसम से हम मर-मुर गए तब !..हम अपनी अम्मा की इकलौती संतान हैं । समझा ? " पगला कहीं का !. एकदमे रोनी सूरत बना लेता । ठिठोली भी नहीं समझता । कहता हमसे कि.. "ऐ चम्पा देख !..ऐसा मत बोल !..हम तुमको अपना कलेजा चीर कर दिखा नहीं सकते बस ऐतना ही जान लो । तुम हमरे इहाँ रहती हो ..एकदम हमरे सपनों की रानी बनकर । ....और हाँ !..इ मर-मुर वाली बात मत कहो । तू भले मत कर, पर हम तुमसे प्यार करते है खुबे ।" "हमरे घर में बियाह की बात होने लगी और हम बियाह के अपने उ के साथ ससुराल आ गए । डोली चढ़ते-चढ़ते मुनगा पर नजर गई तो हमरी आँख उसे देखती ही रह गई.....हे देवी मैया !..इ मुनगा को क्या हो रहा था । बेचारा कहीं बीमार तो नाही । ठीक ही रखिया हे ब्रह्म बाबा । एक दू बार हम नैहर आए लेकिन मुनगा जो एक डाक पर हाजिर रहता, बुलावा भेजे..तभहु ना आया । का हो गया है उसको !.ऐसा तो नहीं रहा कभी..? समझता ही नहीं कि दिल से रिश्ता कितना गहरा होता है । हमरा दिल कितना रो रहा है । हम भी अब बात नाहीं करेंगे उससे । कहलवा भी देंगे किसी से तब समझ आएगा । यही सोचते हमरी आँख लग गई । आँख खुली तो ऐसी खबर मिली कि दिल धक से रह गया ।..'मुनगा की अम्मा नहीं रही ।' उसकी देहरी पर पैर रखते ही मुनगा हाथ पकड़कर बच्चे की तरह रोने लगा । "हम अनाथ हो गए चम्पा !.अब तो हमरा कोनो सहारा भी ना रहा, तू भी तो नहीं !" दिल चाहा कलेजा से लगा लें और कह दें ...'मार खायगा, जो अनाथ बोला खुद को । हम तुमरे कोई नहीं हैं का..? 'पर ऐतना ही कह पाए.." ढाँढस रख !..सब अच्छा रहेगा ।" दो-तीन दिन बाद हमरा लौटना हो गया । समय पंख लगा रखा था । इस तेज उड़ान में हमरी दुनिया भी उजड़ जाएगी, कहाँ सोंचे ! टीबी की बीमारी ने छाती छलनी कर दिया था । हमरे उ हमको छोड़कर चले गए । रोते-बिलखते आँखे धँस गयी, लाल टहकता चेहरा करिया पड़ गया । सास-ससुर भी कुछ नहीं समझा पाते । जवान बेटा का शोक दुनो को खा रहा था । बापू ने देखा तो हमको संग लिवा लाए । अब अंधेरी कोठरी हमको भली लगती । न खाने की सुध, न पीने की । सब शौक और अरमान हमरे उ के संगे चला गया । अम्मा-बाबूजी सब हमरी चिंता में दोहरे हुए जा रहे थे ....किसी के संग तो हम बोले-बाजे । मन थोड़ा बदल जाए । सब कोशिश उन सबकी बेकार जाती । महीने भर में ही हमरा शरीर खाट से चिपक गया था । "चम्पाऽऽ. ! ऐ चम्पा..सोई है का..? देख ! कौन आया है तुमसे मिलने ।" "हमको नहीं मिलना अम्मा किसी से !.. कह दो ।" "चम्पा !..हम मुनगा हैं, एक नजर देख तो Wइधर ।" "मुनगा !..तू है ! पहिले काहे नहीं बोला ? पगला कहीं का, तुमको हम थोड़े न कह सकते थे नहीं मिलना । बैठ इहाँ आओ !..और बताओ सब ठीक है । तू कैसा है रे ।" "जैसन छोड़ कर गई रही वेसा ही हूँ, देख ले नजर से खुद ही । तुझे उदास देखकर हम कैसे खुश रह सकते हैं बोल ।" "ऐतना फिक्र काहे करता है हमरा तू..?" "पढ़ ले न हमरी आँख में, जवाब मिल जाएगा ।" एक चुप्पी पसर गई, फिर मुनगा ही बोला...."चल कहीं घुमा लाते हैं तुमको । चलेगी न ?" और हम इंकार नहीं कर पाए...मौका देखकर मुनगा बोल पड़ा.." हम तुमको चम्पा रानी कहना चाहते हैं, तुमको एतराज तो नहीं है ?" दरवाजे पर चाय-पानी लिए आती हमरी अम्मा बातें सुनकर आँचल से कोरी पोछती रही । एकबार नजर उठाकर अम्मा की ओर हमने देखा तो अम्मा ने हामी में सिर हिलाया । हमरी होठों पर धीरे से आई मुस्कान देखकर मुनगा बोला.." देख, अब हमको असली नाम से पुकारना । हम तोहरे मुनगा नहीं रहे" और बहुत दिनों बाद हमरी, मतलब चम्पा की हँसी से फूल बरसने लगे ।

*कहलगाँव, भागलपुर, बिहार ।

बदलते परिवेश में अनिवार्य है भाई-बहन के रिश्तों को व्यापक स्वरूप प्रदान करना

सीताराम गुप्ता*

रक्षा बंधन हमारा एक महत्वपूर्ण पर्व है जो भाई-बहन के पवित्र रिश्ते का प्रतीक है । प्रश्न उठता है कि क्या साल में एक दिन रक्षा सूत्र बाँधने से भाइयों व बहनों की सुरक्षा व सुखी जीवन सुनिश्चित किया जा सकता है ? आज के बदलते परिवेश व परिदृश्य में इस पर चिंतन करना अनिवार्य हो जाता है । एक प्रश्न और उठता है और वो ये कि बहन अथवा भाई से क्या तात्पर्य है ? क्या एक ही माता-पिता की संतानों में अथवा निकटतम् चचेरे भाई-बहनों में ही ये रिश्ता महत्वपूर्ण होता है ? नि:संदेह होता है लेकिन आज महिलाओं के उत्पीड़न व बलात्कार तथा लिंगानुपात में विषमता जैसी समस्याओं को देखते हुए बदलते परिवेश व हालात में रिश्तों की संकुचित अवधारणा को पुनः परिभाषित करके उन्हें अधिक व्यापक बनाना और पुनः प्रतिष्ठित करना अनिवार्य प्रतीत होता है । हमारे समाज के किसी भी वर्ग में आपसी सम्बन्ध इतने संकुचित कभी नहीं रहे जितने आज हो गए हैं । इसी का परिणाम है सारी समस्याएँ । कई वर्षों से जब भी रक्षा बंधन की चहल-पहल प्रारम्भ होती है मुझे बहुत पहले पढ़ी हुई एक लघु कथा का स्मरण हो आता है । लघु कथा का शीर्षक व रचनाकार का नाम मुझे याद नहीं लेकिन कथानक मन में बसा हुआ है । एक आदमी पड़ोस के एक गाँव में चोरी करने जाता है । जैसे ही वो एक घर में चोरी करने के लिए घुसता है, घर में जाग हो जाती है । घर की महिला चोर का हाथ पकड़ लेती है और झट से बिजली का स्विच ऑन देती है । बिजली की रोशनी में महिला चोर को देखती है और हैरानी से कहती है, "अरे जगीरे तू ! चोरी करने के लिए तुझे बहन का घर ही मिला और कोई घर नहीं मिला तुझे इस गाँव में चोरी करने के लिए ?" जगीरा ने कहा, "मुझे ख़बर मिली थी कि इस घर के सारे मरद आज बाहर गए हैं और घर में औरत बच्चों के साथ अकेली हैं । मुझे ये नहीं पता था कि मेरे अपने गाँव की लड़की ही इस घर में रहती है, नहीं तो मैं क्यों आता तेरे घर चोरी करने ?" "बहन मुझे माफ कर दे, " ये कहकर जगीरा जब बाहर जाने लगा तो महिला ने उसे रोककर कहा, "अरे जाता कहाँ है ? बैठ चाय बनाती हूँ तेरे लिए । चाय पीकर जाना ।" चाय पीकर जगीरा ने अपनी जेब में हाथ डाला । हाथ जेब से बाहर आया तो उसके हाथ में मुड़ा-तुड़ा मैला-सा पाँच रुपए का एक नोट दिखलाई पड़ रहा था । उसने वो नोट बहन की हथेली पर रखा और चुपचाप घर से बाहर निकलकर गलियों के अँधेरे में खो गया । इस लघु कथा में एक चोर भी सामाजिक मर्यादा को समझकर उसका पालन करता है । बहन-बेटियों की मान-मर्यादा रखना हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है । अपनी या परिवार की ही नहीं पूरे गाँव की बहन-बेटियों को अपनी बहन-बेटियाँ माना जाता है । कहीं किसी अवसर पर अथवा कहीं अचानक जब उनसे भेंट होती है तो बिना ग़रीब-अमीर या छोटे-बड़े का विचार किए मान-सम्मान अथवा शगन के रूप में कुछ द्रव्य उनकी हथेली पर अवश्य रखा जाता है । जब गाँव

की किसी भी लड़की को अपनी बहन या बेटी मानने की संस्कृति है तो उसके मान-सम्मान व सुरक्षा की चिंता भी सभी को होनी चाहिए लेकिन आज ये कड़ी विश्रृंखल हो चुकी है। इस विश्रृंखल कड़ी को पुनः सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। इसी में निहित है महिलाओं की पूर्ण सुरक्षा। महिलाओं की पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित किए बिना हम रक्षा बंधन मना ही नहीं सकते। जिस दिन हमने सभी बहन-बेटियों को अपनी बहन-बेटियाँ मानना प्रारम्भ कर दिया रक्षा बंधन मनाने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

*ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा, दिल्ली।

प्रेम के कितने रूप

वीणा कुमारी*

ये फगुनिया, कब आई ससुराल से – बालचन ने टहोका मारते हुए पूछा... फगुनिया कुछ नहीं बोली बस डबडबाई आँखों से बालचन की तरफ देखती रही। ये फगुनिया–ई तोहार आँख में आँसू...का हो गया, कऊनो बात हो गई का ससुराल में। इस बार सहानुभूति पाकर फगुनिया फूट पड़ी और बोली – साल भर में एकबार हम आते हैं ससुराल से बड़ी आस लगाए कि ई सावन जगेसरा फौज से छुट्टी लेकर घर आएगा और चमकऊवा 'प्यारा भैया' वाला राखी जे हम छाँटकर लाते हैं, ओकर कलाई में बाँधेंगे, पर हमार ई सपना कभी पूरा नहीं होता। इनको भी अपन डिपटी से जल्दी छुट्टी नहीं मिलती जे हम मान-मनुहार करके जगेसरा के पास जाके राखी बाँध दें। उसकी बात सुन बलचनवा भी उदास हो उठा फिर कुछ सोचकर बोला–रुक, हम कुछ जोगाड़ लगाते हैं, कऊना जगह पोस्टिंग है अभी जगेसरा के। उम्मीद की किरण पा फगुनिया थोड़ा खुश हुई और बोली–वोही ऊ दढ़ीजरा कश्मीर में। तू लेके चलेगा का हमरा के। बड़ी मेहरबानी होगी हमका पर। ऐसा काहे बोलती है फगुनिया–हम तुम्हार नाम अपन जुबान पर कभी न लायेंगे, पर तुमरी खुशी ही मेरी खुशी है। एक बहिन को भाई से मिलाने से भी बड़ा पुण्य के काम कऊनो है का, बाबूजी हमरा पर एतना विश्वास करते हैं, आज ही हाथ-गोड़ जोड़कर, विनती कर मनाय लेंगे हम, तुमको ले जाने के वास्ते। तब त हम आज ही जाके जगेसरा खातिर सबसे बढ़िया वाला राखी, अक्षत, रोली सब खरीद लाते हैं, बच्चों की तरह खुश हो फगुनिया बोली और बलचनवा की ओर देख मुसका उठी। तू का सोचती है फगुनिया–बियाह हो गया तुम्हार त का हमरा प्रेम तुमसे कम हो गया। ई कबहूँ कम न होगा। हमार साँसे के साथ जायेगा ई। भूल गई का, बचपने से तुम्हार सुख-दुख हमार रहा है। ई कोई भूलने की चीज है, प्रेम न भूलता कुछ। ऊ त सब रिश्ता से ऊपर है, एकर कऊनो जोड़ नाहीं। बियाहे हो जाना ही प्रेम के परिणति नहीं है बालचन। एकरा पवित्रता से निभाते रहना प्रेम है–देखते नहीं, कृष्णा और राधा के प्रेम को, साथ न होकर भी हर पल दोनों साथ हैं, तभी तो कोई भाई के कलाई राखी पर सूनी नहीं रहती, कृष्ण कऊनो न कऊनो रूप में आके भाई बहिन को ई पावन पर्व में मिला ही देते हैं जैसे तुम मेरे कृष्णा...कह उसकी आँखें छलछला उठी।

*झुमरी तिलैया, झारखण्ड।

ऑनलाइन-बिनलाइन !

अशोक वाधवाणी*

मेरे मित्र आलोक की पत्नी खुशबू ने सुबह मुझे फ़ोन किया। रोती-बिलखती बोली, मेरी ज़िंदगी में ज़हर घुल चुका है। पति की बेरुखी अब बर्दाश्त से बाहर हो चुकी है। तुरंत घर आकर निर्णय करें, वर्ना .....। मैं कुछ समझता या पूछता, उसके पहले ही उसने फ़ोन काट दिया। मित्र आलोक को फ़ोन लगाया लेकिन उसने नहीं उठाया। दिमाग़ में नये-नये नकारात्मक विचारों ने जन्म लेना शुरू किया। शंकाओं-कुशंकाओं को मन में पाले आलोक के घर पहुँचा। बेल बजाने पर दरवाजा खुशबू भाभी ने खोला। उनका मुरझाया चेहरा इस बात की चुगली कर रहा था कि सुनामी आने के पहले की खतरनाक खामोशी है। बात शुरू करने के नेक इरादे से भाभी से पूछा, आलोक कहाँ है ? मेरे प्रश्न ने मानों आग में घी का काम किया। सुबकते हुए जवाब दिया, आज हमारे विवाह की वर्षगाँठ है। छुट्टी का दिन होने के कारण वे देरी से उठे। चाय पी और झोला उठाकर चल पड़े सब्ज़ी मंडी की ओर। मुझे विश तक नहीं किया। जब से वो कलमुंही उनके जीवन में आयी है, तब से मेरा सुख-चैन छिन गया है। उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते उसी में डूबे, रमे रहते हैं। पता नहीं उस काली-कलूटी ने कौन सा जादू .....। मैं गहरी सोच में डूबकर सोचने लगा मांस, मछली, मदिरा, महिलाओं से दस फीट की दूरी बनाकर रखने वाला आलोक इस हद तक कैसे गिर सकता है ? समस्या का समाधान निकालने की नीयत से भाभी से पूछा, क्या आप मुझे उसका नाम, पता बता सकती हैं ? साक्षात देवी के दर्शन करवाती हूँ। कहते, पैर पटकते गुस्से से चली गई। तुरंत वापस आकर चिल्लाकर कहा, यह रही उनकी बीवी नंबर वन और मेरी सौतन ! पता नहीं किस मुए मित्र के उकसाने पर मेरी छाती पर मूंग दलने उठा लाए हैं। मेरी आँखें विस्मय से फट गईं। वो महिला न होकर आलोक का स्मार्ट फ़ोन था।

दरअसल मेरे जोर देने पर ही आलोक ने स्मार्ट फ़ोन खरीदा था। मेरी स्थिति रणभूमि में श्री कृष्ण के साथ दुविधा में खड़े अर्जुन के समान थी, अपनों से कैसे लड़ा जाए ? मजबूरन मुझे खुशबू भाभी को रामबाण उपाय बताना पड़ा, आलोक की मोबाइल वाली लत छुड़ाने। सुनकर भाभी का चेहरा ख़ुशी से खिल उठा, गुलाब की पंखुड़ियों की तरह। खुशबू ने अकेले में आलोक को धमकी देते हुए कहा आप जितनी देर तक सोशल मीडिया पर व्यस्त रहेंगे, उतने समय तक मैं भी ऑनलाइन शॉपिंग करती रहूँगी। भाभी का तीर निशाने पर लगा। आलोक ने हार मानकर हथियार डाल दिए। संदूक में सड़ रहा पुराना बटन वाला मोबाइल इस्तेमाल करना शुरू किया। किसी ने सच ही कहा है दुनिया झुकती है, झुकाने वाला चाहिए !

*गांधी नगर, कोल्हापुर, महाराष्ट्र।

क्या सचमुच रावण का अंत हो गया ?

रंजना मिश्रा*

इस वर्ष फिर से दशहरा आने वाला है। अब फिर एक नया रावण तैयार होगा। गली-गली, मोहल्ले-मोहल्ले में रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद के बड़े-बड़े पुतले जलाए जाएंगे। रावण के 10 सर बनाए जाएंगे। इन पुतलों के हाथों में बड़ी-बड़ी तलवारें पकड़ाई जाएंगी और फिर कोई व्यक्ति श्रीराम का वेष धरकर धनुष में बाण चढ़ाकर इन पुतलों में आग लगाएगा। ये पुतले जलकर भस्म हो जाएंगे और हम सभी तालियाँ बजाते हुए, खुश होते हुए, अपने-अपने घरों को वापस लौट आएंगे। हमें लगेगा हमने बुराई के प्रतीक रावण को जलाकर बुराई का अंत कर दिया। अब हमारे संसार में सुख-शांति, अमन-चैन व्याप्त हो गया और अब हम सभी निश्चिंत और निर्भीक होकर अपना जीवन-यापन कर पाएंगे। पर क्या यह वास्तविकता है ? क्या सचमुच हम रावण को जला पाए हैं ? या महज एक ढोंग, एक नाटक करते आए हैं, इतने वर्षों से। रावण तो हम सबके भीतर बसता है और हम अपने भीतर देखते ही नहीं। हम तो बस बाहर देखने के आदी हैं। हमें दूसरों की बुराइयाँ दिखती हैं, अपनी नहीं, तो रावण कैसे समाप्त हो पाएगा ? हम सबको अपने भीतर के रावण को मारना होगा, अपने भीतर के राम को जगाना होगा। जब तक हमारे भीतर के राम नहीं जागेंगे, तब तक हमारे भीतर का रावण मरेगा नहीं। पर क्या अपने भीतर के राम को जगाना इतना आसान है ? नहीं है, पर हम प्रयत्न तो कर सकते हैं। हम अपनी बुराइयों को पूरी तरह समाप्त ना कर पाएँ, तो भी धीरे-धीरे कम तो कर ही सकते हैं। इसके लिए भी हमें ये लगना तो चाहिए कि हममें कोई बुराई है, पर हम तो ये मानने को तैयार ही नहीं होते कि हममें भी कोई बुराई हो सकती है। हर व्यक्ति अपने-आपको बिल्कुल सही और सम्पूर्ण समझता है, वो अपनी कमियाँ दूर करने का प्रयास ही नहीं करता। दशहरे के पहले 9 दिनों तक नवरात्रि में नवदुर्गा स्वरूप की आराधना की जाती है क्यों ? क्या कभी सोचा है हमने ? वास्तव में ये 9 दिन और 9 रात हमें अपने शुद्धिकरण की ओर ले जाते हैं। बिना शुद्धिकरण किए विजय प्राप्त करना असंभव है, या हम दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि जब तक हम स्वयं पर विजय प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक बाहरी विजय हमारे लिए कठिन ही नहीं नामुमकिन है। बाहरी विजय प्राप्त करने के लिए पहले हमें स्वयं पर विजय प्राप्त करनी होगी। प्रथम दिन से लेकर 9वें दिन तक धीरे-धीरे करके हमारा शुद्धिकरण होता जाता है और हम विजय दशमी के दिन विजय प्राप्त करने के लिए तैयार हो जाते हैं, पर यह तभी हो पाएगा जब वास्तव में हम ये आराधना पूरी श्रद्धा, तन्मयता और सम्पूर्ण चेतना के साथ करें तो निश्चित ही दसवें दिन हमें विजयश्री प्राप्त हो जाएगी, जैसे भगवान श्रीराम को हो गई थी। किन्तु हमने तो इन महान सत्य से परिपूर्ण, रहस्यमयी, ऊर्जादायक आराधनाओं को महज परम्पराएं बनाकर रख दिया है। ना हम इनके वास्तविक अर्थ को समझते हैं और ना ही इनसे प्राप्त होने वाली वास्तविक ऊर्जा को ग्रहण कर पाते हैं और फिर कहते हैं कि इन सबसे कुछ नहीं होता। आप श्री राम जैसे साधक तो बनिए, दसवें दिन कितनी भी बड़ी चुनौती क्यों ना आपके सामने हो, आपको विजय अवश्य मिलेगी। आज घर-घर में रावण हैं, इन्हें मारने के लिए बहुत अधिक ऊर्जा की आवश्यकता है किंतु हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती यह भी है कि इन्हें हथियारों से नहीं मारा जा सकता बल्कि हमें इनके मन को परिवर्तित करना होगा। इन्हें रावण से राम बनने के लिए प्रेरित करना होगा तभी हमारा परिवार, समाज और विश्व सुरक्षित रह पाएगा। आज रावण के 10 सिरों की भाँति कितनी ही समस्याएं और संकट हमारे सामने चुनौती बनकर खड़े हैं। आतंकवाद, नक्सलवाद, महँगाई, गरीबी, भ्रष्टाचार, देशद्रोह, नैतिक पतन, महिलाओं और बच्चों के प्रति बढ़ते हुए अपराध आदि अनेकों ऐसी समस्याएं हैं जो किसी भी रावण से कम नहीं हैं। इनको समाप्त करना अब लगभग असंभव सा लगता है। किंतु यदि भगवान राम की तरह दृढ़-संकल्प ले लिया जाए तो इन्हें जड़ से मिटाया जा सकता है, किंतु इसके लिए जैसे श्रीराम ने रावण की नाभि में तीर मारा था, वैसे ही हमें इन सभी समस्याओं की जड़ में आघात करना होगा, तभी इन्हें समाप्त किया जा सकता है। जिस तरह एक आतंकवादी मास्टरमाइंड को समाप्त किए बिना यदि केवल उसके जिहादी बाशिंदों को ही मारा जाता रहा तो वह मास्टरमाइंड न जाने और कितने जिहादी खड़े कर देगा। इसलिए ऐसे मास्टरमाइंड को ही समाप्त करना सबसे अधिक जरूरी है जो लोगों का ब्रेनवाश कर उनमें आतंकवाद का जहर भर रहा है। इसी तरह हर बुराई की जड़ में जाना होगा और उसके कारण को ढूँढ कर उसे समाप्त करना होगा। सत्य तो ये है कि दुनिया में ऐसी कई विचारधाराएं प्रचलित हैं जो लोगों को बुराई की ओर ले जाती हैं और समस्याओं की जड़ हैं। जब तक इन विचारधाराओं को समाप्त नहीं किया जाएगा तब तक समस्याएं भी समाप्त नहीं होगी चाहे कितना भी प्रयास किया जाए। इसलिए हमें ऐसी गलत विचारधाराओं पर ही रोक लगानी चाहिए जो लोगों को दिग्भ्रमित करके गलत रास्ते पर ले जाती हैं। इन विचारधाराओं का विरोध करने के रास्ते में बहुत सी बाधाएं हमारे सामने उपस्थित होंगी पर फिर भी हमें ना डरना है ना थमना है, केवल लोगों को सत्य से परिचित कराना है कि जो गलत विचारधाराओं को मान रहे हैं उनका हश्र क्या होगा ? वे वास्तव में किस रास्ते पर जा रहे हैं ? ये जागरूकता हमें अपने समाज में और देश दुनिया में फैलानी ही होगी तभी आतंकवाद जैसी बड़ी समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है। अन्यथा यूँ ही हर रोज हमारे वीर सैनिकों के शहीद होने की खबरें हमें आहत करती रहेंगी और हम हाथ मलकर आँसू बहाकर रह जाएंगे, इसके अलावा कुछ नहीं कर पाएंगे। हम सभी को आज श्रीराम और उनकी वानर सेना की तरह कमर कसनी होगी। हमें किसी धर्म, किसी मजहब से नहीं लड़ना है बल्कि अन्याय, अत्याचार और गलत का विरोध करना है। हमें किसी जाति या सम्प्रदाय में नहीं बँटना है बल्कि एक मानवतावादी दृष्टिकोण लेकर चलना है। ये सारा विश्व हम सबका है, प्रकृति की प्रत्येक वस्तु सबकी है किंतु इसके साथ खिलवाड़ करने का किसी को कोई अधिकार नहीं है। हम सब ईश्वर के हैं, प्रकृति के हैं किंतु जो अपने मानवतावादी धर्म को भूल गए हैं, उन्हें इसकी शिक्षा देने की फिर से आवश्यकता है, तभी हम विजयदशमी में असली रावण को मारकर विश्व को मानवता की विजय दिला पाएंगे तथा इस विश्व को सुखी और सुरक्षित रख पाएंगे और तभी सही मायने में विजयदशमी का असली पर्व होगा।

*सी-32 सर्वोदय नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

संस्थान की गतिविधियाँ

राँची दौरे के दौरान माननीय वस्त्र मंत्री, भारत सरकार श्री गिरिराज सिंह का पुष्प गुच्छ से स्वागत करते इस संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

माननीय वस्त्र मंत्री, भारत सरकार श्री गिरिराज सिंह के द्वारा राँची दौरे के दौरान के.रे.बो.-के.त.अ. व प्र.सं., एनएचडीसी, डब्ल्यूएससी एवं हस्तशिल्प, राँची के साथ की गई समीक्षा बैठक का एक दृश्य।

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर दौरे के दौरान माननीय वस्त्र मंत्री, भारत सरकार श्री गिरिराज सिंह का अभिनंदन करते इस संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

माननीय वस्त्र मंत्री, भारत सरकार श्री गिरिराज सिंह के द्वारा नागपुर (महाराष्ट्र) दौरे के दौरान केन्द्रीय रेशम बोर्ड एवं अन्य विभागों के अधिकारियों के साथ की गई समीक्षा बैठक का एक दृश्य।

भारत मंडपम, नई दिल्ली में इस संस्थान एवं के.रे.प्रौ.अ.सं., बेंगलूर द्वारा आयोजित सिल्क सेक्टर में उभरती प्रौद्योगिकियों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में इस संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तक का विमोचन करते माननीय वस्त्र राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री पबित्रा मारघेरिटा (बीच में) एवं अन्य गणमान्य अतिथि।

भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित सिल्क सेक्टर में उभरती प्रौद्योगिकियों पर इस संस्थान एवं के.रे.प्रौ.अ.सं., बेंगलूर द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सेरीसिन के व्यावसायीकरण हेतु समझौता ज्ञापन का एक दृश्य।

रेशम

के.रे.बो.-केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार

पिस्का नगड़ी, राँची-835303, झारखण्ड

66_(0425) Anapurna Press and Process 6287999194, e-mail : appranchi.1969@gmail.com